# ज्योतिकिरण

अर्थात्

## धर्म्म की मूल कथा

जिसे

बालकों की शिक्षा के लिये

मिस सेरा जोसफ़ ने

एक प्रसिद्ध अंगरेज़ी पुस्तक से सहज हिन्दी भाषा में

उतारा है ।

---

## पहिला भाग ।

---

# LINE UPON LINE,

PART I.

NORTH INDIA CHRISTIAN TRACT AND

# भूमिका।

लड़कों के माता पिता और शिक्षकों से पुस्तक की लिखनेहारी निवेदन करती है ॥

इस छोटी पुस्तक के लिखने का अभिप्राय यह है कि छोटे २ लड़के धर्म्म की बातें बूझें और उन को धर्म्मपुस्तक की बड़ी रुचि होवे ॥

जब सयाने लोग ईश्वरीय धर्म्मपुस्तक पढ़ते हैं तब उन को अनेक ऐसे वाक्य मिलते हैं जिन का अर्थ समझना कठिन पड़ता है पर व्याख्याओं की सहायता से उन की कठिनता मिट जाती है तो आवश्यक है कि लड़कों को और भी अधिक असुगम वाक्य मिलें। कदाचित् वैसे बहुतेरे वाक्यों को यह छोटी पुस्तक सुगम कर देगी। यह प्रमाणिक है कि यद्यपि उन व्याख्याओं की पुस्तक बहुत सहज २ बातों से और सूधी २ भाषा में लिखी जावें तथापि लड़कों के मन चंचल होने के कारण वे उन के काम न आवेंगी इस लिये चाहिये कि उन की सहायता के निमित्त कोई दूसरा उपाय किया जावे। सब से अच्छा उपाय यह है कि माता पिता आप अपने मुंह से लड़कों को शिक्षा देवें क्योंकि माता पिता की बातों के समान किसी पुस्तक की बातें लड़कों के हृदय में नहीं लग सकतीं और न उन के ध्यान को हरण कर सकतीं पर जो लड़के माता पिता से ऐसा उपकार नहीं प्राप्त करते उन की शिक्षा के निमित्त पुस्तक चाहिये। फिर जो लड़के अपने माता पिता से ज्ञान प्राप्त करते हैं उन के लिये भी पुस्तक पढ़ना उत्तम है क्योंकि इस से वह ज्ञान दृढ़ होकर उन के मन में बैठ जाता है ॥

अनेक मनभावनी कथा छोड़ दिई गई हैं इस कारण कि यह पुस्तक अधिक बड़ी न हो जाय और यह भी कि सब विषयों की थोड़ी २ बातें लिखने के पलटे प्रधान २ विषयों का ब्यौरे के साथ वर्णन करना अधिक उत्तम है ॥

इस पुस्तक में जो २ बातें नहीं लिखी गई हैं सो परमेश्वर की सहायता से दूसरे भाग में लिखी जायेंगी ॥

# सूचीपत्र।

# ज्योतिकिरण।

## पहिला भाग।

### पहिली कथा।

### जगत की सृष्टि का वर्णन।

उत्पत्ति १ पर्व्व।

मेरे प्यारे लड़को मैं जानती हूं कि तुम ने सुना है कि ईश्वर ने इस जगत की सृष्टि किई। क्या मनुष्य ऐसे जगत की सृष्टि कर सकता है? नहीं। ऐसे जगत की सृष्टि मनुष्य कभी नहीं कर सकता। मनुष्य पेटी टोकरी आदि अनेक वस्तु बना सकता है किन्तु किसी वस्तु की सृष्टि नहीं कर सकता। किसी बढ़ई को तुम चीन्हते हो जो पेटी बना सकता है यदि तुम उसे एक सूने घर में बन्द करके कहो कि तुम एक पेटी बिना बनाये बाहर नहीं निकलने पाओगे और उसे पेटी बनाने के लिये लकड़ी पेंच हथियार और जितनी आवश्यक वस्तु हैं कुछ मत दो तो वह कभी पेटी बनाकर बाहर निकल सकता है? कभी नहीं। जब तक वह लकड़ी आदि वस्तु न पावेगा कदापि पेटी न बना सकेगा। पर ईश्वर को जगत की रचना के लिये किसी वस्तु की आवश्यकता न थी। उस ने केवल आज्ञा दिई और सब जगत बन गया। बिना सामग्री किसी पदार्थ का बनाना सृष्टि करना कहलाता

है। ईश्वर को छोड़ दूसरा कोई सृष्टि नहीं रच सकता। तुम जानते हो कि ईश्वर को सृष्टिकर्त्ता क्यों कहते हैं? इस कारण कि उस ने सब वस्तुओं की सृष्टि किई है। सृष्टिकर्त्ता एकही है। स्वर्ग के दूत अथवा मनुष्य एक बूंद पानी वा एक छोटी मक्खी भी नहीं बना सकते। यह तो तुम जानते हो कि छः दिन में ईश्वर ने इस जगत के सारे पदार्थ बनाये परन्तु किस दिन क्या बनाया यह मैं अब बतलाती हूं॥

पहिले दिन ईश्वर ने कहा कि उजियाला हो और उजियाला हो गया॥

दूसरे दिन जब जल छोड़कर और कुछ नहीं देख पड़ता था ईश्वर की आज्ञानुसार जल का एक भाग आकाश में उठकर मेघ बन गया और दूसरा भाग नीचे रहा। फिर ईश्वर ने सब स्थान को वायु से भर दिया जो देख नहीं पड़ता॥

तीसरे दिन ईश्वर ने आज्ञा दिई और सब पानी एकही स्थान में इकट्ठा हुआ और सूखी भूमि दिखाई देने लगी। ईश्वर ने सूखी भूमि का नाम थल और जल का नाम समुद्र रक्खा। हम थल पर चलते फिरते हैं किन्तु जल पर नहीं चल सकते। समुद्र का जल सर्व्वदा लहरों के कारण ऊंचा नीचा होता रहता है पर जिस गहिरे स्थान में ईश्वर ने उसे रक्खा वहां से वह बाहर नहीं आ सकता। फिर ईश्वर की आज्ञानुसार भूमि से बनस्पति उत्पन्न हुई। बतलाओ कि बनस्पति किसे कहते हैं? घास अन्न साग पात फल फूल इत्यादि॥

चौथे दिन परमेश्वर की आज्ञा से सूर्य्य चन्द्रमा और तारे बन गये। ईश्वर ने कहा कि सूर्य्य सवेरे निकले और सांझ को डूब जाया करे। इस का कारण यह है कि ईश्वर की इच्छा न थी कि सदा उजाला बना रहे वरन यह उत्तम समझा कि रात को अंधेरा हो जिस में हम लोग सुख से सो सकें और तारों के साथ चन्द्रमा रात को उजाला दे कि यदि हम रात के समय कहीं बाहर जायें तो थोड़ा सा उजाला पावें। तारे इतने हैं कि जिन की गिन्ती नहीं हो सकती॥

पांचवें दिन ईश्वर ने जीवधारियों को बनाना आरम्भ किया।

उस के कहने से पानी में मछलियां भर गईं और पक्षी पवन में उड़ उड़कर पेड़ों पर जा बैठे ॥

छठवें दिन ईश्वर के कहते ही सब पशु बन गये जैसे बाघ बकरी गाय बैल घोड़ा गधा आदि और उसी दिन कीड़े मकोड़े भी बनाये गये जैसे छिपकली सांप चिउंटी मक्खी इत्यादि जो धरती पर चलते फिरते हैं। अन्त में जब ईश्वर मनुष्य को बनाने लगा तब बोला कि हम आदम को अपने समान बनावें। भला बतलाओ कि ईश्वर ने यह बात किस से कही होगी? अपने बेटे प्रभु यीशु ख्रीष्ट से जो सृष्टि के समय उस के संग था। सृष्टिकर्त्ता ने धूल से आदम की देह को बनाया और उस की नासिका में जीवन के लिये श्वास फूंका। इस प्रकार मनुष्य का आत्मा और शरीर दोनों मिले यही कारण है कि मनुष्य ईश्वर का ध्यान कर सकता है ॥

तब ईश्वर ने उस मनुष्य की एक पसुली लेकर उस से एक स्त्री बनाई और उस का नाम हव्वा रक्खा। परमेश्वर ने अपनी सारी सृष्टि आदम और हव्वा को सौंप दिई और उन्हें आशीष देके अदन की बारी में रक्खा कि आदम उस की रखवाली करे ॥

जब परमेश्वर अपना सब काम कर चुका तब उस ने देखा

कि सब बहुत अच्छा है और वह सन्तुष्ट हुआ क्योंकि सारी पृथिवी बड़ी सुन्दर थी। मधुर वायु चलती थी हरी २ घासें से भरी हुई भूमि भली लगती थी सूर्य्य और चन्द्रमा भली भांति चमकते थे पशु पक्षी और सब जीवधारी उत्तम और सुखी थे पर आदम और हव्वा तो सब से बढ़कर अच्छे थे इस कारण कि वे परमेश्वर का ध्यान और स्तुति किया करते थे। तुम जानते हो कि सप्ताह में सात दिन होते हैं। सातवें दिन ईश्वर ने कुछ न किया किन्तु अपने सारे कार्य्यों से निवृत्त होकर विश्राम किया इस निमित्त सातवें दिन को ईश्वर ने पवित्र ठहराया। ईश्वर ने आज्ञा किई कि हम लोग सातवें दिन विश्राम करें और उसे ईश्वर का दिन मानें। वह विश्राम का दिन है उसी दिन ईश्वर का भजन करना उचित है। आदम और हव्वा को छोड़ कोई प्राणी ईश्वर की प्रशंसा नहीं कर सकता था। जैसे स्वर्ग में दूतों को वैसेही पृथिवी पर मनुष्यों को उस की स्तुति करनी चाहिये। मेरे प्यारे बच्चो क्या तुम भी कभी ईश्वर की स्तुति करते हो? उस की प्रशंसा की यह छोटी चौपाई सीख लो॥

### चौपाई।

बीते एक दिवस के पाछे। स्तुति करिहैं कर्त्ता की आछे॥
जासु कृपा मम ऊपर रूरी। रहत चैन मोपर भरपूरी॥

क्या ईश्वर तुम्हारी गीत सुनने की इच्छा करता है? हां यदि प्रशंसा के समय तुम उस के विषय में सोचो और उसे जी से चाहो तो वह तुम्हारी प्रशंसा सुनके सन्तुष्ट होगा॥

अब हम फिर कहें कि ईश्वर ने एक २ दिन किस २ वस्तु को बनाया॥

पहिले दिन उजियाला।
दूसरे दिन वायु और मेघ।
तीसरे दिन सूखी भूमि समुद्र और बनस्पति।
चौथे दिन सूर्य्य चन्द्रमा और तारे।
पांचवें दिन मछली और पक्षी।
छठवें दिन पशु कीड़े मकोड़े आदि और मनुष्य।

सातवें दिन ईश्वर ने किसी वस्तु को नहीं बनाया पर बिश्राम किया ॥

## धर्म्मपुस्तक का पद ।

ईश्वर ने सातवें दिन को आशीष दिई और उसे पवित्र ठहराया इस कारण कि उसी में उस ने अपने सारे कार्य्यों से जो उस ने उत्पन्न किया और बनाया था विश्राम किया । (उत्पत्ति २ पर्व्व ३ पद) ॥

## १ पहिले पाठ के प्रश्न ।

ईश्वर को सृष्टिकर्त्ता क्यों कहते हैं ?
मनुष्य वा दूत किसी वस्तु को बना सकते हैं वा नहीं ?
पहिले दिन ईश्वर ने क्या बनाया ?
बताओ कि दूसरे तीसरे चौथे पांचवें और छठवें दिन ईश्वर ने क्या २ बनाया ?
ईश्वर ने सब के पीछे क्या बनाया ?
सातवें दिन परमेश्वर ने क्या किया ?
जीवधारियों में से कौन प्राणी ईश्वर का ध्यान कर सकता है ?

---

## दूसरी कथा ।

### आदम के पाप का वर्णन ।

उत्पत्ति ३ पर्व्व ।

मेरे प्रिय बालको तुम को याद होगा कि ईश्वर ने आदम और हव्वा को एक सुन्दर बारी में रक्खा था । वहां वे बड़े सुखी थे वे कभी आपस में झगड़ा लड़ाई कुछ नहीं करते थे और उन को रोग वा दुःख कुछ न था । आदम उस अच्छी बारी में काम करता था पर थकता न था क्योंकि वहां न तो बहुत गरमी और न सरदी पड़ती थी कांटे वा बुरी २ घास भी वहां उत्पन्न नहीं होती थीं ॥

अदन की बारी में एक पेड़ था जो भले बुरे की पहिचान का

पेड़ कहलाता था। ईश्वर ने आदम और हव्वा को उस पेड़ का फल खाने को बरजा और कहा कि यदि तुम उस पेड़ का फल खाओगे तो निश्चय मरोगे पर बारी के और सब वृक्षों के फल खाने की अनुमति ईश्वर ने उन्हें दिई। उस पेड़ के फल को छोड़ और बहुत से फल उन के लिये थे और पहिले उन्हों ने उस फल के खाने की इच्छा भी न किई थी क्योंकि ईश्वर ने उन्हें बरजा था। वे ईश्वर की प्रीति करते थे और ईश्वर उन का मित्र था। वह उन के संग बारी में चलता फिरता और बातचीत करता था। अब तुम सुनो कि किस प्रकार आदम और हव्वा पापी हुए॥

तुम जानते हो कि बहुतेरे दुष्ट दूत हैं उन के प्रधान का नाम शैतान है। शैतान जानता था कि आदम और हव्वा यदि पापी होवें तो वे अवश्य मरके नरक में पड़ेंगे। शैतान ने उन से वैर किया और उन्हें दुःखी करने की इच्छा किई इस लिये उस ने कहा कि ईश्वर ने जो फल उन्हें खाने से वरजा है सो मैं उन को खिलाऊंगा। ऐसा समझकर शैतान सांप वन गया और उसी बारी में आया। तब उस ने हव्वा को देखकर छल के स्नेह से कहा-अजी तुम दोनों इस पेड़ का फल क्यों नहीं खाते हो? हव्वा ने कहा कि ईश्वर ने हम लोगों को यह फल खाने की आज्ञा नहीं दिई और कहा है कि जो तुम उसे खाओगे तो मर जाओगे। शैतान ने उत्तर दिया नहीं तुम नहीं मरोगे किन्तु यह फल खाने से तुम ईश्वर के समान ज्ञानी होगे। स्त्री पहिले उस फल खाने को डरी परन्तु बार २ उस पर दृष्टि करके उस ने समझा कि यह बहुत सुन्दर और मीठा है तब उस ने ज्ञानी होने की इच्छा किई और अन्त को उस ने वह फल लेकर खाया और आदम को भी दिया और उस ने भी खाया॥

हाय २ इस प्रकार आदम और हव्वा के सुख का समय बीत गया। उसी क्षण से वे पापी हुए और अपने दुष्ट कर्म्म को जानके वे ईश्वर से डर गये। फिर ज्योंही उन्हों ने ईश्वर का शब्द सुना तुरन्त भागकर पेड़ों की आड़ में छिप रहे। उन्हें लज्जा लगने लगी इस लिये गूलर के पत्तों को सीकर पहिना॥

तब परमेश्वर ने आदम को पुकारके कहा कि हे आदम तू कहां है? आदम ने उत्तर दिया कि मैं ने डरके अपने को छिपाया क्योंकि मैं नंगा था। ईश्वर ने पूछा कि तुझे किस ने बताया कि तू नंगा है तू ने उस पेड़ का फल तो नहीं खाया जिस के विषय में मैं ने कहा था कि तू इसे मत खाना? आदम बोला कि इस स्त्री ने जिसे तू ने मेरे संग कर दिया है मुझे दिया और मैं ने खाया। परमेश्वर ने उस स्त्री से कहा कि यह तू ने क्या किया? स्त्री बोली सांप ने मुझे बहकाया और मैं ने खाया। तब ईश्वर ने सांप को उस के काम के कारण यह श्राप दिया कि तू सर्व्वदा अपने पेट के बल चलेगा और मिट्टी खाया करेगा।

ईश्वर ने स्त्री से कहा कि तुझे रोग बहुत होंगे और आदम तेरा स्वामी होगा और तू उस के आधीन रहेगी । ईश्वर ने आदम से कहा तुझे अधिक श्रम से काम करना पड़ेगा तू भूमि खोदेगा और भूमि पर कांटे और ऊंटकटारे उत्पन्न होंगे तुझे ऐसा कष्ट होगा कि तेरे माथे से पसीने की बूंदें टपकेंगी जितने दिन तू जीयेगा दुख भोगेगा और अन्त को मर जायगा तेरी देह जो मिट्टी से बनी है फिर मिट्टी में मिल जायगी ॥

देखो पाप का दण्ड कैसा कठिन होता है । हाय आदम और हव्वा ने जब यह बात सुनी तब वे कैसे दुखित हुए होंगे इसे छोड़ ईश्वर ने आदम और हव्वा को उस सुन्दर वारी में भी रहने न दिया बरन उस के बाहर निकालकर एक दूत को द्वार पर उन्हें रोकने के लिये बैठा दिया उस दूत के हाथ में एक चमकता हुआ खड्ग था इस कारण कि वे उस के भीतर कभी फिर जाने न पावें । तब फिर ईश्वर ने उन पर दया किई और पत्तों के पलटे उस से भी बढ़कर चमड़े का ओढ़ना बनाकर दिया ॥

तुम क्या समझते हो कि जब आदम और हव्वा मर गये तब उन के आत्मा शैतान के यहां गये ? हां शैतान को तो ऐसी आशा पहिले से थी किन्तु वह पूरी न हुई क्योंकि ईश्वर ने अपने पुत्र प्रभु यीशु को पृथिवी पर भेजकर आदम और हव्वा और उन के वंश को नरक से उद्धार करने की प्रतिज्ञा किई थी । ईश्वर ने उन को त्राण का भरोसा देकर कहा कि इसी नारी के वंश में से एक पुरुष होगा जो शैतान के सिर को कुचलेगा इस कारण जब वारी से वे निकाले गये तब उन के मन में कुछ शान्ति थी । बहुत दिनों के पीछे यीशु ख्रीष्ट ने जगत में अवतार लिया और मनुष्य के उद्धार के निमित्त क्रूश पर अपना प्राण दिया ॥

हे प्यारे लड़को ईश्वर का यह कैसा बड़ा प्रेम था कि अपने प्रिय पुत्र को भेजा कि वह हमारे पापों के निमित्त मरे । क्या हमें उचित नहीं कि उस पर मन से प्रेम रक्खें ?

## धर्म्मपुस्तक का पद ।

जो पाप करता है सो शैतान से है क्योंकि शैतान आरम्भ से पाप करता है । (१ योहन का ३ पर्ब्ब ८ पद) ॥

## २ दूसरे पाठ के प्रश्न ।

ईश्वर ने आदम और हव्वा को किस पेड़ के फल खाने से वरजा था ?
हव्वा को वह फल खाने के लिये किस ने बहकाया ?
हव्वा ने क्यों वह फल खाया और खाने के पीछे उस ने उसे किस को दिया ?
ईश्वर ने सांप को क्या दण्ड दिया ?
उस ने आदम और हव्वा को क्या श्राप दिया ?
ईश्वर ने आदम और हव्वा को अदन की बारी में क्यों न रहने दिया ?
ईश्वर ने मनुष्य से क्या प्रतिज्ञा किई ?

---

## तीसरी कथा ।

### क़ाइन और हाबिल का वृत्तान्त ।

उत्पत्ति ४ पर्ब्ब ।

आदम और हव्वा को अदन की बारी से बाहर निकाले जाने के पीछे दो बेटे हुए । बड़े भाई का नाम क़ाइन और छोटे का नाम हाबिल था । क़ाइन शैतान के समान दुष्ट था किन्तु हाबिल भला था । यद्यपि हाबिल का स्वभाव पापी था तथापि ईश्वर ने अपना पवित्रात्मा उसे दिया था इस कारण वह ईश्वर से प्रेम करता था । जब हाबिल अपने पापों के लिये पछताता था और ईश्वर से प्रार्थना करता था कि वह उन सब को क्षमा करे तब ईश्वर भी क्षमा कर जाता था । क़ाइन और हाबिल को अपने

पिता आदम के तुल्य परिश्रम करके काम करना पड़ता था काइन किसान बनके खेतीबारी करता था पर हाबिल भेड़ों को चराता था इस कारण वह गड़रिया कहलाता था। उन दोनों ने ईश्वर के साथ जिस प्रकार का व्यवहार किया था सो मैं बतलाती हूं॥

यद्यपि ईश्वर अदन की बारी में जैसे मनुष्य के साथ पहिले फिरता घूमता और बातचीत करता था वैसे उस ने फिर न किया तथापि वह कभी २ उन से बोलता था और उस ने उन्हें प्रार्थना करने की अनुमति भी दिई थी। यीशु ने प्रतिज्ञा किई थी कि मैं आदम और उस के वंश के लिये अपना प्राण दूंगा इसी कारण ईश्वर यीशु के द्वारा उन पर दया करता था। ईश्वर ने चाहा कि हमारी प्रतिज्ञा को मनुष्य सर्वदा स्मरण किया करें और स्मरण करने का एक उपाय उन्हें बतला दिया। ईश्वर ने कहा कि तुम पत्थर एकट्ठे करके एक ढेर लगाकर वेदी बनाओ और उस पर लकड़ी बटोरकर एक मेम्ना बांधो और छूरी लेकर उसे काटके वेदी पर जलाओ। इस प्रकार के काम को बलिदान चढ़ाना कहते हैं। यह प्रभु यीशु खीष्ट के मरने का दृष्टान्त था जैसा मेम्ना वेदी पर बंधा हुआ मारा जाता था वैसा ही यीशु मनुष्यों के पापों के कारण क्रूश पर चढ़ाया गया इस प्रकार यीशु का मरण उस बलि से प्रकाशित होता था॥

एक दिन ऐसा हुआ कि काइन और हाबिल ईश्वर के लिये भेंट लाये। हाबिल ईश्वर के वचन पर विश्वास करके मेम्ना लाया और बलिदान किया और ईश्वर हाबिल की भेंट से सन्तुष्ट हुआ। काइन ने परमेश्वर के वचन पर विश्वास न किया और मेम्ने के पलटे केवल फल में से कुछ लेकर उस के साम्ने भेंट रक्खी। पर ईश्वर ने उस पर क्रोध करके उस की भेंट को अङ्गीकार न किया। यह देखकर काइन बड़ा कोपित हुआ और उस ने हाबिल से बैर माना हाबिल भला था और ईश्वर उस पर प्रेम रखता था इस कारण काइन ने उस से डाह खाया। तब परमेश्वर ने काइन को पुकारकर कहा तू क्यों क्रोधित हुआ है जो तू प्रेम कर मेरी सेवा करेगा तो मैं तुझ पर प्रसन्न हूंगा नहीं

तो तुझे दण्ड मिलेगा। काइन ने अपनी दुष्टता न छोड़ी देखो अन्त में उस ने कैसा पाप किया। एक दिन वह अपने भाई के साथ खेत में बातचीत करते २ हाबिल पर झपटा और उसे मार डाला। पहिले पहिल हाबिल का लोहू भूमि पर गिरा और मनुष्यों में से पहिले यही मरा। हाय पाप की कैसी बुरी गति होती है पहिले तो काइन ने अपने भाई से केवल बैर माना था परन्तु पीछे उसे मार ही डाला॥

परमेश्वर ने कांइन से पूछा कि तेरा भाई कहां है? उस दुष्ट ने उत्तर दिया मैं नहीं जानता क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूं? परमेश्वर ने कहा तेरे भाई का लोहू मैं ने भूमि पर गिरा देखा तू ने उसे मार डाला है इस कारण तू स्रापित हुआ तुझे अपने माता पिता को छोड़कर परदेश में जाना पड़ेगा। काइन

ने कहा कि मुझे ऐसा भारी दण्ड मिला कि मैं सह नहीं सकता अब जो मुझे पावेगा मार डालेगा । परमेश्वर ने कहा नहीं तुझे कोई न मारेगा तुझ को केवल अपना देश त्यागना पड़ेगा। तब क़ाइन बहुत दूर जाके अपने और अपने बेटे बेटियों के लिये घर बनाकर रहने लगा उस के वंश में जो लोग थे वे ईश्वर की आज्ञा का पालन नहीं करते थे क्योंकि वे शैतान के वंश थे ॥

इस प्रकार आदम और हव्वा के हाथ से दोनों लड़के एकही दिन निकल गये क्योंकि हाबिल मारा गया और क़ाइन दूर देश को सिधारा। जब उन के मा बाप ने हाबिल को लोहू में डूबा और खेत में पड़ा पाया तब बड़े दुःखित हुए और जब क़ाइन की दुष्टता पर ध्यान दिया तब उन्हें अधिक से अधिक दुःख हुआ । क्यों उन्हों ने शैतान की बात सुन वह फल खाया ? जो वे न खाते तो क़ाइन दुष्ट न होता और हाबिल भी मारा न जाता और वे दुःखी न होते । फिर ईश्वर ने आदम और हव्वा पर दया कर और एक बेटा दिया जिस का नाम उन्हों ने सेत रक्खा । वह पवित्रात्मा के द्वारा धार्म्मिक हुआ और उस के लड़के बाले भी ईश्वर का डर मानते थे इस कारण वे ईश्वर के सन्तान कहलाते थे और ईश्वर उन पर प्रेम रखता था ॥

## धर्म्मपुस्तक का पद ।

इसी में ईश्वर के सन्तान और शैतान के सन्तान प्रगट होते हैं जो कोई धर्म्म का कार्य्य नहीं करता है सो ईश्वर से नहीं है और न वह जो अपने भाई को प्यार नहीं करता है (१ योहन ३ पर्ब्ब १० पद) ॥

## ३. तीसरे पाठ के प्रश्न ।

आदम के पहिले दो बेटों के क्या २ नाम थे ?
उन का स्वभाव बुरा था वा नहीं ?
ईश्वर ने हाबिल को किस रीति से भला बनाया ?
क़ाइन और हाबिल के क्या २ काम थे ?
उन दिनों के लोग किस प्रकार भेंट चढ़ाते थे ?

जिस पत्थर की ढेरी पर वे भेंट चढ़ाते थे उसे क्या कहते थे ?
ईश्वर ने बलिदान करने की आज्ञा उन्हें क्यों दिई ?
ईश्वर ने किस लिये हाबिल की भेंट का आदर किया और काइन की भेंट का क्यों नहीं ?
काइन ने हाबिल को क्यों मार डाला ?
ईश्वर ने जब काइन से पूछा कि हाबिल कहां है उस ने क्या उत्तर दिया ?
ईश्वर ने काइन को कैसा दण्ड दिया ?
आदम के तीसरे बेटे का नाम क्या था ?

## चौथी कथा।

### जलप्रलय का वर्णन।

उत्पत्ति का ६, ७, ८, और ९ पर्ब्ब।

काइन और सेत के अनेक लड़के लड़कियां थीं यद्यपि बहुत दिनों के पीछे आदम हव्वा काइन और सेत मर गये तौभी पृथिवी पर बहुत लोग थे। उस समय मनुष्य आठ नौ सौ बरस जीते थे। उन में से पहिले तो भले लोग बहुत थे फिर धीरे २ यहां तक कम हो गये कि केवल नूह और उस का घराना ईश्वर के आज्ञाकारी रह गये। नूह ईश्वर का प्रेम करता था और परमेश्वर का आत्मा उस के हृदय में रहता था॥

ईश्वर ने उन लोगों की दुष्टता पर क्रोध करके ठहराया कि उन्हें दण्ड दे और नूह से कहा मैं पृथिवी पर इतना मेंह बरसाऊंगा कि सारे जगत के लोग जल में डूबकर नष्ट हो जायेंगे केवल तू और तेरा घराना बच रहेंगे जा तू अपने लिये एक नाव बना। नूह ने ईश्वर की आज्ञा पातेही इस प्रकार एक नाव बना लिई कि बहुत पेड़ काटकर उन की लकड़ी के तख़्ते बना लोहे के कांटों से जड़जड़ाकर तैयार कर लिया। उस नाव में नूह ने केवल एक द्वार रक्खा और ऊपर एक ही खिड़की बनाई। नूह ने सब लोगों से बार २ कहा कि जो तुम अपनी

दुष्टता न त्यागोगे तो ईश्वर तुम को जल में डुबाकर मार डालेगा पर किसी ने उस की बात पर बिश्वास न किया सब अपने खाने पीने आदि में लगे रहे और कुछ भी अपने पापों पर नहीं पछताये ॥

ईश्वर की इच्छा न थी कि पशु पक्षी कीट पतंग सब का नाश हो इस लिये उस ने नूह को आज्ञा दिई कि गाय भेड़ बाघ कबूतर कौवा और सांप आदि जन्तुओं के जोड़े ले लेकर नाव पर चढ़ा। नूह ने सब को चढ़ाया और उन के भोजन निमित्त बहुत सा अन्न और घास आदि नाव पर भर लिया। इस के पीछे नूह अपनी स्त्री और तीन बेटे और उन की तीन स्त्रियां साथ लेकर नाव में पैठा। नूह ने आप अपनी नाव का द्वार बन्द नहीं किया किन्तु ईश्वर ने कर दिया और नूह को निश्चय हुआ कि जब लों परमेश्वर की आज्ञा न हो उस द्वार को खोलना न चाहिये ॥

जब पानी बरसने लगा और रात दिन बराबर बरसता रहा तब दुष्ट लोग बहुत घबराये और पछताये कि हाय २ हम लोगों ने नूह की बात क्यों न मानी ? फिर जब भूमि पर जलामई हो गई और लोग डूबने लगे तब वे ऊंचे २ पेड़ और बड़े २ पहाड़ों पर जा चढ़े कि पानी से बचें परन्तु कहीं जी न बचा क्योंकि लगातार चालीस दिन पानी बरसता था यहां तक कि ऊंचे ऊंचे पेड़ और पहाड़ों की चोटियां डूब गईं नाव के भीतरवाले जीव को छोड़ पृथिवी पर जितने प्राणी थे क्या बुड्ढा क्या जवान क्या लड़का क्या लड़की क्या पशु क्या पक्षी क्या कीट क्या पतंग सब के सब बात की बात में नष्ट हो गये। निदान जिधर देखो जल ही जल देख पड़ता था केवल नूह की नाव जल पर दृष्टि आती थी॥

बरस दिन के लगभग नूह नाव ही में रहा। बर्षा ठहर जाने के बहुत दिन पीछे नूह ने यह जानने की इच्छा किई कि पृथिवी पर का जल सूख गया वा नहीं इस कारण उस ने पंछियों में से एक कौवा खिड़की से उड़ा दिया। कौवा बनैला पखेरू है इस लिये नाव में रहना उसे अच्छा न लगता था जो गया सो फिर नूह की नौका में लौटकर न आया। जब नूह ने देखा कि कौवा लौटकर न आया तब उस ने फिर एक पंडुकी लिई और उस को खिड़की से छोड़ दिया। पंडुकी जल ही जल देखकर बाहर रह न सकी बरन लौटकर उसी खिड़की में टक्कर मारने लगी। तब नूह ने हाथ बढ़ाकर उसे अपनी नाव के भीतर कर लिया। सात दिन के पीछे नूह ने उस पंडुकी को फिर उड़ाया यद्यपि पंडुकी ने इस बार कई पेड़ देखे तौभी वह बाहर न ठहर सकी और पेड़ों से एक पत्ती चोंच में दाबकर नूह के पास लौट आई। नूह ने जाना कि अब पानी कम हो गया। निदान नूह ने और सात दिन ठहरकर फिर उस पंडुकी को उड़ा दिया परन्तु अब की बेर वह न लौटी। नूह को निश्चय हो गया कि धरती सूख गई पर वह अपनी नाव में बना रहा क्योंकि अब तक ईश्वर ने उस को बाहर निकलने की आज्ञा न दिई थी॥

कुछ दिन पीछे ईश्वर ने नूह से कहा कि नाव से निकल

आ। तब वह और उस की स्त्री और तीन बेटे और उन की पत्नियां और पशु पक्षी कीड़े मकोड़े आदि सब के सब बाहर निकल आये। देखो जब नाव का द्वार खुला होगा तब बेचारी भेड़ बकरियों को कैसा आनन्द मिला होगा वे कैसी उत्तम और कोमल घासों पर लेटी बैठी होंगी और ऊंचे २ पहाड़ों पर चढ़ चढ़कर कैसे २ चैन काटे होंगे। इसी प्रकार खिड़की खुलतेही पखेरुओं का झुण्ड निकलकर पेड़ों पर जा बैठा होगा और चहचहा २ आनन्द बिहार करने लगा होगा। नूह और उस के घराने की दृष्टि हरी २ घास और ऊंचे २ पहाड़ों पर जब पड़ी होगी और दुष्ट लोगों का चिन्ह कुछ भी न मिला होगा तब नूह ने परमेश्वर के अनुग्रह का स्मरण अवश्य किया होगा जिस ने उसे और उस के घराने को प्रलय से बचाया॥

नूह ने बड़े प्रेम से पत्थरों का एक ढेर लगाकर वेदी बनाई और बहुत से पशु पक्षी उस पर बलिदान किये। इस बलिदान से परमेश्वर नूह पर बहुत प्रसन्न हुआ और दया करके नूह से प्रतिज्ञा किई, कि अब मैं जल के द्वारा पृथिवी का प्रलय न करूंगा भारी बरसात में तुम यह सन्देह मत करना कि प्रलय होगा क्योंकि तुम देखोगे कि आकाश में एक धनुष निकला

करेगा जो मेरी इस प्रतिज्ञा का चिन्ह होगा। मेरे प्यारे बालको क्या तुम लोगों ने कभी उस धनुष को देखा है? वह कितना बड़ा है और उस में कितने सुन्दर २ रंग होते हैं जब हम उसे देखते हैं तब समझते हैं कि परमेश्वर इस पृथिवी को जलप्रलय से नष्ट नहीं करेगा॥

देखो लड़को जैसे ईश्वर ने अपनी अनन्त कृपा से नूह और उस के घराने की रक्षा किई क्योंकि वे उस पर विश्वास लाये और उस की आज्ञा से नाव में गये थे इसी प्रकार ईश्वर हम को पाप और उस के दण्ड से बचायेगा यदि हम उस की आज्ञानुसार प्रभु यीशु ख्रीष्ट पर विश्वास करके उस के शरणागत हों॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

ईश्वर ने प्राचीन जगत को न छोड़ा वरन भक्तिहीनों के जगत पर जलप्रलय लाया परन्तु धर्म्म के प्रचारक नूह को लगाकर आठ जनों की रक्षा किई। (२ पितर का २ पर्ब्ब ५ पद)॥

## ४ चौथे पाठ के प्रश्न।

ईश्वर ने क्यों जलप्रलय से पृथिवी का नाश करना ठहराया?
नूह की रक्षा किस रीति से हुई?
क्या परमेश्वर ने लोगों को नहीं चिताया था कि प्रलय से जगत डूबेगा?
नूह ने नाव से किस २ पक्षी को उड़ाया था?
उस ने क्यों उन को उड़ाया?
परमेश्वर ने नूह से क्या प्रतिज्ञा किई?
आकाश में धनुष देखने पर हम लोगों को क्या स्मरण आता है?

---

## पांचवीं कथा।

### इब्राहीम की कथा।

उत्पत्ति का १२ पर्ब्ब १ से ९ पद।

नूह के बेटों का बंश इतना बढ़ा कि सारी पृथिवी मनुष्यों

से फिर भर गई । धीरे २ ये भी बुरे हो गये और अनेक पाप करने लगे बिशेष करके यह एक उन का महापाप था कि वे वृक्ष काटकर लड़कों के खेलने की पुतली के समान मूर्त्ति बनाते थे और उन्हें प्रणाम कर उन से प्रार्थना करते थे और उन्हीं को अपना सृष्टिकर्त्ता ईश्वर समझते थे । इस प्रकार की मूर्त्तियां देवता कहलाती हैं । प्रायः जगत के सब लोग सत्य ईश्वर को छोड़ देवताओं की सेवा करने लगे । कोई २ प्रतिमा लकड़ी से बनाई जाती थी और कई एक पत्थर वा सोने अथवा चांदी से बनती थीं ॥

ईश्वर ने देखा कि लोग प्रतिमा की पूजा कर रहे हैं इस कारण वह बहुत क्रुद्ध हुआ पर उस ने उन को नष्ट न किया अरन कहा कि मैं एक मनुष्य को चुनकर उसे अपनी सेवा और ध्यान करना सिखाऊंगा । फिर ईश्वर ने इब्राहीम को चुना जिस के माता पिता और सारे घराने के लोग देवपूजक थे । परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा कि तू अपना घरबार छोड़ जहां मैं तुझे ले चलूं चला चल । यदि तू मेरी यह आज्ञा मानेगा तो मैं तुझे आशीष दूंगा और सर्व्वदा तेरी रक्षा करूंगा ॥

यद्यपि इब्राहीम नहीं जानता था कि मुझे कहां जाना होगा तौभी चला क्योंकि वह ईश्वर की आज्ञा को बहुत मानता था । इब्राहीम की पत्नी सारह उस के संग चली जिसे वह बहुत चाहता था और उस ने अपने सब पशु और सेवक साथ कर लिये । वे दिन भर जंगल और पहाड़ी देशों में से चलते थे और रात को तम्बू तानकर बिश्राम करते थे । चलते २ वे एक ऐसे सुन्दर देश में आ पहुंचे जो पेड़ फूल घास और अन्न आदि से भरा था । उस देश का नाम कनान था उसी को ईश्वर ने इब्राहीम के रहने के लिये ठहराया । इब्राहीम अपने घराने समेत जहां २ टिकता था वहां २ पत्थर का एक ढेर लगाकर बेदी बनाता था और उस पर ईश्वर के निमित्त बलिदान चढ़ाता था । कनानी लोग देवपूजक थे परन्तु इब्राहीम प्रतिमा की पूजा कभी नहीं करता था । परमेश्वर ने इब्राहीम से कई बार कहा था कि मैं तुझे आशीष दूंगा और तेरी रक्षा करूंगा कि कोई तुझे कुछ भी दुःख न दे सकेगा ।

ईश्वर इब्राहीम पर अत्यन्त प्रसन्न था क्योंकि उस ने ईश्वर की आज्ञा पाते ही अपना घर और देश सब छोड़ दिया इसी कारण वह ईश्वर का मित्र गिना जाता था॥

हे लड़का तुम भी इब्राहीम के समान ईश्वर की आज्ञा जो धर्म्मपुस्तक में लिखी हैं उन का पालन करो। यद्यपि ईश्वर ने तुम्हें घर छोड़ने की आज्ञा नहीं दिई तौभी भले होने सच बोलने और प्रेम करने की आज्ञा तो दिई है और स्वर्ग में लेने की प्रतिज्ञा भी किई है। जो तुम परमेश्वर का वचन मानोगे तो वह तुम को मित्र क्यों न कहेगा? देखो ईश्वर के भक्तों को कितना आनन्द मिलता है॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

तुम यदि सब काम करो जो मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं तो मेरे मित्र हो। (योहन का १५ पर्ब्ब १४ पद)॥

## ५ पांचवें पाठ के प्रश्न।

जलप्रलय के पीछे सब लोग विशेष कर कौन पाप करने लगे?
ईश्वर ने अपनी सेवा करने की शिक्षा देने के लिये किस को चुन लिया?
इब्राहीम की पत्नी का नाम क्या था?
जब इब्राहीम परदेश जाता था तब मार्ग में रात को कहां सोता था?
ईश्वर ने किस देश में इब्राहीम को पहुंचाया?
कनान देश में कैसे लोग रहते थे?
ईश्वर इब्राहीम से क्यों प्रसन्न था?
वह ईश्वर का क्या कहलाता था?
क्या तुम ईश्वर के मित्र नहीं हो सकते?

## छठवीं कथा।

### इब्राहीम को पुत्र देने की प्रतिज्ञा का वर्णन।

उत्पत्ति का १५ से १८ पर्ब्ब १ से २२ पद। २१ पर्ब्ब १ से ६ पद।

इब्राहीम और सारह कनान देश में तम्बू तानकर रहते थे।

उन के कोई लड़का न हुआ था इस कारण वे दोनों शोकित रहते थे। इब्राहीम सौ बरस के लगभग पहुंच गया था और सारह नब्बे बरस से कुछ कम थी। एक दिन रात को ईश्वर ने इब्राहीम से कहा कि तू अपने तम्बू से बाहर आकर आकाश की ओर देख और बने तो तारों को गिन। उस समय आकाश तारों से भरा था ईश्वर ने कहा कि जैसे इन तारों की गिन्ती नहीं हो सकती वैसे ही तेरे वंश के लोग इतने बढ़ेंगे कि कोई उन्हें गिन न सकेगा और वे कनान देश के दुष्ट लोगों को दूर करके उस में आप बसेंगे। यद्यपि अब तक इब्राहीम के एक भी बेटा न हुआ था तौभी उस ने परमेश्वर की बात पर बिश्वास रक्खा। ईश्वर पर बिश्वास करना उचित ही है क्योंकि वह सदा सच कहता और अपनी प्रतिज्ञा को निबाहता है॥

थोड़े दिन पीछे इब्राहीम दो पहर को पेड़ के तले अपने तम्बू के द्वार पर बैठा था। उस ने आंखें उठाकर दूर से देखा कि तीन मनुष्य चले आते हैं। वह उन्हें आगे से लेने को बढ़ा और निकट पहुंचकर उन्हें प्रणाम किया और कहा कि हे प्रभु मेरे यहां चलकर बिश्राम कीजिये मैं थोड़ा सा जल लाता हूं आप चरण धोइये और कुछ भोजन करके फिर कहीं जाइये। उन्हों ने कहा कि बहुत अच्छा हम यहां बिश्राम करेंगे॥

तुम समझो कि वे तीनों ईश्वर के दूत थे जो मनुष्य बनकर ईश्वर के यहां से कुछ संदेशा लेकर इब्राहीम के पास आये थे। ईश्वर के बचन से प्रगट होता है कि वह अपने दूतों को मनुष्यों के पास भेजता है वे प्रायः हमारे पास आया करते हैं पर हम उन्हें देख नहीं सकते क्योंकि वे आत्मा हैं और वायु के समान अदृश्य हैं॥

वे तीनों जन तम्बू के बाहर पेड़ तले बैठे और सारह तम्बू में थी। इब्राहीम ने भीतर जाकर सारह से कहा कि तुम मैदा लेके शीघ्र रोटी बनाओ फिर वह पशुओं के झुण्ड की ओर दौड़ा और एक मोटा बछड़ा लेकर दास को दिया और कहा कि इसे जल्दी सिद्ध करो। जब भोजन तैयार हुआ तब इब्राहीम ने दूध मक्खन रोटी और मांस लेकर पेड़ के नीचे साजके

रक्खा। वे तीनों मनुष्य खाने लगे और इब्राहीम उन के पास खड़ा रहा॥

खाते २ उन में से एक ने कहा तेरी पत्नी सारह कहां है? वह बोला तम्बू के भीतर है। उस ने कहा कि सारह एक बेटा जनेगी। सारह दूत की बात सुनकर हंसने लगी क्योंकि वह विश्वास न कर सकी थी कि ऐसे बुढ़ापे में मेरे बेटा होगा। दूत ने कहा सारह क्यों हंसी? निश्चय उस के एक पुत्र होगा। सारह ने डरके कहा कि मैं तो नहीं हंसी। दूत ने उत्तर दिया नहीं तू अवश्य हंसी है। इतने में वे उठे और चले गये इब्राहीम उन के साथ बातचीत करता हुआ कुछ दूर गया और फिर अपने तम्बू में लौट आया॥

परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया। बरस दिन पीछे सारह के एक पुत्र हुआ जिस का नाम उस ने इसहाक रक्खा। वह अच्छा लड़का था और ईश्वर भी उसे चाहता था। इब्राहीम और सारह दोनों यह बेटा पाकर बहुत आनन्दित हुए। देखो ईश्वर ने जैसा कहा था वैसा ही सारह को एक बेटा दिया। इब्राहीम ने जो ईश्वर पर विश्वास किया यह उसे उचित था और यही कारण है कि ईश्वर उस से सन्तुष्ट हुआ। पहिले सारह का विश्वास ईश्वर के वचन पर न था परन्तु पीछे से हुआ इस लिये ईश्वर उस से भी प्रसन्न हो गया॥

हे प्रिय बालको तुम्हें भी परमेश्वर पर भरोसा रखना उचित है ईश्वर की प्रतिज्ञा है कि जो मुझ से पवित्रात्मा मांगेगा उसे मैं दूंगा। यदि तुम उस की बात पर प्रतीति करके उस से प्रार्थना करो तो वह तुम्हें पवित्रात्मा अवश्य देगा॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

इब्राहीम परमेश्वर पर विश्वास लाया और यह उस के लिये धर्म्म गिना गया। (उत्पत्ति का १५ पर्ब्ब ६ पद)॥

## ६ छठवें पाठ के प्रश्न।

परमेश्वर ने इब्राहीम से कितने वंश उत्पन्न करने की प्रतिज्ञा किई?

तीनों दूत इब्राहीम के पास किस लिये आये ?
इब्राहीम ने उन के साथ कैसा व्यवहार किया ?
इब्राहीम और सारह को लड़का होने के विषय में दूतों ने क्या कहा था ?
सारह ने ईश्वर की प्रतिज्ञा पर क्या पहिलेही बिश्वास कर लिया ?
ईश्वर ने अपनी बात पूरी किई वा नहीं ?
उन के बेटे का नाम क्या था ?
ईश्वर इब्राहीम से क्यों प्रसन्न हुआ था ?

## सातवीं कथा।

### इब्राहीम के बिश्वास की परीक्षा का वर्णन।

उत्पत्ति का २२ पर्ब्ब।

इसहाक जब सयाना हुआ तब अपने माता पिता के साथ तम्बू में रहता था वे तीनों ईश्वर से प्रेम रखते थे और उन के आपस में भी बड़ा हेलमेल था। तुम जानते हो कि इब्राहीम के पास कई प्रकार का धन था अर्थात गाय गधा भेड़ बकरी ऊंट आदि झुण्ड के झुण्ड थे और बहुत से दास दासियां भी थीं और चांदी सोना इतना था कि जिस का कुछ ठिकाना नहीं परन्तु इब्राहीम सब से अधिक अपने एकलौते बेटे को चाहता था और ईश्वर को इसहाक से भी बढ़कर मानता था। ठीक है इब्राहीम को ऐसा उचित ही था क्योंकि ईश्वर के दिये हुए सब पदार्थ उसे मिले थे॥

एक दिन ईश्वर ने कहा कि मैं इब्राहीम की परीक्षा कर देखूं कि वह मुझे सब पदार्थों से अधिक बरन अपने बेटे इसहाक से भी बढ़कर चाहता है वा नहीं। तुम ने सुना है कि इब्राहीम किस रीति से ईश्वर के साम्हे बेदी पर बलिदान चढ़ाया करता था। अब ईश्वर ने इब्राहीम से कहा कि तू अपने प्यारे बेटे इसहाक को ले और जहां मैं तुझे बताऊं वहां उसे मारकर बलिदान चढ़ा। यह तो बड़ी कठिन आज्ञा थी पर इब्राहीम

ईश्वर का बहुत प्रेम करता था इस लिये वह ईश्वर की आज्ञानुसार उठा और लकड़ियां चीर २ गधे पर लाद लिईं। पीछे इसहाक और दो दासों को बुलाकर अपने साथ कर लिया और सारह को वहीं तम्बू में छोड़ दिया॥

चलते २ तीन दिन के पीछे दूर से उस ने एक ऊंचा पहाड़ देखा और जाना कि इसी स्थान में मुझे बेदी बनाना होगा इस लिये उस ने दासों से कहा कि इसहाक और मैं दोनों उस पहाड़ पर जाकर ईश्वर की सेवा करेंगे और जब लों हम लौट न आवें तब लों तुम गधे को लेकर यहीं ठहरो। तब इब्राहीम ने गधे

से उतारकर लकड़ियों को इसहाक के ऊपर लादा और अपने एक हाथ में आग और दूसरे में छूरी ले लिई और दोनों पहाड़ पर चढ़ गये॥

इसहाक न जानता था कि मेरा पिता भेड़ के पलटे मुझे ही मारकर बलिदान चढ़ावेगा इस लिये उस ने इब्राहीम से पूछा कि हे मेरे पिता आग और लकड़ियां तो हैं पर भेंट के लिये

भेड़ कहां है? इब्राहीम ने उत्तर दिया कि हे पुत्र ईश्वर अपनी भेट के लिये भेड़ का ठिकाना आप ही लगा लेगा परन्तु इब्राहीम ने इसहाक को नहीं बताया कि तू भेड़ के समान बलिदान चढ़ेगा॥

निदान वे पहाड़ पर पहुंचे। तब इब्राहीम ने पत्थर बटोरकर एक वेदी बनाई और इसहाक के कांधे पर से लकड़ियां उतारकर वेदी पर रक्खीं। अब इसहाक समझ गया कि मैं ही बलिदान चढ़ाया जाऊंगा क्योंकि जिस रस्सी से लकड़ियां बांधी थीं उसी से

इब्राहीम ने इसहाक के हाथ पांव बांधके उस बेदी के बीच लकड़ियें पर रक्खा और छूरी लेकर अपने बेटे का घात करने के लिये हाथ बढ़ाया परन्तु उसी क्षण परमेश्वर के दूत ने स्वर्ग पर से उसे पुकारा और कहा कि हे इब्राहीम हे इब्राहीम अपने बेटे का घात मत कर और उसे कुछ दुःख भी मत दे क्योंकि अब मैं जानता हूं कि तू ईश्वर की प्रीति करता है इस लिये कि तू ने अपने एकलौते बेटे का भी उसे दे दिया ॥

जब इब्राहीम ने सुना कि लड़के का मारना कुछ आवश्यक नहीं है तब उस ने अत्यन्त सन्तुष्ट होकर इसहाक के हाथ पांव से रस्सी खोली और आंखें उठाकर क्या देखता है कि पीछे झाड़ी में एक मेंढ़ा सींगें से अटका हुआ है । तब इब्राहीम ने जाके उस मेंढ़े का ले लिया और अपने बेटे की संती उसे बलिदान चढ़ाया और ईश्वर का धन्य माना क्योंकि ईश्वर ने उस का उस का बेटा फेर दिया । फिर परमेश्वर के दूत ने स्वर्ग में से इब्राहीम का पुकारकर कहा कि ईश्वर तुझ पर अति प्रसन्न है क्योंकि तू ने अपने एकलौते पुत्र का भी उसे देने में आगा पीछा न किया इस कारण वह तुझ का आशीष देगा और तेरे वंश का आकाश के तारागणें के समान बढ़ावेगा और तेरे वंश के एक पुरुष से पृथिवी के सारे जातिगण आशीर्वाद पावेंगे ॥

हे प्रिय बालको अब तुम का जानना चाहिये कि इब्राहीम का वह सन्तान जिस के द्वारा सब लोगें ने आशीष पाई है प्रभु यीशु ख्रीष्ट है जिस ने बहुत दिनें के बीतने पर कुमारी मरियम से जन्म लिया और हम लोगें का पाप से मुक्त करने के लिये अपना प्राण दिया । यदि हम उस पर विश्वास करें तो सब पापें से उद्धार पाके स्वर्ग में प्रवेश करेंगे ॥

इस के पीछे इब्राहीम और इसहाक दोनें अत्यन्त आनन्दित होकर पहाड़ से उतरे और अपने गधे और सेवकें का उस स्थान से जहां उन्हें छोड़ गये थे साथ लेकर घर लैाटे ॥

हे प्यारे बच्चो इसी से तुम निश्चय जान सकते हो कि इब्राहीम ईश्वर का अत्यन्त प्रेम करता था क्योंकि ईश्वर की कैसी ही कठिन आज्ञा होवे वह मानने का सदा तैयार रहता था

यहां तक कि अपने पुत्र को भी बलि देने से न रुका । तुम को भी उस के ऐसा होना चाहिये अपने माता पिता और अपने खिलौने भोजन और सब प्रिय वस्तुओं का जितना प्यार तुम करते हो उस से भी अधिक परमेश्वर का प्रेम करना तुम को उचित है क्योंकि जो कुछ तुम्हारे पास है तुम ने उसी से पाया है । यदि तुम सब से अधिक ईश्वर की प्रीति करते हो तो उस की आज्ञा भी पालन करोगे । तुम झूठ न बोलोगे क्रोध न करोगे किसी को गाली न देओगे और कुछ अनुचित कर्म्म न करोगे क्योंकि परमेश्वर ने ऐसे २ काम करने को बरजा है । यदि तुम ईश्वर को सन्तुष्ट करने में सर्वदा प्रयत्न करोगे तो तुम भी इब्राहीम के समान ईश्वर के सन्तान कहलाओगे ॥

## धर्म्मपुस्तक का पद ।

जो मेरी आज्ञाओं को पाके उन्हें पालन करता है वही है जो मुझे प्यार करता है । (योहन का १४ पर्ब्ब २१ पद) ॥

## ७ सातवें पाठ के प्रश्न ।

अपने बेटे को बलिदान देने के लिये ईश्वर ने इब्राहीम को क्यों आज्ञा दिई ?
क्या इब्राहीम ने परमेश्वर की उस आज्ञा का पालन किया ?
अपने पिता के साथ पहाड़ पर चढ़ते हुए इसहाक ने क्या कहा ?
जब इब्राहीम पहाड़ पर पहुंचा तब उस ने क्या किया ?
इब्राहीम ने इसहाक को क्यों नहीं घात किया ?
हम लोगों को सारी वस्तुओं से अधिक क्यों ईश्वर का प्यार करना चाहिये ?

## आठवीं कथा।

### याकूब के विषय में।

उत्पत्ति का २३, २५, २७, २८, पर्ब्ब।

जब इब्राहीम और सारह बहुत बरस के हो चुके थे तब सारह मर गई और इब्राहीम ने उस को गाड़ना चाहा पर कनान देश में इब्राहीम का कोई स्थान न था कि जिस में वह सारह को गाड़ देवे इस लिये उस को कनानी लोगों से एक खेत मोल लेना पड़ा। उस खेत में बहुत से पेड़ थे और बीच में एक छोटा सा पर्ब्बत था जिस की एक कंदरा में इब्राहीम ने सारह की देह रक्खी। अन्त में इब्राहीम भी मर गया और उस के बेटे इसहाक ने उसी कंदरा में सारह के साथ उसे गाड़ दिया॥

पिछले दिन अर्थात् महाबिचार के दिन इब्राहीम जी उठेगा और उस कंदरा के भीतर से फिर निकलकर परमेश्वर के संग बास करेगा। इब्राहीम सर्ब्बदा कनान देश में रहने नहीं चाहता था परन्तु स्वर्ग में जाकर ईश्वर के संग रहने की इच्छा करता था क्योंकि स्वर्ग कनान देश से अधिक उत्तम है। इब्राहीम का आत्मा नहीं मरा था वह शरीर से अलग होने पर ईश्वर के पास चला गया और पिछले दिन अपने शरीर से फिर मिलकर सर्वदा जीता रहेगा और तब तुम इब्राहीम को देखने पाओगे और यदि उस के समान तुम भी ईश्वर की भक्ति करो तो स्वर्ग के राज्य में तुम्हारा भी प्रवेश होगा॥

इसहाक ने रिबका नामक एक धर्म्मशील स्त्री से अपना बिवाह किया जिस से एसौ और याकूब नामक दो लड़के उत्पन्न हुए। यद्यपि वे यमल थे अर्थात् एक ही समय जन्मे थे तथापि उन के स्वरूप और स्वभाव और व्यवहार भिन्न २ थे। जब एसौ जवान हुआ तब वह अहेर करने में बड़ा चतुर निकला। वह धनुष और तीर लेके जंगल में जाकर पक्षी और हरिणों को मार मारके आहार के लिये घर में लाता था। अहेर करने में और पशु पक्षियों के मांस खाने में यद्यपि कुछ पाप तो नहीं

है तथापि एसौ अधर्म्मी था क्योंकि वह परमेश्वर की चिन्ता कभी नहीं करता था और ईश्वर से भी अधिक अपने भोजन आदि को चाहता था। याकूब बड़े होने पर भेड़ बकरी आदि पशुओं को चराने लगा इस लिये वह गड़ेरिया कहलाता था। वह परमेश्वर पर बड़ा प्रेम रखता था और प्रार्थना किया करता था॥

इसहाक याकूब से अधिक एसौ का प्यार करता था क्योंकि वह अनेक प्रकार के स्वादित भोजन ला लाकर अपने पिता को खिलाया करता था पर इतनी ही बात के लिये उस का प्यार करना इसहाक को उचित न था। रिवका याकूब पर अधिक प्रीति रखती थी और ईश्वर भी याकूब से प्रसन्न था इस लिये कि वह धर्म्मी था॥

एसौ और याकूब दोनों आपस में कुछ स्नेह नहीं रखते थे याकूब कभी २ एसौ के संग अप्रिय व्यवहार करता था इस लिये एसौ ने याकूब से वैर किया और उसे मारना चाहा। एक दिन एसौ ने कहा कि मेरे पिता के मरने पर मैं अपने भाई याकूब को मार डालूंगा। रिवका एसौ का यह वचन सुनके डर गई और याकूब को बुलाकर कहा तेरा भाई एसौ तुझे घात किया चाहता है सो अब हे मेरे बेटे तू अपने मामा लाबन के पास भाग जा और जब, लों तेरे भाई का क्रोध ठंडा न हो वहां ही रह। याकूब अपनी माता की यह शिक्षा सुनकर अपने पिता से बिदा हुआ और चलने के समय उस के पिता इसहाक ने उसे आशीष दिई। याकूब ने न तो कोई सेवक न भेड़ न बकरी न तम्बू न चढ़ने को एक गधा अपने संग लिया परन्तु केवल लाठी हाथ में लेकर घर से चल निकला। मार्ग में उस को बड़ा दुःख उठाना पड़ा क्योंकि उस के पास कोई आवश्यक वस्तु नहीं थी और उस देश को भी उस ने पहिले कभी नहीं देखा था जहां वह जाता था॥

हे प्यारे बच्चो यदि तुम को अपने माता पिता को छोड़ एक दूर देश में जाना पड़ता तो कैसा दुःख होता वैसा ही दुःख याकूब को भी हुआ था। मार्ग में कोई सराय न थी जिस में

सांझ को उतरकर वह अपने चलने की थकावट दूर करता इस लिये जब रात होती तब वह पत्थर की तकिया बनाकर भूमि पर पड़ रहता और भोर हुए अपनी राह लेता था। उस देश में भालू और हुंड़ार तो बहुत थे परन्तु परमेश्वर ने याकूब को उन के हाथ से सदा बचाया। इस प्रकार से जाते २ जब याकूब एक स्थान में उतरा और रात को सोया तब उस ने यह शान्तिजनक स्वप्न देखा कि एक सीढ़ी पृथिवी से स्वर्ग लों लगी

है जिस पर से ईश्वर के अनेक सुन्दर २ दूत चढ़ते उतरते हैं और उस के ऊपर परमेश्वर खड़ा है जिस ने याकूब से यों कहा

कि मैं परमेश्वर तेरे पिता इब्राहीम का ईश्वर और इसहाक का ईश्वर हूं और सर्वत्र जहां कहीं तू जायगा मैं तेरी रखवाली करूंगा और तुझे इस देश में फिर लाऊंगा और यह भूमि जिस पर तू लेटा है मैं तुझे और तेरे वंश को दूंगा और पृथिवी की सब जाति के लोग तुझ से आशीष पावेंगे॥

इतने में याकूब नींद से चौंक पड़ा और उस का मन आनन्द से भर गया क्योंकि उस ने अब समझा कि ईश्वर मेरी रक्षा करता है। याकूब ने इच्छा किई कि ऐसा न हो कि इस स्वर्गीय स्वप्न के स्थान को मैं कभी भूल जाऊं इस लिये उस ने जिस पत्थर की तकिया बनाई थी उसे गाड़कर खंभे के समान खड़ा किया और कहा कि जब ईश्वर अपने प्रतिज्ञानुसार मुझे इस देश में फिर लावेगा तब मैं सहज से इस स्थान को पहिचान लूंगा। याकूब के पास कोई भेड़ न थी इस लिये वह बलिदान चढ़ा न सका परन्तु उस ने उस खंभे पर तेल डाला और ईश्वर से प्रार्थना किई। फिर उस ने कहा यदि ईश्वर मेरा रखवाला होगा और मुझे खाने को रोटी और पहिरने को कपड़ा देगा और मुझे मेरे पिता के घर कुशल से फिर पहुंचावेगा तो परमेश्वर मेरा ईश्वर होगा और यह पत्थर उस का घर होगा। याकूब ने निश्चय जाना कि ईश्वर मेरी रक्षा करेगा और इस देश में मुझे फिर लावेगा क्योंकि ईश्वर ने मुझ से ऐसी प्रतिज्ञा किई है॥

हे प्यारे लड़को ईश्वर ने जिस रीति याकूब की रक्षा किई थी उसी रीति वह तुम्हारी भी रक्षा करता है वह अपने दूतों को भेजकर तुम को सब आपत्ति बिपत्ति से बचाता है इस कारण ईश्वर का अत्यन्त प्रेम करना तुम को चाहिये॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

परमेश्वर के नेत्र धर्म्मियों की ओर और उस के कान उन की प्रार्थना की ओर लगे हैं। (१ पितर का ३ पर्ब्ब १२ पद)॥

## ८ आठवें पाठ के प्रश्न।

सारह किस स्थान में गाड़ी गई थी और उस को किस ने गाड़ा?

इसहाक की पत्नी का नाम क्या था ?
इसहाक के बेटों के नाम क्या थे ?
वे कौन २ काम करते थे ?
क्या वे दोनों ईश्वर के भक्त थे ?
याकूब को अपने पिता का घर छोड़ दूर देश में क्यों जाना पड़ा ?
भूमि पर सोते हुए उस ने स्वप्न में क्या देखा ?
जब याकूब की नींद खुली तब उस ने क्या किया और आप ही आप क्या कहा ?

---

## नवीं कथा।

### लाबन के यहां याकूब के पहुंचने का वृत्तान्त।

उत्पत्ति का २९ पर्व्व।

बहुत दिन चलने के पीछे याकूब एक उत्तम स्थान पर पहुंचा वहां बहुत सी घास और एक कूआ था और उस कूए के मुंह पर बड़ा पत्थर रक्खा था। कूए के चारों ओर अनेक भेड़ और बकरी थीं और उन के पास गड़रिये बैठे थे। याकूब कूआ देखकर अति आनन्दित हुआ क्योंकि जिस देश से वह आया वहां अधिक जल न था। याकूब ने उन गड़रियों से पूछा कि तुम लोग लाबन को जानते हो ? वे बोले हां जानते हैं। तब याकूब ने उन से पूछा वह कुशल से तो है। उन्हों ने उत्तर दिया कुशल से है और देखिये उस की बेटी राहील अपने पिता की भेड़ों को लेकर आ रही है। याकूब यह सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ इस लिये कि राहील उस के मामा की बेटी थी। फिर याकूब ने दौड़कर राहील को चूमा और गले से लगाके रोया। बहुत दिन से याकूब ने अपने किसी भाई बन्धु को नहीं देखा था इस कारण अपनी बहिन को देखकर आनन्द के मारे रोया। राहील ने याकूब को नहीं पहिचाना तब याकूब ने उस से कहा कि मैं रिबका का बेटा हूं॥

ज्योंही राहील ने यह सुना त्योंही उस ने दौड़कर अपने पिता से कहा कि रिबका का बेटा याकूब आया है मैं ने उसे कूए के पास बैठा देखा। यह सुनते ही लाबन बहुत प्रसन्न हुआ और याकूब से मिलने को दौड़ा और उसे चूमकर कहा कि मैं ही तुम्हारा मामा लाबन हूं तुम मेरे घर चलो। कुछ दिन बीतने पर याकूब लाबन की भेड़ों का रखवाला बन गया। वह अच्छा गड़रिया था और घाम और शीत सहके वह रात दिन सिंहों और भालुओं से भेड़ों की रक्षा करता था॥

लाबन के दो बेटियां थीं जेठी का नाम लियाह और लहुरी का राहील था। लाबन ने इन दोनों लड़कियों को याकूब के साथ बियाह दिया। उन दिनों में यद्यपि कोई २ लोग एक स्त्री से अधिक बिवाह करते थे तथापि यह काम अच्छा नहीं है। परमेश्वर ने याकूब को बहुत सन्तान दिये उन के नाम मैं अभी तुम को नहीं बता सकती क्योंकि वे अनेक हैं। याकूब बीस बरस अपने मामा के देश में रहा वह लाबन की भेड़ों की रखवाली करता था इस लिये लाबन ने उसे बहुत सी भेड़ें और बकरियां दिई थीं॥

ईश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार याकूब को उस दूर देश में अन्न वस्त्र आदि बहुत पदार्थ मिले थे क्योंकि ईश्वर सर्वदा अपनी प्रतिज्ञा पूरी करता है। याकूब अपने माता पिता और कनान देश को नहीं भूलता था उस को निश्चय था कि ईश्वर उस देश का अधिकार इब्राहीम के बंश को देगा इस लिये उस को कनान देश में फिर जाने की बड़ी इच्छा थी॥

पहिले जो २ धार्म्मिक मनुष्य कनान देश में बास करते थे उन के और उन की पत्नियों के नाम मैं नीचे लिखती हूं॥

इब्राहीम और उस की पत्नी सारह।
इसहाक और उस की पत्नी रिबका।
याकूब और उस की पत्नियां लियाह और राहील।

## धर्म्मपुस्तक का पद।

हर एक मनुष्य जो परमेश्वर से डरकर उस के मार्ग पर चलता क्या ही धन्य है। (१२८ गीत का पहिला पद)॥

## ९ नवें पाठ के प्रश्न ।

राहील कौन थी ?
याकूब ने पहिले उसे कहां देखा ?
याकूब के मामा का नाम क्या था ?
लावन के यहां याकूब क्या काम करता था ?
याकूब की पत्नियों के क्या २ नाम थे ?
याकूब के पास कुछ भेड़ बकरी थीं वा नहीं ?
किस लिये याकूब ने चाहा कि मैं कनान देश में फिर जाऊं ?

---

## दसवीं कथा ।

### याकूब और एसौ के मिलने का वर्णन ।

उत्पत्ति का ३१, ३२, ३३, और ३५ पर्व्व १ से ७ पद तक ।

निदान बीस बरस के बीत जाने पर याकूब ने लाबन से कहा कि देखो बहुत दिन से मैं ने तुम्हारी सेवा किई पर अब मैं अपने देश को जाने की इच्छा करता हूं । लाबन ने याकूब को जाने न दिया वरन उस को सताने लगा इस लिये लाबन को छोड़कर अपने पिता के पास जाने की इच्छा और भी याकूब को हुई ॥

एक दिन भेड़ों को चराते २ याकूब सो गया और स्वप्न देखा कि ईश्वर ने उस से कहा तू अपने पिता के देश को फिर चल और मैं भी तेरे संग चलूंगा । जब याकूब जागा तब लियाह और राहील को अपने पास बुलाकर कहा कि परमेश्वर ने मुझे स्वप्न में दर्शन दिया और यह देश छोड़कर अपने पिता के पास जाने की आज्ञा दिई । लियाह और राहील दोनों ने उत्तर दिया कि हम लोग भी तुम्हारे संग चलेंगी । तब याकूब ने अपने सब तम्बुओं कपड़ों और सब सामग्रियों को बांधकर ऊंटों और गधों पर लादा और अपनी पत्नियों और ग्यारह पुत्रों को भी ऊंटों

पर बैठा लिया। फिर उस ने अपने सेवकों को आज्ञा दिई कि भेड़ बकरी गाय गधे और ऊंट आदि सब को लेकर आगे चलो। यों उन लोगों ने उस देश को छोड़ दिया॥

याकूब लाबन के घर के निकट नहीं रहता था इस कारण याकूब के भागने का समाचार लाबन को जल्दी न पहुंचा पर जब लाबन ने सुना कि याकूब भाग गया तब उस ने अति क्रोध कर उस का पीछा किया और मिलने पर बिन्ती किई कि मेरे यहां फिर चलो परन्तु याकूब ने न माना। तब लाबन लौट गया और याकूब आनन्द से कनान देश की ओर चला परन्तु एक बात स्मरण करके वह डरा अर्थात् एसौ ने कहा था कि मैं अपने भाई को मार डालूंगा इस लिये याकूब ने बिचारा कि अब एसौ आकर मुझे और मेरे लड़कों को नष्ट करेगा॥

कुछ दिन पीछे उस ने सुना कि एसौ चार सौ मनुष्यों को साथ लेकर आता है तो याकूब ने निश्चय जाना कि मेरा भाई मुझे मार डालने के लिये आ रहा है इस लिये उस ने प्रार्थना कर ईश्वर से कहा कि हे परमेश्वर तू ने महाकृपा कर मुझे अनेक वस्तु दिई है अब मैं तुझ से बिन्ती करता हूं कि मुझे एसौ के हाथ से बचा ऐसा न हो कि वह आकर मुझे और मेरे लड़कों को और उन की माताओं को मार डाले क्योंकि मेरी रक्षा करने की प्रतिज्ञा तू ने किई है। परमेश्वर ने याकूब की प्रार्थना सुन लिई। याकूब ने सोचा कि यदि मैं एसौ के लिये कुछ भेंट भेजूं तो वह जानेगा कि मैं उस से मेल करना चाहता हूं। ऐसा बिचारकर उस ने बहुत सी बकरियां भेड़ें गाय गधे और ऊंट अपने सेवकों को देकर कहा कि तुम इन सभों को एसौ के पास ले जाओ और उस से कहो कि आप के सेवक याकूब ने आप के लिये यह भेंट भेजी है। यह करके वह आप एकान्त में रात भर ईश्वर से बिन्ती करता रहा॥

जब भोर हुआ और याकूब ने देखा कि एसौ चार सौ मनुष्यों को लेकर आता है तब वह भागा नहीं बरन आगे से अपने भाई को मिलने गया और चलते समय सात बार उसे दण्डवत किई। ईश्वर ने उसी समय एसौ के मन में दया उत्पन्न किई

और उस ने भी दौड़कर याकूब को गले से लगाया और चूमा और दोनों रोये। याकूब ने प्रार्थना किई थी कि एसौ के मन

में प्रेम और दया आवे और ईश्वर ने उस की प्रार्थना सुनकर वैसा ही एसौ से दया का व्योहार कराया इस हेतु याकूब बहुत आनन्दित हुआ। इतने में एसौ ने लियाह राहील और लड़कों को देखकर याकूब से पूछा कि ये कौन हैं। याकूब ने उत्तर दिया कि ये मेरी पत्नियां और लड़के हैं। इन्हें ईश्वर ने अपनी कृपा से मुझे दिया। तब लियाह और राहील दोनों ने अपनी सहेलियों और लड़कों के सहित निकट आकर एसौ को दण्डवत

किई। बालकों में सब से छोटा यूसफ था और वह राहील का बेटा था॥

इस के पीछे एसौ ने कहा कि आते समय मैं ने अनेक भेड़ बकरी गाय और ऊंटों को पाया तू ने उन्हें क्यों भेजा था। याकूब बोला कि वे सब आप के लिये भेंट हैं। एसौ ने कहा हे भाई मेरे पास तो बहुत हैं। उन को तुम अपने ही काम के लिये रक्खो। याकूब ने बहुत गिड़गिड़ाकर कहा कि मैं बिन्ती करता हूं मेरी भेंट स्वीकार कीजिये क्योंकि मुझे भी ईश्वर ने बहुत पदार्थ दिये हैं। तब एसौ ने स्वीकार किया। फिर एसौ ने कहा कि आओ हम सब एक साथ चलें मैं आगे होता हूं। याकूब ने उत्तर दिया कि मैं तो आप के साथ जल्दी २ नहीं चल सकता क्योंकि मेरे संग छोटे २ बालक और पशुओं के बहुत से बच्चे हैं यदि वे दिन भर चलें तो सब के सब मर जायेंगे। इस पर एसौ अपने घर को लौटा जो कनान देश से अधिक दूर था पर याकूब उस के संग नहीं गया क्योंकि वह कनान देश में रहना चाहता था॥

देखो ईश्वर ने जैसी प्रतिज्ञा किई थी वैसा ही वह याकूब को फिर कनान देश में लाया। याकूब उस अद्भुत स्वप्न को कभी न भूल सका बरन बैतएल में अर्थात् जहां स्वप्न देखा था उसी स्थान में पहुंचकर एक वेदी बनाई और परमेश्वर के लिये बलिदान चढ़ाया और उस का धन्यबाद किया इस कारण कि उस ने स्वप्न में जो कुछ कहा था सब पूरा किया॥

हे प्रिय बालको परमेश्वर तुम्हारे लिये भी नित्य २ दया प्रकाश करता है। उस ने तुम्हें माता पिता भाई बन्धु घर द्वार बस्त्र आहार आदि अनेक पदार्थ दिये हैं। जब कभी किसी ने तुम्हारे साथ कठोर व्यवहार किया होगा तब ईश्वर ने उस का मन फिराया होगा। बिचारो तो इन सभों के लिये तुम्हें परमेश्वर का कितना प्रेम करना चाहिये॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

बिपत्ति के दिन मुझे पुकार मैं तुझे छुड़ाऊंगा और तू मेरी महिमा प्रगट करेगा। (५० गीत का १५ पद)॥

## १० दसवें पाठ के प्रश्न।

याकूब को अपने पिता के घर फिर जाने की आज्ञा किस ने दिई?

कनान देश में जाते समय याकूब के मन में किस बात का डर हुआ?

डरने पर उस ने क्या किया?

एसौ ने याकूब के साथ कैसा व्यवहार किया?

जिस स्थान में याकूब ने ईश्वर के दूतों को देखा था उस स्थान का क्या नाम रक्खा?

याकूब बैतएल में फिर कभी गया था या नहीं?

उस स्वप्न के पीछे ईश्वर ने याकूब के लिये दया के कौन २ काम किये?

---

## ग्यारहवीं कथा।

### यूसफ के स्वप्नों का वर्णन।

उत्पत्ति का ३७ पर्ब्ब १ से २४ पद।

याकूब अपने वृद्ध पिता इसहाक के पास आकर रहने लगा और थोड़े दिन के पीछे इसहाक मर गया। तब जहां सारह और इब्राहीम गाड़े गये थे उसी कबर में एसौ और याकूब ने अपने पिता को भी गाड़ दिया। पिछले दिन वे सब एक साथ जी उठेंगे और स्वर्ग में जो कनान देश से अधिक उत्तम है जाकर रहेंगे॥

एसौ तो कनान में नहीं रहता था पर याकूब अपने लड़के पशु और सब सम्पत्ति समेत वहां ही रह गया। याकूब को पहिले से ग्यारह बेटे थे पर कनान में आकर एक बेटा और हुआ। वह सब से छोटा था और उस का नाम बिन्यामीन रक्खा गया। उस को जनने पर उस की माता राहील मर गई। बिन्यामीन का सहोदर यूसफ बिन्यामीन से बहुत बड़ा था पर और सब भाइयों से छोटा था। वह भला और धर्म्मी था परन्तु

उस के दस भाई दुष्ट थे। वे अपने पिता की भेड़ों को चराया करते थे और जब यूसफ भी उन के साथ रहता था तब वह उन के बुरे चाल चलन देखकर अति शोकित होता था इस लिये वे सदा यूसफ से बुरा मानते थे। अपने सब पुत्रों में याकूब यूसफ को अधिक प्यार करता था इस कारण भी उस के भाई लोग उस से डाह करते थे। एक दिन याकूब ने अपने प्रिय यूसफ को एक रंग बिरंग का पहिरावा दिया उस को यूसफ बड़े आनन्द से पहिनता था। यह देखकर उस के भाइयों ने उस से और भी वैर किया॥

शैतान ही मनुष्यों के मन में डाह और वैर उत्पन्न करता है। हमें ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिये कि हे प्रभु हमें डाह से बचा। मारे डाह के जो २ दुष्कर्म्म यूसफ के भाइयों ने उस के साथ किये उन का बर्णन आगे किया जायगा॥

एक दिन रात को यूसफ ने स्वप्न देखा कि मैं ने किसी खेत में अपने भाइयों के साथ बड़े २ गट्ठे बांधे हैं और उन में से मेरा गट्ठा आप से आप उठ खड़ा हुआ है और मेरे भाइयों के गट्ठों ने उसे दण्डवत किई है। इस स्वप्न को बड़ा अचरज समझकर यूसफ ने अपने भाइयों से कह दिया और वे अति क्रुद्ध होकर बोले कि तू हम से छोटा है और क्या तू सचमुच हमारा राजा होगा और हम लोग झुककर तुझे प्रणाम करेंगे। इस से यूसफ के भाइयों ने और भी अधिक डाह किया॥

फिर यूसफ ने दूसरे स्वप्न में देखा कि सूर्य्य चन्द्रमा और ग्यारह तारों ने मुझे दण्डवत किई। इस स्वप्न को पहिले से भी अधिक आश्चर्य्य जानकर यूसफ ने अपने पिता और भाइयों को सुनाया। इस पर याकूब ने अचम्भा कर यूसफ से कहा कि यह कैसा स्वप्न है क्या सूर्य्य मैं और चन्द्रमा तेरी माता और ग्यारह तारे तेरे ग्यारह भाई सचमुच तेरे आगे भूमि पर झुककर दण्डवत करेंगे। यद्यपि याकूब ने ऐसा कहा तथापि मन में बिचारा कि ईश्वर ने मेरे वेटे को स्वप्न में होनेवाली बात जनाई और वह उसे भली भांति पूरी करेगा परन्तु इस से यूसफ के भाइयों के मन में बहुत डाह हुआ॥

याकूब के पास पशुओं के अनेक झुंड थे और जहां वह रहता था वहां की घास उन के लिये बस न हुई इस कारण उस के दस बेटे दूर २ जाकर पशुओं को चराया करते थे। यूसफ और बिन्यामीन दोनों अपने पिता के साथ घर ही में रहते थे। एक बेर ऐसा हुआ कि याकूब के दस बेटे कई एक दिन लों घर न आये और याकूब को उन की दशा जानने की इच्छा हुई। तब उस ने यूसफ से कहा कि तू जाकर अपने भाइयों को देख और उन का और उन के झुंडों का समाचार ला। यूसफ पिता की आज्ञा पालन करने में सदा तैयार रहता था इस लिये वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ और सुन्दर पहिरावा पहिनकर पिता को प्रणाम कर अकेला चल निकला॥

यूसफ अपने भाइयों को ढूंढ़ते २ बहुत दूर गया परन्तु उन को न पाया। निदान किसी मनुष्य ने उसे देखकर पूछा कि तुम क्या ढूंढ़ रहे हो। यूसफ बोला मैं अपने भाइयों को ढूंढ़ता हूं यदि तुम जानते हो तो बताओ कि वे कहां हैं। उस मनुष्य ने यूसफ को उस स्थान का नाम बताया जहां वे भेड़ चराते थे और यूसफ ने ढूंढ़ते २ बहुत यत्न से वह स्थान पाया॥

जब उस के भाइयों ने दूर से देखा और रंग बिरंग के पहिरावे से उस को पहिचाना तब वे आपस में बोले देखो यह स्वप्न देखनेवाला आता है आओ हम लोग उसे मारकर किसी गढ़े में डाल देवें और पिता से कहें कि बन के किसी पशु ने उसे फाड़ खाया। ज्योंही यूसफ उन के पास पहुंचा त्योंही उन्हों ने उसे पकड़ लिया। प्रेम और दया से भरा हुआ यूसफ तो अपने भाइयों की कुशल क्षेम पूछने को गया था परन्तु वे उस के साथ कठोर व्यवहार करने लगे। जैसे एक कोमल मेम्ना सिंहों और बाघों के बीच में पड़े वैसे वह उन के हाथ में पड़ा। जब दुष्ट लोगों ने बारी में प्रभु यीशु ख्रीष्ट को पकड़ा तब उस ने भी एक मेम्ने के समान नम्र होकर सब दुःख सह लिया॥

यूसफ के भाई लोग उसे मारने को तैयार हुए पर उन में सब से जेठे रूबिन ने कहा कि लड़के को मार न डालो बरन इस कूए में डाल दो। इस के कहने में रूबिन का यह अभिप्राय

था कि पीछे से यूसफ को कूए से निकालकर पिता के पास ले जावे क्योंकि वह अपने और भाइयों से कुछ दयालु था। भाइयों ने रूबिन की बात सुनी और सुन्दर पहिरावा उतारकर यूसफ को एक सूखे कूए में डालने लगे। जब बेचारे यूसफ ने जाना कि मेरे भाई मुझे कूए में डाला चाहते हैं तो वह बहुत रोने पीटने और बिलाप करने लगा और अत्यन्त बिन्ती करके बोला कि हे भाइयो मुझे छोड़ दीजिये मैं पिता के पास चला जाऊंगा पर उन्हों ने उस की बिन्ती कुछ भी न सुनी बरन उसे कूए में डाल दिया। हाय उन के हृदय पत्थर से भी अधिक कठिन थे। बिचारा यूसफ कूए में भूखा पियासा और थकित होकर बड़े शोक में सोचने लगा कि हाय २ मैं पिता के पास फिर न जा सकूंगा और वह समझेगा कि मेरा बेटा मर गया होगा। उस के दुष्ट भाइयों ने उस के दुःख और शोक पर कुछ भी ध्यान न दिया परन्तु चैन से भोजन करने को बैठे॥

परमेश्वर ने स्वर्ग पर से उन्हें देखा और उन के दुष्कर्म पर अति असन्तुष्ट हुआ॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

परमेश्वर की आंखें हर स्थान में बुरों और भलों को देखती हैं। (दृष्टान्त का १५ पर्ब्ब ३ पद)॥

## ११ ग्यारहवें पाठ के प्रश्न।

याकूब के कितने पुत्र थे?
उन में से कौन उत्तम था?
याकूब अपने पुत्रों में सब से अधिक किसे प्यार करता था?
यूसफ के भाई लोग यूसफ से क्यों बुरा मानते थे?
याकूब ने यूसफ को क्या दिया था?
यूसफ ने कौन २ स्वप्न देखे?
किस कारण भाई लोग यूसफ के स्वप्नों को सुनकर क्रोधित हुए?

जब यूसफ के भाई भेड़ चराने गये थे तो याकूब ने यूसफ को उन के पास क्यों भेजा ?
जब यूसफ अपने भाइयों के पास गया तब उन्हों ने उस को क्या किया ?

---

## बारहवीं कथा।

### यूसफ के बेचे जाने का वृत्तान्त।

उत्पत्ति का ३७ पर्व्व २४ से ३५ पद।

जब यूसफ के भाई लोग भोजन करते थे तब देखा कि कई एक मनुष्य ऊंट पर चढ़कर आ रहे हैं। वे परदेशी व्यापारी थे और अपने देश से सुगन्ध वस्तु और गरम मसाले ऊंटों पर लाद्-कर मिसर देश में बेचने को ले जाते थे। व्यापार करना तो अच्छा है पर आगे तुम सुनोगे कि वे कैसे दुष्ट थे॥

उन को देखते ही यूसफ के चौथे भाई यिहूदा ने अपने और भाइयों से कहा कि यूसफ को मार डालने से क्या लाभ होगा केवल हम लोग बड़े निर्दय ठहरेंगे क्योंकि वह हमारा निज भाई है। चलो उसे कूए में से निकालकर इन व्यापारियों के हाथ बेच डालें जिस में हम को कुछ रुपये मिल जावें। यिहूदा के मन में सत्य दया न थी क्योंकि अपने भाई को बेचना भी बड़ी निर्दयता का काम है। यिहूदा के इस परामर्श पर उस के भाइयों ने कहा कि हां यूसफ को बेचना बहुत अच्छा है॥

इतने में यूसफ के भाइयों ने व्यापारियों को पुकारकर पूछा कि तुम किसी बालक को मोल लोगे। वे बोले हां लेंगे। इस पर उन्हों ने कहा कि उस के लिये तुम क्या दोगे। व्यापारियों ने कहा बीस रुपये। तब भाइयों ने यूसफ को कूए से निकाला। उस समय क्या जाने यूसफ ने समझा हो कि अब मेरे भाई लोग मुझे पिता के निकट ले चलेंगे पर हाय अब उस ने जाना कि वे मुझ पर दया नहीं करते क्योंकि व्यापारी लोग अपने २ ऊंटों को लिये कूए के पास खड़े थे और बीस रुपये देकर यूसफ को ले लिया और चले गये॥

उन के जाने के पीछे भाइयों ने आपस में कहा कि जब पिता जी पूछेंगे कि यूसफ कहां है तब हम लोग क्या उत्तर देंगे। आओ कहें कि हम ने तो यूसफ को नहीं देखा केवल उस का पहिरावा मार्ग पर पड़ा पाया और उठा लाये हैं। निदान उन्हों ने एक बकरी के बच्चे को मारकर उस के लोहू में उस पहिरावे को बोरा और बोले कि हम पिता को यह दिखाकर कहेंगे कि हमें जान पड़ता है कि बन के किसी पशु ने यूसफ को फाड़ खाया। ऐसा निश्चय कर वे लोहू से भरा हुआ पहिरावा लेकर घर की ओर चले॥

यद्यपि यूसफ बेचा गया तौभी वह अपने भाइयों के ऐसा दुःखी न था क्योंकि ईश्वर उस के साथ था परन्तु उस के भाइयों के मन अपने महापाप के कारण खटकते थे और उन को कुछ चैन नहीं मिलता था। सब पापी लोगों की यही दशा होती है॥

याकूब अपने पुत्रों के लिये चिन्ता कर रहा था और जब उस ने सुना कि वे भेड़ और बकरी आदि को लिये आते हैं तब अति आनन्दित हुआ होगा और दूर से देखने लगा होगा कि उन के साथ यूसफ है वा नहीं परन्तु घर में आकर पुत्रों ने यूसफ का वस्त्र पिता के आगे रखकर कहा कि यह हम ने मार्ग में पड़ा पाया देखिये तो यह यूसफ का है वा नहीं। याकूब ने उसे पहिचानकर कहा कि हाय यह यूसफ ही का है किसी सिंह अथवा भालू ने उसे फाड़ खाया हाय निश्चय मेरा यूसफ मारा गया। याकूब अपने प्रिय पुत्र के लिये बहुत रोया और पछताया कि मैं ने भाइयों को ढूंढ़ने के निमित्त यूसफ को क्यों अकेला भेजा था। उस के दुष्ट पुत्रों ने उस को धीरज देने की आशा से कहा कि पिता जी इतना बिलाप न कीजिये रोने से क्या यूसफ फिर आवेगा। ऐसी बात से याकूब का जी ठंडा न हुआ बरन मन में और अधिक जलन उठने के कारण उस ने कहा कि अब मुझे इस जगत में कुछ सुख नहीं है मैं मरकर यूसफ से मिलूंगा और आनन्द से उस के साथ रहूंगा॥

उस समय से लेकर याकूब अपने सब से छोटे बेटे बिन्यामीन को भाइयों के संग कहीं जाने आने नहीं देता था पर अपने पास ही रखता था क्योंकि यद्यपि वह नहीं जानता था कि उन्हों ने यूसफ को क्या किया तौभी वह उन पर बिश्वास नहीं रखता था॥

पहिले तो दुष्ट भाइयों ने यूसफ से केवल डाह किया फिर उसे बेच डाला और अन्त को अपना दोष छिपाने के लिये झूठ बोले। इसी प्रकार एक पाप से अनेक पाप उत्पन्न होते हैं। हे प्यारे बच्चो तुम कभी किसी से डाह न करो क्योंकि डाह से अनेक पाप होते हैं और जब कभी तुम से कोई अपराध हो जाय

तो उसे छिपाने के लिये झूठ न बोलो क्योंकि ऐसे काम से ईश्वर बड़ा क्रोध करता है। तुम को सर्वदा स्मरण रखना चाहिये कि हर एक क्षण परमेश्वर तुम को देखता है और वह झूठ से घिनाता है इस लिये वह झूठ बोलनेहारों को अपने पवित्र स्वर्ग में न रहने देगा॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

सब झूठे लोगों का भाग उन्हें उस झील में मिलेगा जो आग और गन्धक से जलती है। (प्रकाशितवाक्य का २१ पर्ब्ब ८ पद)॥

## १२ बारहवें पाठ के प्रश्न।

जब यूसफ के भाई लोग खाने को बैठे तब उन्हों ने क्या देखा?
उस समय यिहूदा ने अपने भाइयों से कौन सी बात कही?
उन्हों ने यूसफ को कितने में बेचा?
यूसफ का बहुरंगी पहिरावा लेकर भाइयों ने क्या किया?
उस के कपड़े को लोहू में क्यों डुबाया?
वह वस्त्र देखकर याकूब ने क्या बिचारा?
दुष्ट लोग अपना दोष छिपाने के लिये क्या करते हैं?

---

## तेरहवीं कथा।

### यूसफ के बन्दीगृह में डाले जाने के विषय में।

उत्पत्ति का ३९ पर्ब्ब।

उन ब्यापारियों ने यूसफ को मिसर देश में ले जाकर पूतीफर नाम एक सेनापति के हाथ बेचा। उस समय मिसर देश में घोड़े आदि पशुओं के समान मनुष्य भी बेचे जाते थे। इस देश में मनुष्यों को मोल लेना और बेचना बर्जित है पर अब भी किसी २ देश में लोग मनुष्यों को मोल लेकर दास बनाते हैं और बहुत मार पीटकर उन से कठिन काम करवाते हैं और उन्हें कुछ मजूरी नहीं देते। यह बहुत अनुचित है॥

पूतीफर यूसफ को अपने घर ले गया और उसे खेत में परिश्रम करने के लिये नहीं भेजा वरन घर ही के काम में रक्खा जहां यूसफ को भारी काम करना नहीं पड़ता था। यद्यपि यूसफ को अपने पिता के पास जाने की बड़ी इच्छा थी तौभी वह इस व्यर्थ सोच में समय नष्ट नहीं करता था वरन अपने स्वामी को प्रसन्न रखने की चिन्ता में लगा रहता और अच्छी रीति से काम करता था। ईश्वर ही की सहायता से यूसफ अपने स्वामी की सब आज्ञाओं का पालन भली भांति करता था। पूतीफर ने जान लिया कि ईश्वर यूसफ के साथ है क्या जाने यूसफ ने उस को ईश्वर की बात सिखाई क्योंकि उस के पहिले वह सत्य ईश्वर को नहीं जानता था वह तो केवल मूर्त्तिपूजक था॥

दिन पर दिन स्वामी की प्रीति यूसफ पर बढ़ती गई और अन्त में उस ने यूसफ से कहा कि मैं तुम्हें बहुत मानता हूं और तुम पर विश्वास करता हूं इस लिये अपने सब सेवकों पर तुम को प्रधान करता हूं और घर द्वार खेती बारी और सारी वस्तु तुम्हें सौंपता हूं तुम सब को संभालो। इस प्रकार यूसफ पर अपने स्वामी की सब वस्तुओं का भार पड़ा और सब सेवक लोग उस का कहना मानने लगे। पूतीफर के बाहर जाने पर यूसफ अपनी इच्छा के अनुसार काम कर सकता था पर नहीं वह तो जैसा स्वामी के साम्ने करता वैसा ही उस के जाने पर भी करता था क्योंकि वह जानता था कि परमेश्वर की दृष्टि मुझ पर सर्व्वदा रहती है। बहुतेरे लड़के ऐसे हैं कि ज्योंही उन के माता पिता बाहर निकलते हैं त्योंही वे उन की आज्ञा के विरुद्ध करने लगते हैं पर यह बड़ा अनुचित है॥

यूसफ के हाथ में अपने स्वामी की सब अच्छी २ वस्तु रहती थीं पर उन में से वह कुछ नहीं लेता था केवल जो कुछ आहार और वस्त्र उस का स्वामी उसे देता था उसी को अपना समझता था। वह सदा काम काज में लगा रहता था कभी घर में और कभी खेतों में वह परिश्रम किया करता था और ईश्वर ने उस को यहां लों आशीष दिई कि खेतों में अनाज की बहुत बढ़ती हुई और घर के काम भी अच्छी रीति से चलने लगे इस कारण

पूतीफर को अपने घर की कुछ चिन्ता नहीं रहती थी। अब यूसफ बड़े सुख से रहने लगा उस को कुछ कमी न थी केवल जब पिता और छोटे भाई बिन्यामीन को स्मरण करता तब शोकित होता था॥

कुछ समय के पीछे यूसफ पर कैसी महा विपत्ति पड़ी सो सुनो। पूतीफर की पत्नी बड़ी दुराचारिणी थी और यूसफ ने उस की दुष्टता को जान लिया था इस लिये वह यूसफ से जलती थी और अपने यहां से निकाल देना चाहती थी। एक दिन उस पापिनी ने पूतीफर से कहा कि आप के समझ में यूसफ बहुत अच्छा है पर सचमुच वह बड़ा दुष्ट है। जब आप बाहर चले जाते हैं तब वह बड़ा दुष्कर्म्म करता है। इसी रीति उस स्त्री ने यूसफ पर अनेक झूठे दोष लगाये। पूतीफर अपनी पत्नी की बात पर विश्वास करके यूसफ से अत्यन्त क्रोधित हुआ और उसे बन्दीगृह में डालने की आज्ञा दिई। तब कई एक मनुष्यों ने यूसफ को पकड़कर उस बन्दीगृह में जो पूतीफर के घर ही में था डाल दिया॥

हे प्यारे लड़को तुम नहीं जानते कि बन्दीगृह कैसा दुःखदाई स्थान है। उस में छोटी २ खिड़कियां होतीं और उन में लोहे की छड़ लगी रहती हैं और बड़े २ फाटक दृढ़ अगरियों से बन्द रहते हैं। ऐसे एक बन्दीगृह में यूसफ डाला गया उस के हाथों में हथकड़ी और पांवों में बेड़ी पड़ने के हेतु उस को अत्यन्त कष्ट भोगना पड़ा। बन्दीगृह में और भी बहुतेरे लोग थे जो अपने २ दोषों के कारण वहां डाले गये थे पर यूसफ ने तो कुछ अपराध नहीं किया था इस लिये ईश्वर उस का प्रेम करता था और इसी से बन्दीगृह के भीतर भी वह सुख और चैन से रहता था॥

किसी २ बन्दीगृह के रक्षक बड़े निर्दय होते हैं परन्तु उस बन्दीगृह के रक्षक के मन में परमेश्वर ने यूसफ पर प्रेम और दया उपजाई। यूसफ अति सुन्दर था और उस के चाल चलन अच्छे थे और बन्दीगृह के रक्षक की आज्ञा में भी वह रहता था। निदान उस रक्षक ने यूसफ के हाथ पांव से बेड़ी उतार लिई और उसे बन्दीगृह में चलने फिरने और सब बन्दियों को देखने सुनने की अनुमति दिई क्योंकि उस ने यूसफ को विश्वासयोग्य

और सब कामों में निपुण समझा था। परमेश्वर ने यूसफ को ऐसी बुद्धि दिई थी कि वह सब काम भली भांति कर सकता था और ईश्वर उसे ढाढ़स देने और उस की भलाई करने में तैयार रहता था। यूसफ को आशा थी कि किसी दिन ईश्वर मुझे इस बन्दीगृह से बाहर निकालेगा॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

धर्म्मी पर बहुत सी बिपत्ति पड़ती हैं पर परमेश्वर उन सभों से उसे छुड़ावेगा। (३४ गीत का १९ पद)॥

## १३ तेरहवें पाठ के प्रश्न।

व्यापारी लोग यूसफ को मोल लेकर कहां ले गये?
फिर यूसफ किस के हाथ बेचा गया?
पूतीफर ने यूसफ के साथ कैसा व्यवहार किया?
यूसफ पर किस ने झूठे दोष लगाये?
पूतीफर ने यूसफ को क्या दण्ड दिया?
बन्दीगृह के प्रधान ने यूसफ को किस रीति रक्खा?

---

## चौदहवीं कथा।

### पियाऊ और रोटीवाले की कथा।

उत्पत्ति का ४० पर्व्व।

एक दिन पूतीफर ने दो मनुष्यों को यूसफ के पास लाकर कहा कि मैं इन्हें तुम को सौंपता हूं तुम इन की रक्षा करो ऐसा न हो कि ये भाग जायें। इस से जान पड़ता है कि पूतीफर यूसफ को बिश्वासयोग्य समझता था। क्या जाने उस ने पीछे से जान लिया कि मेरी पत्नी ने यूसफ को झूठमूठ दोष लगाया पर उस ने यूसफ को बन्दीगृह से निकाला नहीं॥

वे दो मनुष्य जो बन्दीगृह में लाये गये मिसर देश के राजा के सेवक थे। उस राजा के और बहुत से सेवक भी थे पर इन दोनों में एक जन दाखरस कटोरे में रखकर राजा को पीने के

लिये देता था वह पियाऊ कहलाता था। दूसरा राजा के खाने के लिये रोटी मिठाई आदि बनाता था उसे रोटीवाला कहते थे। इन दोनों ने राजा के बिरुद्ध कुछ काम किया था जिस से राजा ने क्रोधित होके अपने प्रधान सेनापति पूतीफर को आज्ञा दिई कि इन्हें बन्दीगृह में डाल दो। तब पूतीफर उन को यूसफ के पास लाया और यूसफ ने दोनों को एक कोठरी में रक्खा और बड़े यत्न के साथ उन्हें प्रतिदिन खान पान आदि देने लगा॥
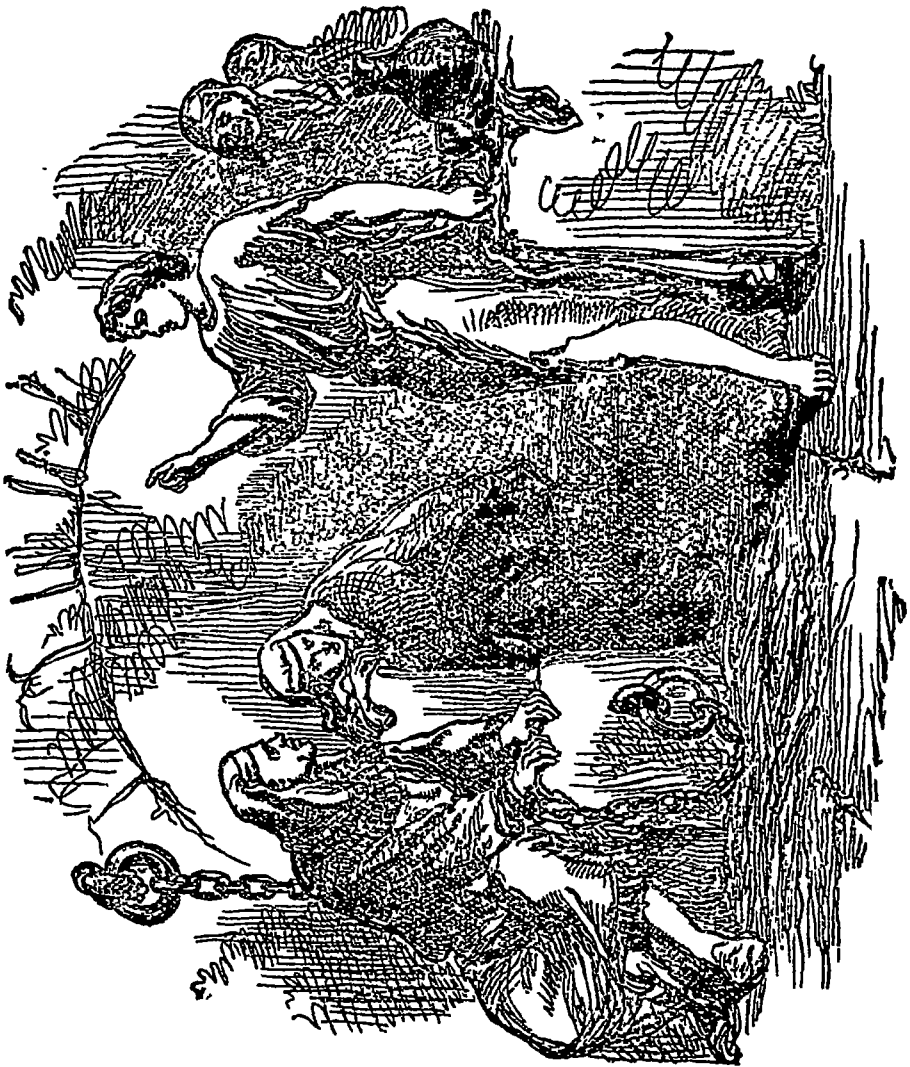
एक दिन भोर को यूसफ ने उन के पास आकर उन्हें बहुत उदास देखा और पूछा कि तुम क्यों आज ऐसे उदास हो। उन्हों ने उत्तर दिया कि कल्ह रात को हम दोनों ने एक २ आश्चर्य्य स्वप्न देखा है और यहां उन का अर्थ लगानेवाला कोई नहीं है। यूसफ ने कहा कि मेरा ईश्वर सब कुछ जानता है और वही उन का अर्थ बता सकता है तुम अपने २ स्वप्न का वर्णन करो॥

तब पियाऊ पहिले अपने स्वप्न को कहने लगा कि मैं ने एक दाख की लता देखी जिस में तीन डालियां थीं पर कुछ फल न था। देखते २ उस में कलियां निकल आईं फूल लग गये और पक्के २ अंगूर फल उठे। निदान मैं ने कुछ फल तोड़कर एक कटोरे में निचोड़ा और दाखरस बनाकर राजा के पास ले गया और पहिले के समान उसे पीने को दिया। पियाऊ के इस स्वप्न का अर्थ परमेश्वर ने यूसफ को जनाया और यूसफ ने पियाऊ से कहा कि जो तीन डालियां तुम ने देखीं वे तीन दिन हैं अर्थात् तीन दिन में राजा तुम्हें बुलाकर तुम्हारा काम देगा॥

रोटीवाले ने यह मनोहर अर्थ सुनकर मन में विचार किया कि क्या जाने मेरे स्वप्न का अर्थ भी ऐसा भला होगा। इतने में वह भी अपना स्वप्न कहने लगा कि मैं ने स्वप्न में तीन उजली टोकरियां अपने सिर पर देखीं और ऊपर की टोकरी में राजा के लिये नाना प्रकार के आहार रक्खे हैं और पखेरू उन में से ले २ खा रहे हैं। रोटीवाले ने समझा कि यूसफ अब कहेगा कि तीन दिन के पीछे तुम को राजा का काम फिर मिलेगा पर उस के स्वप्न का दुःखजनक अर्थ था। यूसफ ने कहा कि तीन टोकरियां भी तीन दिन के दृष्टान्त हैं अर्थात् तीन दिन में राजा इस बन्दीगृह से तुम्हें निकालकर तुम्हारा सिर कटवा लेगा और धड़ एक पेड़ पर लटका देगा और पंछी तुम्हारा मांस नोच २ खायेंगे॥

पियाऊ को अपने स्वप्न का अर्थ सुनकर जितना सुख हुआ था बिचारे रोटीवाले को उस से बहुत अधिक दुःख हुआ। यूसफ ने पियाऊ से बिन्ती किई कि जब तुम राजा को दाखरस दोगे तो उस से मेरी भी चर्चा करना और अनुग्रह करके राजा से कहना कि मैं यहां बन्दीगृह में बंधा हूं और मुक्त होने का कुछ उपाय

नहीं है। मैं एक दूर देश में रहता था वहां से लोग मुझे चुरा लाये थे और यहां भी मैं ने बन्दीगृह में रहने के योग्य कोई अपराध नहीं किया। तुम राजा से बिन्ती करना कि वह मुझे यहां से निकलवा ले॥

देखो यूसफ ने नहीं बताया कि मेरे भाइयों ने मुझे बेचा क्योंकि वह उन पर दोष लगाना नहीं चाहता था॥

ठीक तीसरे दिन राजा की जन्मगांठ थी और उस ने अपने सब सेवकों को भोज दिया। तब उस ने पियाऊ और रोटीवाले को स्मरण कर कहा कि पियाऊ को मेरे पास लाओ पर रोटी-वाले को फांसी चढ़ा दो मैं उस पर क्षमा न करूंगा। अब उन दोनों को निश्चय हुआ कि यूसफ की बातें सब सच और ठीक हैं॥

राजा के पास जाने पर पियाऊ यूसफ को निपट भूल गया। राजभवन के भोजन वस्त्र रुपैये और सब ऐश्वर्य्य की वस्तुओं में भूल रहा उस को कुछ भी स्मरण न हुआ कि बिचारा यूसफ बन्दीगृह में है। पियाऊ बड़ा निर्दय और अकृतज्ञ था॥

देखो माता पिता अपने लड़कों पर अति स्नेह और दया करते हैं परन्तु कोई २ लड़के बड़े होने पर अपने माता पिता के साथ अकृतज्ञ होते हैं। परमेश्वर ने पापियों के निमित्त अपना पुत्र भेजा कि वह उन के लिये अपना प्राण देवे तैाभी पापी लोग परमेश्वर के साथ कैसी अकृतज्ञता करते हैं॥

बेचारे यूसफ ने वृथा आशा किई थी कि कोई आकर मुझे बन्दीगृह से निकालेगा क्योंकि समय बीता जाता था और यूसफ वहीं पड़ा रहा। परमेश्वर ने यूसफ को धीरज धरना सिखाने के लिये इतने दिन तक दुःख में रहने दिया। हे प्रिय लड़को यदि ईश्वर तुम को बहुत दिन लों पीड़ित रक्खे तो तुम्हें जानना चाहिये कि वह तुम को सहनशील बनाया चाहता है और यदि अच्छा होने में तुम्हारी भलाई देखेगा तो अवश्य तुम्हें अच्छा करेगा नहीं तो अपने पास स्वर्ग में तुम को बुला लेगा॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

परमेश्वर उस पर कृपालु है जो उस की बाट जोहता है और जो प्राणी उसे खोजता है। (बिलाप का ३ पर्ब्ब २५ पद)॥

## १४ चौदहवें पाठ के प्रश्न।

किन दो मनुष्यों को पूतीफर ने यूसफ के हाथ सौंपा?
एक दिन भोर को वे दोनों क्यों शोकित हुए?
पियाऊ ने क्या स्वप्न देखा और उस का अर्थ क्या था?
रोटीवाले ने कैसा स्वप्न देखा और उस का अर्थ क्या था?
यूसफ ने पियाऊ से क्या बिन्ती किई?
पियाऊ ने यूसफ की बात स्मरण किई वा नहीं?
अकृतज्ञता क्या है?

---

## पन्द्रहवीं कथा।

### यूसफ के छुटकारे के विषय में।

उत्पत्ति का ४१ पर्ब्ब।

मिसर देश का महाराजा फिरऊन कहलाता था। वह बहुत बड़ा राजा था और उस के पास बहुत धन और अनेक दास दासियां थीं। वह सुन्दर २ गहने और वस्त्र पहिनता था और सोने का मुकुट देकर वह अपने अति मनोहर राजभवन में सिंहासन पर बैठता था और जब अनेक घोड़ों की गाड़ी पर चढ़कर बाहर निकलता तो प्रजा लोग भूमि पर झुककर दण्डवत करते थे॥

उस महाराजा ने एक रात में दो बड़े अचरज के स्वप्न देखे। एक तो कि वह आप नदी के तीर पर खड़ा है और नदी से सात सुन्दर और मोटी गायें निकलीं और उस के पास चरने लगीं। फिर और सात दुबली पतली गायें उस नदी से निकल आईं और उन मोटी और सुन्दर सात गायों को खा गईं पर पहिले की सी दुबली पतली बनी रहीं। इतने में राजा की आंखें खुल गईं और कुछ पीछे फिर नींद आई तो स्वप्न में क्या देखता है कि अनाज के एक डंठे में भरी हुई सात बालें निकल आईं यह देखते २ दूसरे एक डंठे में पतली और कुम्हलाई सात

बालें और निकलीं। इन बालों ने पहिली सात बालों को निगल लिया॥

फ़िरऊन जाग उठा और अचम्भित होकर इन स्वप्नों के अर्थ जानने के लिये बड़ा व्याकुल हुआ। भोर होते ही उस ने अपने दासों को आज्ञा दिई कि स्वप्नों के अर्थ कहनेवालों को बुलाओ। तब बहुत से लोग जो अपनी समझ में ज्ञानी थे आये पर उन में से कोई फिरऊन के स्वप्नों के अर्थ न कर सका इस लिये राजा बहुत घबराया। अब पियाऊ ने यूसफ को स्मरण किया और बहुत पछताकर बोला कि हाय मेरा अपराध आज मुझे चेत आता है। महाराज आप को याद होगा कि एक समय आप ने रोटीवाले और मुझ पर क्रोधित होकर सेनापति पूतीफर के घर के बन्दीगृह में डलवा दिया था। वहां हम दोनों ने एक २ स्वप्न देखा और यूसफ नाम एक जवान ने हमारे स्वप्नों के अर्थ करके कहा कि राजा रोटीवाले को फांसी चढ़ावेगा पर तुम को काम देगा सो उस की बात सच हुई॥

यह सुनते ही फिरऊन ने यूसफ को बुला भेजा और उस के दासों ने बन्दीगृह के प्रधान के पास जाकर कहा कि यूसफ को निकालिये क्योंकि राजा ने उसे बुलाया है। अब यूसफ आनन्दित हुआ क्योंकि उस ने निश्चय जाना कि परमेश्वर ने मेरी प्रार्थना सुनी। दासों ने यूसफ को नहला धुलाकर अच्छा कपड़ा पहिनाया और राजा के आगे ले गये। बहुत दिन के पीछे यूसफ के शरीर में मधुर वायु लगी और हरे २ खेत उस की दृष्टि में आये। इतने दिन तक बन्द रहने के कारण क्या जाने वह पीला और रोगी सा हुआ था॥

यूसफ राजभवन में जाकर राजा के साम्हने खड़ा हो गया और राजा ने उस से कहा कि मैं ने सुना है कि तू अच्छी रीति स्वप्न का अर्थ कर सकता है। यूसफ ने उत्तर दिया कि मैं तो नहीं पर मेरा परमेश्वर स्वप्न का अर्थ अवश्य बता सकता है और मुझे निश्चय है कि वही आप के स्वप्नों के अर्थ बता देगा तब फिरऊन ने अपने दोनों स्वप्नों को सुनाया राजा के चुप होने पर यूसफ बोला कि आप के दोनों स्वप्नों का एक ही अर्थ है इन

के द्वारा ईश्वर ने होनेवाली बात आप को दिखाई है। वे सात मोटी गायें और अच्छी वालें पहिले सात बरस के सदृश हैं जिन में अनाज की बहुत बढ़ती होगी और सात दुबली गायें और मुरझाई हुई वालें पिछले सात बरस के दृष्टान्त हैं जिन में बड़ा भारी अकाल पड़ेगा। सात बरस तक मिसर में बड़ी सस्ती रहेगी और फिर सात बरस ऐसी महंगी होगी कि पहिले की सस्ती कुछ न जान पड़ेगी। आप को यह बात दो बार दिखाने का कारण यह है कि ईश्वर ने इसे ठहरा रक्खा है और जल्दी पूरा करेगा अब आप को चाहिये कि एक ज्ञानी और बुद्धिमान मनुष्य को ढूंढ़कर इस काम पर ठहरावें कि इस देश में सस्ती के सात बरस तक जितना अनाज हो उस का पांचवां भाग बटोर २ कर बड़े २ खत्तों में रखता जावे कि अकाल के समय प्रजा लोग भूखों न मरें॥

यह बात फिरऊन और उस के दासों को बहुत अच्छी लगी और स्वप्नों के अर्थ पर सभों ने विश्वास किया और राजा ने कहा कि हम को यूसफ सा ज्ञानी पुरुष कहां मिलेगा। यूसफ ही इस काम पर ठहराया जावे। फिर राजा ने यूसफ से कहा तुम ऐसे बुद्धिमान हो कि इस देश के शासन करने में मैं तुम्हारी सहायता चाहता हूं जैसे सब लोग मेरा वचन मानते हैं वैसे ही तुम्हारा वचन भी मानेंगे और इस राज्य में मेरे नीचे सब से बड़े तुम ही होगे। यह कहकर राजा ने अपने हाथ से अंगूठी उतारके यूसफ को पहिना दिई और अपने वस्त्र के समान सुन्दर वस्त्र देकर उस के गले में सोने की सीकरी डाल दिई और चढ़ने के निमित्त उत्तम गाड़ी देकर लोगों को यह आज्ञा दिई कि जब यूसफ को देखें तब झुककर दण्डवत करें क्योंकि वह मिसर देश का अध्यक्ष बन गया है॥

अब यूसफ महान् हुआ पर आलसी होना उसे अच्छा न लगा। वह गाड़ी पर चढ़कर अनाज बटोरने के लिये चारों ओर देश में घूमने लगा और बड़े २ खत्ते बनवाकर अनाज से भरवाये। उस ने चैन से समय नहीं बिताया पर लोगों के उपकार के लिये सदा परिश्रम करता रहा। बन्दीगृह से छूटने के कारण

वह बड़ा सन्तुष्ट हुआ और परमेश्वर का धन्य माना। बड़ाई मिलने के कारण नहीं पर लोगों के उपकार करने में समर्थ होने

के कारण वह प्रसन्न हुआ। यूसफ ने एक कुंवारी से बिवाह किया और उस के दो बेटे हुए तौभी वह अपने प्यारे पिता और बिन्यामीन को न भूला बरन किसी न किसी दिन उन से मिलने की आशा करता था और उस ने अपने मन में दोषी भाइयों पर क्रोध न रक्खा क्योंकि वह जानता था कि ईश्वर की अनुमति से मैं बेचा गया था इस लिये कि यहां आकर मैं लोगों की रक्षा करूं॥

ईश्वर ही सब कुछ करता है और जो २ उस के द्वारा होते हैं सब भले हैं। वह हमारी भलाई के लिये हमें पीड़ित और दुःखित करता है हम परलोक में जाकर जानेंगे कि इस जगत् में किस कारण ईश्वर ने हमें इतना दुःख दिया था। हे प्रिय पाठक तुम जानते हो कि ईश्वर ने अपने पुत्र प्रभु यीशु ख्रीष्ट को इस लिये पापी लोगों के हाथ से मारा जाने दिया कि पाप और नरक से हम लोगों का उद्धार हो॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

जो लोग ईश्वर को प्यार करते हैं उन के लिये सब बातें

मिलके भलाई ही का कार्य्य करती हैं। (रोमियों को ८ पर्ब्ब २८ पद)॥

## १५ पन्द्रहवें पाठ के प्रश्न।

मिसर देश का राजा क्या कहलाता था ?
उस ने एक रात में कौन २ स्वप्न देखे ?
यूसफ के विषय में राजा से किस ने कहा ?
यूसफ स्वप्न का अर्थ किस रीति से कर सका ?
फिरऊन के स्वप्नों का अर्थ क्या था ?
यूसफ ने राजा को कौन सा उपाय बताया जिस से मिसर देश के लोग भूखों न मरें ?
अकाल के समय लोगों की रक्षा किस प्रकार हुई ?
फिरऊन ने यूसफ को क्यों अध्यक्ष बनाया ?

---

## सोलहवीं कथा।

### यूसफ के राज्य करने का वृत्तान्त।

उत्पत्ति का ४२ पर्ब्ब।

हे प्यारे बच्चो तुम सुन चुके हो कि यूसफ प्रायः राजा के समान महान् किस रीति से हुआ। राजा के स्वप्न देखने पर सात बरस लों खेतों में बहुत अनाज उत्पन्न हुआ और उस के पीछे बड़ा अकाल पड़ा। तब बेचारे लोग फिरऊन राजा के पास आकर बोले कि महाराज हम भूखों मर रहे हैं। यह सुनकर फिरऊन ने कहा कि यूसफ के पास जाओ वह तुम्हारे लिये उपाय करेगा। इस पर लोग यूसफ के निकट जाने लगे और वह खत्ते खोल २ अनाज बेचने लगा। बड़ी २ दूर से लोग आते थे और रुपैये देकर अपने बोरे और थैलियां भरवा ले जाते थे क्योंकि मिसर देश में अनाज बहुत था॥

कनान देश में भी बड़ा अकाल पड़ा था और जब वहां समाचार पहुंचा कि मिसर में अनाज बिक रहा है तब याकूब

ने अपने दस बेटों को वहां भेजा कि अनाज मोल लेवें और वे रुपैयों बोरों और लादने के लिये गदहों को लेकर यूसफ के पास आये। यद्यपि यूसफ ने उन्हें बीस बरस तक नहीं देखा था तथापि अब देखते ही पहिचाना पर उन्हों ने कुछ भी न जाना कि यही हमारा भाई यूसफ है। यूसफ को याद हुआ कि इन्हीं लोगों ने मुझे बेचा था अब यदि यूसफ चाहता तो उन को पकड़कर बेच डालता वा सहज से मरवा डालता पर नहीं यूसफ तो पहिले से उन पर क्षमा कर चुका था। राजा ने यूसफ का एक नया नाम रक्खा था और यूसफ बड़ा हो गया था और सुन्दर २ वस्त्र पहिनता था इस कारण भाइयों ने समझा कि यह तो कोई महापुरुष है। यह सोचकर उन्हों ने यूसफ के आगे आ भूमि लों दण्डवत किई। इस पर यूसफ को अपना पहिला स्वप्न याद पड़ा क्योंकि जैसे उस स्वप्न में भाइयों के गट्ठों ने उस के गट्ठे को दण्डवत किई थी वैसे ही अब उस के भाइयों ने भी उस को दण्डवत किई। परमेश्वर ने उस स्वप्न का अर्थ पूरा किया॥

यूसफ उन पर क्रोधित न था परन्तु यह जानने चाहता था कि वे अपने अपराध से पछताते और पिता और छोटे भाई बिन्यामीन को प्यार करते हैं वा नहीं इस कारण उस ने उन से नहीं कहा कि मैं यूसफ हूं बरन कठोर बचन से पूछा कि तुम कहां से आये। वे बोले अन्न मोल लेने के लिये हम लोग कनान देश से यहां आये हैं। यूसफ ने कहा कि मुझे जान पड़ता है कि तुम्हारे राजा ने इस देश की बुरी दशा देखने के लिये तुम्हें भेजा है जिस में वह सेना समेत आकर हम से लड़ाई करे। यूसफ के भाइयों ने बिन्ती कर कहा कि हे महाराज ऐसा न समझिये हम दस भाई सचमुच अनाज मोल लेने को आये हैं। यूसफ बोला कि मैं इस बात का बिश्वास नहीं कर सकता तुम अवश्य भेदिये हो। तब भाइयों ने कहा कि हम बारह भाई एक ही पिता से उत्पन्न हुए। हम में से एक मर गया और सब से छोटा भाई अब पिता के पास है। इस प्रकार उन्हों ने यूसफ को प्रतीति कराने के लिये बहुत यत्न किया तौभी उस ने दिखाया

कि वह प्रतीति नहीं करता। निदान यूसफ ने कहा कि मैं तुम्हारे भाई को देखने चाहता हूं। तुम अपने में से एक को भेजो और जब तक छोटे भाई को लेकर वह लौट न आवेगा तब तक तुम को बन्दीगृह में रहना पड़ेगा॥

यह बात सुनकर वे बहुत घबराये क्योंकि वे जानते थे कि पिता बिन्यामीन को कभी न आने देगा इस कारण बिन्यामीन को लाने में कोई तैयार न हुआ। यूसफ ने उन सभों को बन्दीगृह में तीन दिन लों बन्द रक्खा तब यूसफ का जो अपराध उन्हों ने किया था उन को याद पड़ा। सच है बन्द रहने के समय लोगों को सोच और प्रार्थना करने का अवसर मिलता है। हे प्यारे लड़को मैं भरोसा करती हूं कि जब तुम दण्ड पाने के लिये बन्द किये जाते हो तब तुम प्रार्थना करते हो कि परमेश्वर तुम्हें अच्छे लड़के बनावे॥

भाई लोग बहुत डरे क्योंकि वे नहीं जानते थे कि वह महापुरुष क्या करेगा। तीसरे दिन यूसफ उन के निकट जाकर बोला मैं ईश्वर से डरकर यह कहता हूं कि मैं एक जन को यहां बन्द करके और सभों को बिदा करूंगा तुम अन्न लेकर अपने घर जाओ परन्तु लौटते समय छोटे भाई बिन्यामीन को अपने साथ अवश्य लेते आना तो मुझ को निश्चय होगा कि तुम सच कहते हो और तुम बचोगे नहीं तो मैं जानूंगा कि तुम झूठे हो॥

मिसर देश के लोग मूर्त्तिपूजक थे और उन में से इस बड़े मनुष्य को ईश्वर से डरते देखकर भाई लोग कितने अचम्भित हुए होंगे। वे अपने यहां फिर जाने की आज्ञा पाकर भी अति आनन्दित न हो सके इस हेतु कि एक भाई को बन्दीगृह में छोड़कर जाना पड़ा। तब यूसफ की बात उन के मन में आई और वे आपस में कहने लगे कि हाय हाय हम ने यूसफ के साथ महापाप किया था। देखो उस ने अपनी रक्षा के लिये कितनी बिन्ती किई पर हम लोगों ने न सुनी अब परमेश्वर उसी पाप का दण्ड हमें देता है। इस बात के सुनने से यूसफ का रोना रुक न सका वह बाहर जा बिलक २ रोने लगा क्योंकि उस ने उन का दुःख देखना न चाहा पर केवल उन की

परीक्षा करता था कि वे लोग बिन्यामीन पर दयालु और पिता को प्यार करते और अपने दोष से पछताते हैं वा नहीं ॥

फिर उन के पास आकर यूसफ ने शिमियोन नाम एक भाई को अलगाकर कहा कि जब तक तुम अपने छोटे भाई को लेकर लौट न आओगे तब तक मैं इसे बन्दीगृह में रखूंगा। यह कहकर उस ने सब भाइयों के साम्ने शिमियोन को बांधा तब उन को याद हुआ होगा कि यूसफ भी एक बेर ऐसाही बांधा गया था। शिमियोन के भाई लोग चले गये और वह बन्दीगृह में अकेला रह गया और कुछ न जान सका कि भाई लोग फिर कभी आकर मुझे छुड़ावेंगे वा नहीं। भाइयों के जाते समय यूसफ ने दासों को आज्ञा किई कि उन के बोरों को अन्न से भर दो और हर एक के रुपैये उस के बोरे में रख दो और मार्ग में खाने के लिये उन्हें भोजन दो। दासों ने उस की आज्ञा के अनुसार सब कुछ किया परन्तु उन्हों ने क्या किया सो यूसफ के भाइयों ने नहीं जाना ॥

जब वे घर पहुंचे तब सब जो उन पर बीता था पिता को सुनाया कि मिसर में लोगों के हाथ जो अनाज बेचता है अति महान् है। वह हम से बड़ी कठोरता से बोला कि तुम अन्न मोल लेने के बहाने से देश को देखने आये हो जिस में तुम्हारा राजा सेना लेकर आवे और यहां के बिचारे भूखे लोगों से लड़ाई करे। यों हम भेदिये ठहराये गये। हम ने उत्तर दिया कि हम भेदिये नहीं हैं परन्तु बारहों भाई एक पिता से जन्मे थे हम में से एक तो मर गया एक कनान देश में पिता के पास है और दस भाई यहां अन्न मोल लेने आये हैं पर उस ने हमारी प्रतीति नहीं किई और बिन्यामीन को वहां ले जाने की आज्ञा देकर शिमियोन को बन्दीगृह में बांध रक्खा और दृढ़ता से कहा कि जब लों तुम अपने छोटे भाई को यहां न ले आओगे तब लों मैं इस को न छोड़ूंगा। इस के सुनने से बिचारे वृद्ध याक़ूब को बड़ा शोक हुआ फिर जब उन्हों ने अपने २ बोरों को खोला और देखा कि सब के रुपैये बोरों के भीतर हैं तब वे बड़े अचम्भित हुए और डरे क्योंकि उन्हों ने

समझा कि हमें दोषी ठहराने के लिये किसी मनुष्य ने हमारे बोरों में रुपैये रख दिये हैं कि जब हम मिसर के फिर जायें तब वह हमें चोर का दण्ड देवे। उन्हों ने रुपैये नहीं चोरी किये थे तौभी चोर थे क्योंकि यूसफ के चोरी करके बीस रुपैये पर बेचा था और यह बात परमेश्वर जानता था॥

यद्यपि मिसर देश को जाने और उस प्रधान से भेंट करने में वे अब पहिले से अधिक डरते थे तौभी वहां जाना आवश्यक था इस लिये कि उन का आहार चुकने लगा और वे जानते थे कि जो हम नहीं जायेंगे तो बिचारा शिमियोन बन्दीगृह से न छूटेगा इस हेतु वे जाने को तैयार हुए पर याकूब ने किसी प्रकार बिन्यामीन को ले जाने की अनुमति उन्हें न दिई और कहा कि तुम्हारे साथ बिन्यामीन को जाने देने में मैं बिश्वास नहीं करता क्या जाने उस पर भी कुछ बिपत्ति आ पड़े। तुम ने मेरे दो पुत्रों अर्थात यूसफ और शिमियोन को गंवाया है और यदि तुम्हारे साथ बिन्यामीन को मैं जाने दूं तो वह भी न फिर आवेगा और उसी दुःख से मेरा प्राण जायगा। याकूब बिन्यामीन को इतना प्यार करता था कि उस ने समझा कि बिन्यामीन से अलग होने से मेरा हृदय फट जायगा॥

निदान उस समय यूसफ के भाई लोग मिसर को फिर न जा सके क्योंकि उन को निश्चय था कि यदि बिन्यामीन हमारे संग न जावेगा तो हमारा जाना ब्यर्थ होगा। देखो वे कैसे महा दुःखसागर में डूब गये उन के पाप के लिये परमेश्वर ने उन्हें ऐसा दण्ड दिया॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

बिपत्ति पापियों के पीछे दौड़ती है परन्तु धर्म्मियों को उत्तम प्रतिफल मिलेगा। (सुलेमान के दृष्टान्त का १३ पर्ब्ब २१ पद)॥

## १६ सोलहवें पाठ के प्रश्न।

अकाल के समय सब लोग किस के पास जाकर अनाज मोल लेते थे?

यूसफ ने अपने भाइयों को देखकर पहिचाना वा नहीं ?
क्या भाइयों ने यूसफ को पहिचाना ?
उन्हों ने उसे क्यों न पहिचाना ?
यूसफ का पहिला स्वप्न क्योंकर पूरा हुआ ?
यूसफ किस कारण भाइयों से कठोरता से बोला ?
उन के मिसर में जाने के विषय में यूसफ ने क्या कहा था ?
तीन दिन लों यूसफ ने उन्हें कहां रक्खा था ?
यूसफ ने उन्हें किस को लाने की आज्ञा दिई ?
उन्हें बिदा करते समय यूसफ ने किस भाई को बन्दीगृह में रक्खा ?
यूसफ ने दासों को अन्न के साथ बोरों में कौन वस्तु रखने की आज्ञा दिई ?
भाई लोग बोरों के भीतर रुपैये देखकर क्यों डरे ?
याकूब ने बिन्यामीन को किस लिये मिसर में जाने न दिया ?

---

## सत्रहवीं कथा।

### यूसफ के भोज का वर्णन।

उत्पत्ति का ४३ पर्व्व।

मिसर से लाये हुए अनाज के चुक जाने पर भी कनान में कुछ न उपजा। तब याकूब ने अपने बेटों से कहा कि जाकर हमारे लिये कुछ अन्न फिर मोल लाओ। बेटों ने कहा कि यदि बिन्यामीन हमारे साथ न हो तो हम क्योंकर जा सकते हैं। मिसर के अन्न बेचनेवाले ने कहा है कि जब तक तुम अपने छोटे भाई को न लाओगे तब तक मेरे साम्ने न आना। जो आप बिन्यामीन को हमारे साथ जाने देवें तो हम जा सकते हैं। याकूब उन की बात सुन बहुत शोकित होकर बोला कि तुम ने क्यों उस पुरुष को जनाया कि हमारा और एक भाई है। यदि तुम मुझे प्यार करते तो ऐसा न कहते। वे बोले कि उस प्रधान ने हम से पूछा कि क्या तुम्हारा पिता अब लों जीता

है और तुम्हारे कोई और भाई है। भला हम क्योंकर जान सकते थे कि वह उसे बुलावेगा। अब भी याकूब ने बिन्यामीन को छोड़ना स्वीकार न किया॥

तब यिहूदा बोला कि यदि आप बिन्यामीन को हमारे साथ जाने दीजिये तो मैं उस की रक्षा करूंगा और निःसन्देह फिर उसे आप के पास लाऊंगा। जो मैं न लाऊं तो यह दोष मुझ पर सदा धरिये। देखिये यदि आप उसे न जाने देवेंगे तो हम सब अपने बाल बच्चे समेत भूख से मर जायेंगे। याकूब ने विचार किया कि बिन्यामीन को और रोकना भला नहीं है क्योंकि रोकने से बिन्यामीन सहित सब कोई भूख से मर जायेंगे इस लिये उस ने यिहूदा को उसे सौंप दिया परन्तु याकूब डरा कि वह महापुरुष कहेगा कि तुम रुपैये चोरी कर ले गये थे और इन्हें चोर का दण्ड देगा। यह सोचकर उस ने अपने पुत्रों से कहा कि उस महापुरुष की भेंट के लिये कुछ बादाम आदि फल गरम मसाले मधु मुर और सुगन्धी द्रव्य लेकर उस के पास जाओ। यद्यपि याकूब जानता था कि वह मनुष्य अति धनी है और उस के यहां कुछ कमी नहीं है तौभी उस को सन्तुष्ट करने के लिये उस ने ये सब पदार्थ भेजे। फिर याकूब ने कहा कि जो रुपैये बोरों के भीतर थे सो फेर ले जाओ और अन्न मोल लेने को दूसरे रुपैये लेकर बिन्यामीन को साथ लेकर चले जाओ। याकूब ने उन्हें जाने की आज्ञा बड़े दुःख के साथ दिई और परमेश्वर से प्रार्थना करके उन से कहा कि ईश्वर मिसर के प्रधान को तुम पर ऐसा दयालु करे कि वह शिमियोन और बिन्यामीन को तुम्हारे साथ फिर यहां आने दे। जब बिन्यामीन याकूब से बिदा हुआ तो याकूब ने स्मरण किया होगा कि मैं ने एक बेर यूसफ को रंग बिरंग का पहिरावा पहिनाकर भाइयों के खोज में भेजा था और वह न फिरा इस लिये याकूब को डर होने लगा कि क्या जाने बिन्यामीन का मुख फिर न देखूंगा॥

भाइयों ने वह अच्छी भेंट रुपैये गदहे और बोरे साथ लिये और यिहूदा ने बिन्यामीन को अपने पास संभालकर बैठाया। तब वे अपने पिता और स्त्रियों और बालबच्चों से बिदा हुए और

मिसर का मार्ग लिया । वे अति व्याकुल थे क्योंकि नहीं जानते थे कि मिसर में पहुंचने पर कैसी दशा होगी । निदान वे मिसर में पहुंचकर जिस स्थान में यूसफ बैठा २ अन्न बेचता था आ खड़े हुए । उन के साथ बिन्यामीन को देखकर यूसफ को बहुत आनन्द हुआ । यद्यपि जिस समय यूसफ उस से जुदा किया गया था बिन्यामीन छोटा बच्चा था तथापि अब ज्योंही यूसफ ने उसे देखा त्योंही जाना कि यही बिन्यामीन है । भाइयों को देखते ही यूसफ ने अपने दारोगा को आज्ञा किई कि उन दस मनुष्यों को मेरे घर ले जाओ और बड़ा भोज तैयार करो क्योंकि दो पहर को वे मेरे संग खायेंगे पर भाइयों ने यह न सुना ॥

वह दारोगा उन को बुलाकर अपने साथ यूसफ के सुन्दर बड़े घर में ले गया । इस से वे और भी अधिक डरे और आपस में कहने लगे कि हाय २ अब हम बन्दीगृह में डाले जायेंगे और दासों के समान कठिन परिश्रम हमें करना पड़ेगा और तब बिचारा पिता क्या करेगा । यह सोचकर वे बहुत घबराये और घर के फाटक पर पहुंचते २ दारोगा से कहा कि महाराज इस के पहिले एक बेर और हम अन्न मोल लेने के लिये यहां आये थे और रुपैये देकर अन्न मोल लिया था पर अपने यहां जाकर बोरों को खोलतेही क्या देखते हैं कि अन्न के साथ रुपैये भी हैं । हम यह नहीं जानते कि किस ने उन के भीतर रुपैये रख दिये इस लिये हम उन को और अन्न मोल लेने के लिये दूसरे रुपैयों को भी लाये हैं ॥

रुपैये फेर देने में तो भाइयों ने अच्छा किया और सच बोले पर एक बार उन्हों ने चोरी किई और झूठ बोले थे ॥

दारोगा ने बड़ी दया से उत्तर दिया कि तुम मत डरो परमेश्वर तुम्हारा पिता है और उसी ने तुम्हारे बोरों में धन रक्खा था । अन्न का मोल मुझे मिल चुका । देखो वह दारोगा ईश्वर की बात जानता था । मिसर देश के सब लोग मूर्त्तियों की पूजा करते थे तो क्या जाने यूसफ ने दारोगा को ईश्वर की बात सिखाई थी ॥

जब उन्हों ने जाना कि हम बन्दीगृह में नहीं डाले जायेंगे

परन्तु उस महापुरुष के यहां भोजन करेंगे तब उन का जी बड़ा ठंढा हुआ पर वे नहीं जान सके कि किस कारण उस ने हम पर इतनी दया किई । इतने में वह दारोगा जाकर शिमियोन को लाया । शिमियोन बहुत दिन बन्दीगृह में बन्द था और मैं ऐसा भरोसा करती हूं कि यूसफ को बांधकर गढ़े के भीतर डालने में जो अपराध उस ने किया था उस पर अधिक चिन्ता करके पश्चात्ताप भी करता था ॥

दारोगा ने उन को चरण धोने के लिये पानी देकर उन के बिचारे थके हुए गदहों को दाना घास दिया । भाइयों ने आपस में कहा कि जब तक वह महापुरुष न आवे आओ हम भेंट साज रक्खें और उन्हों ने बादाम आदि फल मधु सुगन्धी द्रव्य मुर और गरम मसाले सब निकाले और साजकर मेज पर रक्खे । पीछे से यूसफ अन्न बेचकर अपने घर में आया और उस के ग्यारह भाइयों ने उस के साम्ने भेंट रखकर दण्डवत किई । अब की बेर यूसफ ने प्रेम से पूछा कि तुम लोग अच्छे हो और तुम्हारा पिता अब तक कुशल से जीता है । उन्हों ने फिर प्रणाम कर कहा कि हां आप का दास हमारा पिता जीता है और कुशल से है । अब यूसफ के दूसरे स्वप्न का अर्थ भी पूरा हुआ क्योंकि जैसे ग्यारह तारों ने उसे दण्डवत किई थी वैसेही उस के ग्यारह भाइयों ने उसे दण्डवत किई और जैसे सूर्य्य ने उस को प्रणाम किया था वैसे उस के पिता ने भेंट भेजकर प्रणाम कहा ॥

जब यूसफ ने बिन्यामीन को देखा तब उस की बड़ी इच्छा हुई कि उस के गले से लिपटकर चूमा लेवे पर उस ने अपने को रोककर केवल पूछा कि जिस छोटे भाई की चर्चा तुम ने किई थी सो क्या यही है । यह पूछकर उस ने बिन्यामीन से कहा कि हे मेरे लड़के परमेश्वर तुझ पर दयालु रहे । ऐसी बात कहते २ यूसफ की आंखें भर आईं और वह रोना न रोक सका इस लिये जल्दी से उन्हें छोड़ अपनी कोठरी में जाकर अकेला रोने लगा । यूसफ का स्वभाव कोमल था और वह अपने छोटे भाई को बहुत प्यार करता था इस लिये कि बिन्यामीन यूसफ की सगी

माता राहील का पुत्र था और सब सैातेले भाई थे। तुम जानते हे। कि लियाह और राहील नाम दो पत्नियां याकूब की थीं॥

जब भोजन तैयार हुआ तब यूसफ मुंह धोकर मुसकुराता हुआ बाहर निकला कि कोई न जाने कि वह रोया था और भोजन परोसने की आज्ञा दिई। भोजनगृह में यूसफ और ग्यारह भाइयों और उन मिसरियों के लिये जो यूसफ के साथ भोजन पर बैठा करते थे तीन मेज पृथक् २ थीं क्योंकि मिसरी लोग इब्रानियों के साथ नहीं खाते थे। यूसफ ने भाइयों को अपने अपने बय के अनुसार बैठाया अर्थात सब से जेठे को पहिले उस से लहुरे को दूसरे और तीसरे इत्यादि हर एक को अपने २ स्थान में बैठाकर बिन्यामीन को सब के पीछे बैठाया। इस पर उन के मन में बड़ा आश्चर्य्य हुआ कि यूसफ ने क्योंकर जाना कि कैान जेठा और कैान लहुरा है क्योंकि जवान पुरुषों के वय का निर्णय करना कठिन है॥

तब उन सभों ने भोजन करना आरम्भ किया भाइयों ने बहुत दिन से ऐसा उत्तम भोजन नहीं पाया था और बड़ी दूर से आने के कारण थके और भूखे प्यासे थे इस लिये वे बड़ी रुचि से खाने लगे। यूसफ ने अपनी मेज से सभों के पास अच्छी २ वस्तु भेजीं परन्तु बिन्यामीन के लिये हर एक के भोजन से पांच गुणा अधिक भेजा था। यह देखकर भाइयों ने बिन्यामीन से डाह नहीं किया। उन्हों ने एक बेर तो यूसफ से डाह किया था परन्तु अब उन के मन में कुछ डाह नहीं रहा॥

सब को प्रसन्न देखकर यूसफ आप बहुत सन्तुष्ट हुआ। एक समय उन्हों ने यूसफ को भूखा प्यासा देखकर कुछ आहार न दिया और गढ़े में डालकर आप खाने को बैठे थे अब उस बुरे व्यवहार के पलटे यूसफ ने उन की भलाई किई॥

हे प्रिय पढ़नेवाले। यीशु की बात स्मरण करो कि जब दुष्ट लोगों ने उस को सताया तब उस ने उन पर कैसी कृपा किई। उसी प्रकार यद्यपि हम लोग बहुत ऐसे काम करते हैं जिन से ईश्वर बड़ा अप्रसन्न होता है तथापि वह हम पर दयालु है। हम को भी ऐसाही करना उचित है। यदि कोई लड़का तुम्हारे

साथ बुराई करे तो तुम उस के साथ भलाई करो । जो तुम्हारा भाई मिठाई पावे और उस में से तुम्हें कुछ न दे तो जब तुम को मिठाई मिले तब तुम उसे अवश्य दो और यदि कोई तुम पर निर्दय हो तो तुम उन पर दया करो ॥

## धर्म्मपुस्तक का पद ।

यदि किसी को किसी पर दोष देने का हेतु होय तो जैसे ख्रीष्ट ने तुम्हें क्षमा किया तैसे तुम भी करो । (कलस्सीयों का ३ पर्ब्ब १३ पद) ॥

## १७ सत्रहवें पाठ के प्रश्न ।

बिन्यामीन की रक्षा करने की प्रतिज्ञा किस ने किई ?
याकूब ने अपने पुत्रों को मिसर में क्या भेंट ले जाने कहा था ?
मिसर में भाइयों के पहुंचने पर यूसफ का दारोगा उन्हें कहां ले गया ?
भाई लोग क्यों डरे ?
किस ने उन से कहा कि उन के बोरों में क्योंकर रुपैये रक्खे गये थे ?
जब यूसफ घर में आया तब उस के भाइयों ने उस का कैसा आदर किया ?
यूसफ क्यों रोया ?
भोजनगृह में तीन मेज क्यों थीं ?
भाइयों के बीच में यूसफ ने किस पर अधिक अनुग्रह प्रकाश किया ?
क्या और भाइयों ने बिन्यामीन से डाह किया ?
अपने भाइयों पर दया करने में यूसफ ने किस के सदृश व्यवहार किया ?

## अठारहवीं कथा।

### यूसफ की क्षमाशीलता का वर्णन।

उत्पत्ति का ४४ और ४५ पर्ब्ब के १ से १५ पद तक।

वह दिन भाइयों ने यूसफ के साथ बड़े आनन्द से बिताया और दूसरे दिन सवेरे जाने को तैयार हुए। यूसफ ने उस दारोगा को बुलाकर चुपके से कहा कि इन के बोरों को अन्न से भर दो और हर एक के रुपैये भी हर एक के बोरे में रक्खो और मेरे चांदी के कटोरे को सब से छोटे भाई के बोरे में रख दो। दारोगा ने वैसाही किया॥

दूसरे दिन भोर होते ही वे गदहों पर अपना २ बोरा लादकर चल निकले। वे अति आनन्दित थे क्योंकि अब की बेर सब के सब कुशल से मिसर देश छोड़ चले एक भी पीछे न रहा। वे सोचने लगे कि जब पिता जी बिन्यामीन को देखेंगे और सुनेंगे कि मिसर के प्रधान ने हम पर ऐसी दया किई तब बहुत अचंभित होकर प्रसन्न होंगे। इतने में उन का आनन्द भंग हो गया क्योंकि ज्यों वे लोग थोड़ी दूर आगे बढ़े त्यों क्या देखते हैं कि यूसफ का दारोगा उन के पीछे पुकारता और दौड़ता हुआ आ रहा है। वे खड़े हो गये और उस ने उन के निकट पहुंचकर कहा कि भलाई के पलटे बुराई तुम ने किस लिये किई कि मेरे प्रभु का चांदी का कटोरा चुरा लाये हो। भाइयों ने बड़े अचंभित होकर कहा कि आप क्यों ऐसा कहते हैं। हम लोगों से ऐसा बुरा काम कभी नहीं होगा। देखिये बोरों में रुपैये पाकर जब हम ने बिचारा कि भूल से वहां रक्खे गये थे तब हम उसे फेर लाये और अब क्या हम आप के स्वामी के यहां से पानी पीने का कटोरा चुरा लावेंगे। जो हम में से किसी ने यह काम किया हो तो वह मार डाला जावे और हम सब के सब आप के प्रभु के दास होवें। उन्हों ने यह बात निधड़क इस लिये कही कि वे निश्चय जानते थे कि हम में से किसी ने नहीं चोरी किई है। दारोगा ने कहा कि ऐसा नहीं पर केवल जिस ने

कटोरा चुराया है वही दास होगा और तुम सब कुशल से अपने घर लौट जाओगे। अब अपना २ बोरा खोलकर दिखाओ॥

तब जेठे भाई ने तुरन्त अपना बोरा खोला और दारोगा ने उस में ढूंढ़ा पर कटोरा न पाया। उसी प्रकार और नव भाइयों ने भी किया पर किसी के बोरे में कटोरा न निकला। निदान बिन्यामीन ने अपना बोरा खोला और अन्न के बीच में कटोरा देख पड़ा। इस पर वे अत्यन्त अचंभित हुए। तुम जानते हो कि बिन्यामीन ने कटोरा नहीं चुराया परन्तु उसी दारोगा ने आप उस के बोरे में रख दिया था॥

फिर दारोगा ने बिन्यामीन से कहा कि केवल तुझ को मेरे प्रभु के घर जाना और सर्वदा दास बनकर रहना पड़ेगा। तुम्हारे भाई लोग अपने देश को जा सकते हैं। भाइयों ने इस बात का स्वीकार न किया क्योंकि वे बिन्यामीन को ऐसा प्यार करते थे कि इस दुर्दशा में उसे अकेला न छोड़ सके। वे तुरन्त गदहे लादकर दारोगा के पीछे हो लिये और रोते २ यूसफ के घर तक आये॥

यूसफ घर में बैठा उन की बाट जोहता था और जब उस ने देखा कि बिन्यामीन के दास होने के डर से सब भाई बिलख २ रोते हुए उस के साथ आ रहे हैं तब वह अति प्रसन्न हुआ क्योंकि उस ने निश्चय किया कि वे बिन्यामीन को प्यार करते हैं॥

यूसफ को देखते ही उन्हों ने भूमि लों दण्डवत किई परन्तु यूसफ ने क्रोध से कहा कि तुम ने यह कैसा नीच काम किया है॥

हे प्यारे पाठक तुम को याद है कि बिन्यामीन की रक्षा करने की प्रतिज्ञा यिहूदा ने पिता से किई थी इस लिये उस ने निकट जाकर यूसफ से बिन्ती किई कि आप से क्या कहें ईश्वर हमारे पाप का दण्ड देता है। हम सब लोग आप के दास होकर रहेंगे। यिहूदा को निश्चय था कि बिन्यामीन ने कटोरा नहीं चुराया पर यह कहना तो व्यर्थ होगा इस निमित्त उस ने यूसफ से केवल दया की प्रार्थना किई। यूसफ ने कहा कि तुम सब मेरे दास न होगे जिस ने कटोरा चुराया था केवल

दासों से कहा कि यहां से बाहर जाओ और वे निकल गये। तब यूसफ चिल्लाकर रोया और कहा मैं यूसफ हूं क्या अभी तक मेरा पिता जीता है॥

यह सुनकर भाई लोग आनन्दित न हुए वरन घबरा गये और डर के मारे एक बात बोलने का साहस न कर सके। उन को घबराते देखकर यूसफ ने जाना कि वे अपने अपराध को सोचकर व्याकुल हो रहे हैं इस लिये उस ने चाहा कि उन्हें छाती से लगाकर चूमूं और ढाढ़स देने की इच्छा से कहा कि मुझे बेचने के कारण तुम व्याकुल न होओ क्योंकि ईश्वर ने इस अकाल के समय जीवों को बचाने के लिये तुम्हारे द्वारा मुझे यहां भेजा जिस में तुम्हारे बाल बच्चों की रक्षा हो। मैं चाहता

हूं कि तुम वृद्ध पिता और अपने सन्तानों को ले आओ मैं सभों का पालन करूंगा और तुम बड़े चैन से मेरे पास रहोगे। अच्छी रीति देखने से तुम्हें प्रतीति होगी कि मैं सचमुच तुम्हारा भाई यूसफ हूं और मैंही तुम से कहता हूं। तुम जल्दी पिता के पास जाकर कहो कि यूसफ जीता है और उस के पास बहुत धन और सुन्दर २ वस्तु हैं और वह हम लोगों के सहित आप को अपने पास रहने के लिये बुलाता है। यह कहकर यूसफ बिन्यामीन के गले से लिपटकर उसे चूम २ रोने लगा और यूसफ के गले पर सिर धरकर बिन्यामीन भी रोया। फिर यूसफ ने हर एक भाई के साथ वैसा ही किया तब उन का डर मिट गया और वे यूसफ के संग बातचीत करने लगे। अब उन्हों ने जाना कि यूसफ हमारा दोष क्षमा करके मन ही मन से हमें प्यार करता है। उन को इतना भरोसा कभी न था कि यूसफ उन्हें ऐसा प्यार करेगा इस लिये अपना दोष स्मरण कर और भी अधिक पश्चात्ताप किया॥

देखो जब लों यूसफ ने नहीं जाना कि मेरे भाई लोग अपने अपराध से पछताते हैं और अब पाप करना छोड़ दिया तब लों उस ने उन का दुःख नहीं मिटाया। इस में यूसफ ने प्रभु यीशु ख्रीष्ट के समान काम किया क्योंकि केवल अपने पाप के लिये पश्चात्ताप करने और पाप को त्याग करने से यीशु हम पर क्षमा करता है। तुम को याद होगा कि जिस बिचारी पापिनी ने अपने आंसू से यीशु के पांव धोये और अपने सिर के बालों से पोंछे उस पर यीशु ने कैसी दया किई। वह अपने पापों के कारण बहुत पछताई इस लिये यीशु ने उस से कहा कि तेरे पाप सब क्षमा हुए। पवित्र आत्मा ही के द्वारा हम पश्चात्ताप कर सकते हैं। हे प्यारे बच्चो जो तुम पाप से अपना २ मन फेरो तो तुम्हारा भी पाप क्षमा किया जायगा॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

तू ही हे प्रभु भला और क्षमावान है और उन सभों पर जो तुझ को पुकारते हैं अत्यन्त दयावान है। (८६ गीत का ५ पद)॥

## १८ अठारहवें पाठ के प्रश्न।

दारोगा ने यूसफ के भाइयों पर क्या दोष लगाया ?
जिस ने कटोरा चुराया उस के लिये क्या दण्ड ठहराया गया ?
किस के बोरे में कटोरा निकला ?
बिन्यामीन के बोरे में किस ने कटोरा रक्खा था ?
दारोगा ने और सब भाइयों को अपने देश जाने की अनुमति दिई वा नहीं ?
बिन्यामीन के साथ २ भाई लोग यूसफ के पास क्यों गये ?
उन्हें देखकर यूसफ क्यों प्रसन्न हुआ ?
यिहूदा ने बिन्यामीन के लिये यूसफ से क्या बिन्ती किई ?
उसी समय यूसफ ने भाइयों पर अपने को क्यों प्रगट किया ?
यूसफ को पहचानकर वे क्यों घबराये ?
इन बातों के पीछे यूसफ ने भाइयों के साथ किस प्रकार व्यवहार किया ?

## उन्नीसवीं कथा।

### मिसर में याकूब के जाने का वर्णन।

उत्पत्ति का ४५ पर्व्व १६ से २८ पद। ४६ और ४७ पर्व्व के १ से १२ पद तक। ५० पर्व्व।

भाइयों से यूसफ के मिलने की बात सुनकर फिरऊन के दास लोग बड़े आनन्दित हुए क्योंकि यूसफ ने उन से अपने भाइयों की दुष्टता की चर्चा नहीं किई थी। राजा फिरऊन यूसफ को अत्यन्त प्यार करता था इस लिये उस के भाइयों के आने का समाचार पाकर वह भी अति प्रसन्न हुआ और यूसफ को बुलाकर कहा कि अपने भाइयों से कहो यहां आकर बसें। तुम अपने पिता और अपने घराने के लोगों को बुला भेजो। उन को यहां सब से उत्तम २ आहार मिलेंगे। हम उन्हें खेत बारी और घर देंगे और वे यहां एकट्ठे रहेंगे। वृद्ध पिता और लड़के बालों और उन की माताओं को लाने के लिये गाड़ियां

भेजना चाहिये परन्तु अपनी सामग्री लाने का उन को कुछ प्रयोजन नहीं क्योंकि जो कुछ चाहिये सब हम उन्हें देंगे देखो राजा कैसा दयावान था ॥

यूसफ ने अपने भाइयों को गाड़ियां मार्ग के लिये भोजन और अनेक सुन्दर २ बस्तु दिईं क्योंकि वह बड़ा धनवान था । उस ने हर एक को दो २ जोड़े और बिन्यामीन को पांच जोड़े कपड़े और तीन सौ रुपैये दिये । अपने पिता की भेंट के लिये भी यूसफ ने दस गदहों पर कई प्रकार की अच्छी २ वस्तु और दस गदहियों पर अनाज रोटी आदि अनेक प्रकार के भोजन लादकर भेजे कि मार्ग में पिता को काम आवें । भाइयों के जाते समय यूसफ ने कहा कि पिता को लेकर बहुत जल्दी से लौट आइयो और देखो मार्ग में कहीं आपस में झगड़ा न होने पावे ॥

वे अति सन्तुष्ट होकर वहां से चले । वृद्ध याकूब उन की बाट जोह रहा था और डरता था कि क्या जाने बिन्यामीन कुशल से फिर आवेगा वा नहीं । इतने में वे सब के सब आते देख पड़े । पहुंचते ही उन्हों ने पिता को यह सुसन्देश सुनाया कि यूसफ जीता है और मिसर देश का अन्न बेचनेवाला महापुरुष वही है । यह सुनकर याकूब को आनन्द न हुआ क्योंकि उस ने उन की प्रतीति न किई बरन कहा कि बहुत दिन हुए मेरा पुत्र यूसफ तो मर गया । वे बोले कि नहीं २ हम ने यूसफ को देखा है । याकूब ने उत्तर दिया कि यह सच नहीं हो सकता । उन्हों ने कहा कि यूसफ ने आप को बुलाया है और चाहता है कि हम लोग चलकर उस के पास रहें तौभी याकूब ने उन की प्रतीति न किई । निदान उन्हों ने कहा कि बाहर आकर देखिये यूसफ ने कितनी गाड़ियां भेज दिईं हैं तब आप को निश्चय होगा कि हमारी बातें सच हैं । याकूब ने गाड़ियों को देखकर बिश्वास किया और अत्यन्त सन्तुष्ट होकर कहा कि मेरे लिये यह बस है . आहा मेरा बेटा यूसफ अब तक जीता है मैं अवश्य जाकर अपनी मृत्यु के पहिले उसे देखूंगा ॥

भाइयों ने अपनी पत्नियों और सन्तानों से कहा कि कनान देश छोड़कर हम लोगों को दूर देश में चलना पड़ेगा और वे सब

गाड़ियों पर चढ़कर चले। वृद्ध और निर्बल होने के कारण याकूब भी गाड़ी में बैठा परन्तु ग्यारह भाई जवान और बलवान थे इस हेतु अपने ऊंट भेड़ बकरी गाय और सारी सम्पत्ति के साथ पैदल चले। लड़के वाले आनन्दित हुए होंगे क्योंकि लड़के लोग एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने में प्रसन्न होते हैं॥

निदान मिसर देश में पहुंचकर यूसफ के घर की ओर जाते २ वे क्या देखते हैं कि एक उत्तम गाड़ी साम्ने से आ रही है। वह यूसफ की गाड़ी थी। निकट आकर गाड़ी ठहर गई और यूसफ उस में से उतरा। यह देखकर याकूब भी अपनी गाड़ी से बाहर निकला। उस के बाल पक्के थे और निर्बलता के कारण प्रायः नहीं चल सकता था। यूसफ तो बड़ा उत्तम पुरुष था वह पिता से भेंट करने के लिये दौड़ा और गले से मिलकर बहुत देर तक रोया। भाइयों की खोज में जाते समय जब यूसफ ने बहुरंगी पहिरावा पहिनकर पिता को चूमा था तब बालक था और तब से याकूब ने उस को याद करते २ जितने दुःख से दिन काटे और अब उस खोए हुए पुत्र को पाकर जितना आह्लादित हुआ सो नहीं कहा जा सकता। अब याकूब और यूसफ के बीच इतना प्रेम देखकर भाइयों ने कुछ डाह न किया। वृद्ध याकूब ने कहा यूसफ तुम अभी तक जीते हो और मैं ने तुम्हारा मुंह देखा है अब मैं सुख से मरूंगा॥

फिर यूसफ ने कहा कि मैं जाकर आप लोगों के आने का समाचार फिरऊन से कहता हूं। यह कहकर यूसफ राजा के पास गया और बोला कि मेरा पिता भाइयों के सहित सब सम्पत्ति लेकर आया है। इस के पीछे यूसफ ने अपने भाइयों में से पांच जनों को राजा के आगे ले जाकर दिखाया। राजा ने उन से पूछा कि तुम क्या काम करते हो। उन्हों ने उत्तर दिया कि हम गड़ेरिये हैं। कनान देश में कुछ चराई नहीं है इस लिये यहां आये हैं जो आप हमें कुछ भूमि देवें तो हम यहां रहकर अपने पशुओं का पालन करेंगे। फिरऊन ने कहा कि मैं बहुत सी भूमि तुम्हें दूंगा तुम सब लोग एकट्ठे यहां बास करो।

यूसफ की भी इच्छा थी कि वे एकट्ठे रहें क्योंकि मिसरी लोग प्रतिमापूजक थे॥

फिर यूसफ अपने पिता को राजा के साथ भेंट कराने के लिये भीतर ले गया। राजा ने याकूब का बहुत आदर किया इस लिये कि वह बहुत बूढ़ा था। देखो राजा लोग भी वृद्धों का आदर करते हैं क्योंकि यह करना उचित है तो बालकों को भी चाहिये कि वृद्धों का आदर करें और उन की सेवा करने में तैयार रहें और उन की आज्ञाओं का पालन करें॥

याकूब ने फिरऊन के सिर पर हाथ रखकर उसे यह आशीष दिई कि परमेश्वर आप पर अनुग्रह करे। याकूब फिरऊन का अत्यन्त प्रेम करता रहा होगा इस लिये कि वह यूसफ पर अति दयालु था। फिरऊन ने याकूब से पूछा कि आप की वय क्या है। याकूब ने उत्तर दिया कि एक सौ तीस बरस पर अब तक मैं अपने पितरों के समान वृद्ध न हुआ और मेरा जीवन दुःख से भरा हुआ है। फिर याकूब ने फिरऊन को आशीष दिई और उस से बिदा होकर जो स्थान राजा ने उसे दिया था वहां जाकर अपने सारे घराने समेत बास करने लगा। यूसफ अपने

पिता और भाइयों के साथ नहीं रहता था पर बार २ उन के पास जाया करता था ॥

कई एक बरस बीतने के पीछे याकूब को रोग हुआ और जब उस ने जाना कि अब मेरी मृत्यु निकट है तब अपने सब पुत्रों को आशीष देने के लिये अपने पास बुलाया । याकूब बहुत दिन से लंगड़ा था और अब बुढ़ापे के कारण उस को धुंधला दिखाई देता था और वह अति निर्बल और पीड़ित हो गया था । सब पुत्रों के आने पर याकूब उठ बैठा और हर एक को आशीष दिई और कहा कि मैं जल्द मरूंगा । मुझे मिसर में कहीं न गाड़ियो । मेरी लोथ कनान में ले जाकर जिस कबर में मेरा दादा इब्राहीम और पिता इसहाक गाड़े गये थे उसी कबर में मुझे भी गाड़ दीजिये । ऐसी २ बहुत बातें कहकर याकूब ने बिछौने पर अपने पांवों को समेट लिया और मर गया । उस का आत्मा ईश्वर के पास गया और अब लों स्वर्ग में है । याकूब पिछले दिन उस कन्दरा से जी उठेगा ॥

जब याकूब मर गया तब यूसफ उस के मुंह पर गिरकर रोया और चूमा । याकूब शोक से नहीं मरा क्योंकि मरने के पहिले परमेश्वर ने उस को यूसफ से मिलाया । यूसफ ने अपने दासों को आज्ञा दिई कि पिता की लोथ में सुगन्धी मसाले भरो कि वह शीघ्र सड़ न जाय और फिर उस ने कनान देश में ले जाकर जिस कन्दरा में इब्राहीम और इसहाक गाड़े गये थे उसी में उसे भी गाड़ दिया । यूसफ के सब भाई लोग अनेक दास घोड़े और गाड़ियां संग लेकर याकूब की लोथ को गाड़ने गये थे और गाड़कर सब एकट्ठे होके मिसर में लौट आये ॥

इस के पीछे भाइयों के मन में एक दुःखजनक चिन्ता उठी । उन्हों ने आपस में कहा कि क्या जाने यूसफ ने हमारे अपराध की क्षमा न किई केवल पिता को प्रसन्न रखने के लिये इतने दिन हमारे साथ दया का व्यवहार किया पर अब हमारी बुराई का पलटा लेगा । यह सोचकर उन्हों ने एक सेवक के द्वारा यूसफ को कहला भेजा कि पिता ने मरने के पहिले हमें आज्ञा दिई थी कि हम आप से अपने महा अपराध की क्षमा

मांगें इस लिये अब हम प्रार्थना करते हैं कि आप क्षमा कीजिये। यह सुनकर यूसफ बड़ा दुःखी हुआ और रोया कि हाय मेरे भाइयों ने मुझे ऐसा निर्दय समझा। थोड़ी देर में उस के भाइयों ने आकर बहुत डर से उसे दण्डवत किई। तब यूसफ ने कहा कि मत डरो तुम ने तो मुझ से बुराई करने की इच्छा किई थी परन्तु ईश्वर ने उसे भलाई कर दिई क्योंकि उसी के द्वारा तुम और बहुत से लोग भूखों मरने से बच गये। मैं तुम्हारा और तुम्हारे बालबच्चों का पालन करता रहूंगा। यूसफ की ऐसी दया की बातें सुनकर उन को शान्ति हुई॥

यूसफ बहुत बरस जीया और अन्त में अत्यन्त वृद्ध होकर मरा। यहां मैं यूसफ का इतिहास समाप्त करती हूं। वह अब प्रभु यीशु ख्रीष्ट के साथ स्वर्ग में है। यूसफ ने अपने भाइयों को क्षमा किई इस लिये यीशु ने भी यूसफ पर दया करके उस के सारे पापों को काटा क्योंकि यद्यपि धर्म्मपुस्तक में यूसफ के किसी दोष का वर्णन नहीं है तौभी वह पापरहित न था॥

इब्राहीम इसहाक और याकूब का वृत्तान्त तुम सुन चुके हो। ईश्वर उन तीनों पर प्रेम रखता था। इब्राहीम का बेटा इसहाक और इसहाक का बेटा याकूब था। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा किई थी कि कनान देश का अधिकार इब्राहीम इसहाक और याकूब के बंश को दिया जायगा और वह प्रतिज्ञा उसे याद थी पर उस से भी बढ़कर उत्तम एक और प्रतिज्ञा ईश्वर ने किई थी अर्थात उन के बंश में प्रभु यीशु ख्रीष्ट अवतार लेगा और उन्हें पापों से बचावेगा। इब्राहीम इसहाक और याकूब इस अच्छी प्रतिज्ञा को बार २ स्मरण किया करते थे। बहुत बरस के पीछे उन के बंश में प्रभु यीशु ख्रीष्ट ने जन्म लिया और लोगों के पाप का प्रायश्चित्त करके फिर स्वर्ग पर चढ़ गया। अब वह इब्राहीम इसहाक और याकूब के संग वहां है और हाबिल नूह यूसफ और सब भले लोग भी वहीं हैं जिन के पाप की क्षमा यीशु ख्रीष्ट ने किई॥

हे प्रिय बालको मेरी इच्छा है कि तुम भी मरने पर वहां जाकर उन के संग रहो॥

## धर्म्मपुस्तक का पद ।

तू वृद्धों के आगे खड़ा हो और उन की प्रतिष्ठा कर और अपने ईश्वर से डर । (लैव्यव्यवस्था का १९ पर्ब्ब ३२ पद) ॥

## १९ उन्नीसवें पाठ के प्रश्न ।

फिरऊन ने किन लोगों को मिसर में रहने की अनुमति दिई ?
ज्योंही याकूब ने सुना कि यूसफ जीता है त्योंही क्यों न प्रसन्न हुआ ?
अन्त में याकूब ने किस रीति बिश्वास किया कि यूसफ जीता है ?
स्त्रियां और लड़के मिसर तक किस प्रकार गये ?
मार्ग में याकूब से भेंट करने कौन आया ?
यूसफ ने अपने पिता को किस से भेंट कराई ?
याकूब को देखकर फिरऊन ने क्या किया ?
फिरऊन के साथ याकूब ने कैसा व्यवहार किया ?
अपनी देह के गाड़ने के विषय में याकूब ने अपने पुत्रों को क्या आज्ञा दिई ?
याकूब के मरने के पीछे यूसफ के भाई लोग उस से क्यों डरे ?
याकूब के जीते समय जैसा यूसफ अपने भाइयों पर दयावान था क्या पीछे भी वैसाही रहा ?
यूसफ के पिता का क्या नाम था ?
याकूब के पिता और दादा के क्या २ नाम थे ?
इब्राहीम इसहाक और याकूब की पत्नियों के नाम बताओ ?
याकूब के कै पुत्र थे ?
इब्राहीम इसहाक और याकूब के साथ परमेश्वर ने किन २ बातों का अंगीकार किया था ?
क्या ईश्वर ने अपनी बातें पूरी किईं ?
इब्राहीम इसहाक याकूब यूसफ और सब धर्म्मी लोग अब कहां हैं ?

## बीसवीं कथा।

### मूसा के बचपन का वृत्तान्त।

यात्रा का १ और २ पर्व्व के १ से १० पद तक।

बहुत दिन तक यूसफ और उस के भाइयों ने चैन से मिसर में वास किया। पीछे से वे बड़े बूढ़े हुए और अनेक लड़के वालों को छोड़कर मरे। समय पर इन के भी बहुत सन्तान हुए और इस प्रकार वे बहुत बढ़ गये। वे सब याकूब के वंश अर्थात् उस के पोते परपोते इत्यादि थे। याकूब का दूसरा नाम इस्रायेल था और यह नाम ईश्वर ने आप उसे दिया था इस लिये उस के सन्तानों को इस्रायेली भी कहते हैं॥

तुम को स्मरण होगा कि जब कनान देश में अकाल पड़ा था तब इस्रायेली लोग मिसर में जाकर रहे और जब लों वह भला राजा फिरऊन जीता था तब लों उन्हों ने वहां सुख से वास किया परन्तु उस राजा के मरने के पीछे उसी नाम का दूसरा राजा सिंहासन पर बैठा। इस राजा का वृत्तान्त सुनकर तुम विचार कर सकोगे कि वह भला अथवा बुरा मनुष्य था॥

उस राजा ने सोचा कि इस्रायेली लोग एक अति दूर देश से आये हैं और वे बहुत भी हैं तो ऐसा न हो कि किसी दिन खड्ग लेकर हमारे साथ लड़ाई करें और हमें प्रजाओं के समेत मारकर यह देश अपना कर लेवें। अच्छा है कि हम उन्हें अभी से ऐसे कठिन काम में लगावें कि वे क्लेश के मारे थोड़े दिन में नष्ट हो जावें। यह सोचकर उस ने कई एक ऐसे २ मनुष्य ठहराये कि वे इस्रायेलियों से ईंटें पथवाकर उन्हीं से ऊंचे २ घर चठवावें॥

इस्रायेल के सन्तान गड़ेरिये थे। गड़ेरिये लोग अपने झुंडों को कोमल घास और निर्मल जल के समीप ले जाते हैं और जब घाम अधिक होता है तब पेड़ों की ठंढी छाया में बैठकर बिश्राम करते हैं। यह कैसा सहज और उत्तम काम है। हाय इसे छोड़कर राजा की आज्ञा से इस्रायेल के बिचारे वंश को

मिट्टी खोदना ईंट बनाना और उन्हें घाम में सुखाना पड़ा और जब वे बहुत ईंट नहीं बनाते थे तब राजा के सेवक लोग उन को यहां लों मारते पीटते थे कि वे अत्यन्त दुःखी होते स्वास भरते बिलाप करते और बिलख २ रोते थे तौभी वे दिन २ अधिक होते जाते थे॥

जब इन सब कठिन कामों से वे न मरे तब राजा ने दूसरे उपाय से उन का नाश करना चाहा। उस ने आज्ञा दिई कि अब जितने लड़के जन्में वे सब नील नदी में डाले जावें। लड़कियों के लिये उस ने यह निर्दय आज्ञा न दिई क्योंकि वह जानता था कि जवान होने पर वे लड़ाई न कर सकेंगी। ज्योंही राजा सुनता था कि कोई लड़का जन्मा त्योंही अपने सेवकों को भेजता था कि उसे लेकर झटपट नदी में फेंक दें॥

उसी समय इस्रायेलियों में से एक अति धर्म्मी स्त्री के पुत्र हुआ। वह स्त्री जानती थी कि परमेश्वर मेरे लड़के की रक्षा कर सकता है इस लिये उस ने परमेश्वर से प्रार्थना किई कि वह लड़के को बचावे और उसे ऐसे छिपा रक्खा कि फिरऊन के दासों ने उसे न पाया। मैं नहीं बता सकती हूं कि उस ने बच्चे को कहां रक्खा था परन्तु ईश्वर ने किसी रक्षा के स्थान में उसे छिपाने की शिक्षा दिई होगी॥

जब लड़का तीन मास का हुआ तब उस की मा उसे और न छिपा सकी क्योंकि वह चिल्ला २ कर रोता था इस हेतु लड़के को बचाने के लिये उस ने दूसरा उपाय किया। मिसर देश की बड़ी नदी के आसपास लम्बी और मोटी २ घासों के समान बड़े २ मोथे और नरकट उत्पन्न होते हैं। उस स्त्री ने बहुत से नरकट लेकर एक टोकरा बनाया और उस के भीतर बाहर राल लगाया कि उस में पानी न जाने पावे। फिर उस ने अपने पुत्र को उस में रखकर टोकरा हाथ में उठा लिया परन्तु किसी ने न जाना कि उस में क्या है। स्त्री नदी के तीर गई और टोकरे को लड़के समेत मोथे के बीच रख दिया। उस को निश्चय था कि परमेश्वर बालक की रक्षा करेगा और इस भरोसे पर उस ने उसे ईश्वर के हाथ सौंपा। उस स्त्री की दस बरस की एक बेटी

भी थी। वह खड़ी होकर दूर से देखती रही कि प्रिय भाई की क्या दशा होती है॥
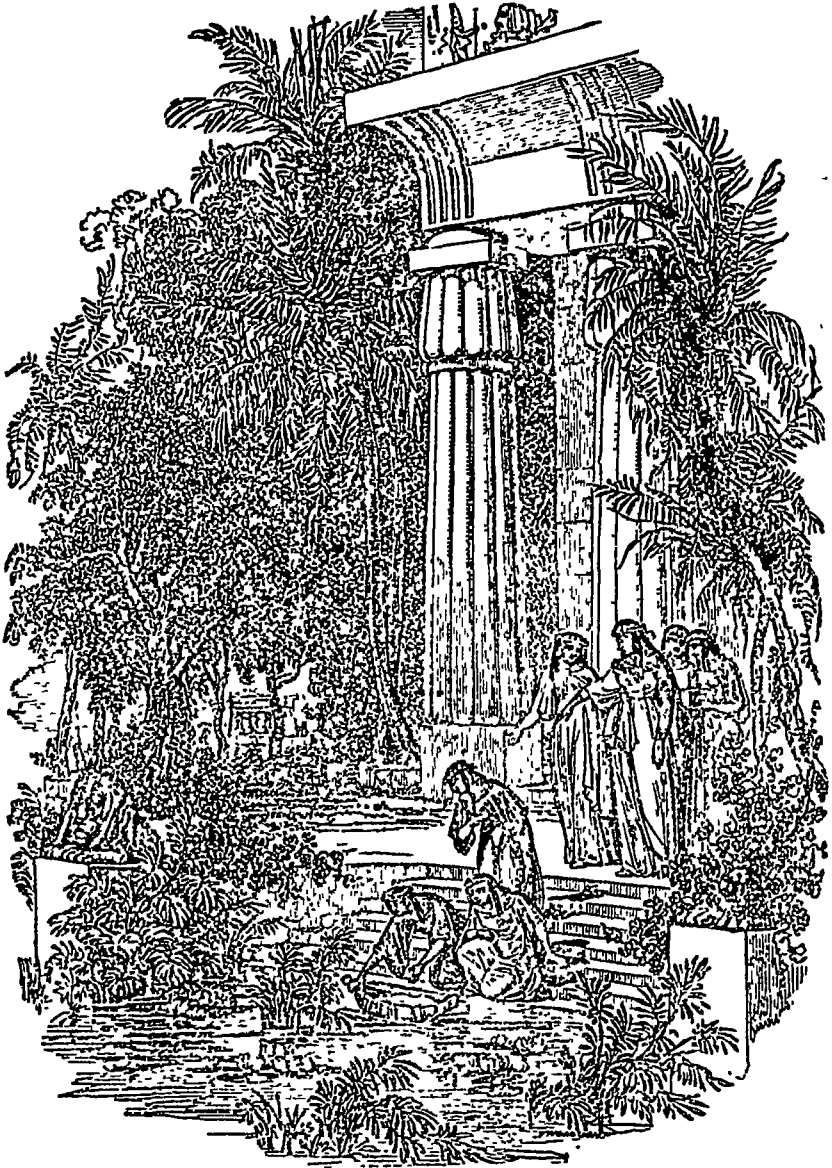
इतने में उस लड़की को तीर पर कई एक स्त्रियां आती हुईं देख पड़ीं। उन में से एक तो राजा फिरऊन की बेटी थी पर और सब उस की दासियां थीं। राजकुमारी नहाने को आई

थी क्योंकि मिसर बड़ा गरम देश है और वहां के लोग प्रायः नदी में स्नान किया करते हैं । फिरऊन की बेटी ने नरकटों की ओर दृष्टि फेरी और टोकरा देखकर अचम्भित हुई इस लिये अपनी एक सहेली से कहा कि जाकर देखो वह कौन वस्तु है। वह जाकर टोकरा उठा लाई और जब राजकुमारी ने उसे खोला तब उस में एक अति उत्तम और सुन्दर बालक देख पड़ा । लड़का रोता था । हाय बेचारा बच्चा जो मा की गोद में रहा करता था अब अकेला पड़ा है कोई उस को खिलाने पिलाने के लिये निकट नहीं जाता । यह देखकर फिरऊन की बेटी ने उस पर दया किई और समझा कि वह किसी इस्रायेल का लड़का है क्योंकि उस ने सुना था कि सब इस्रायेली बालकों को नदी में डुबाने की आज्ञा राजा ने दिई है । राजकुमारी ने उस सुन्दर लड़के को नदी में फेंकना नहीं परन्तु पालकर अपना लड़का बनाना चाहा । उसी समय बालक की बहिन निकट आई और अपने भाई पर राजकुमारी की दया देखकर बोली कि यदि आप इस लड़के को दूध पिलाने के लिये कोई दाई चाहती हों तो मैं एक को बुला सकती हूं । फिरऊन की बेटी ने कहा हां एक दाई बुला दो । वह लड़की अपनी माता को बुला लाई । राजकुमारी ने उस से कहा कि तू इस बच्चे को दूध पिलाकर मेरे लिये पाल तुझे मजूरी मिलेगी । माता अपने बच्चे के पालने का काम पाकर अति आनन्दित हुई । देखो परमेश्वर ने उस की प्रार्थना सुनकर लड़के को जल में डुबाये जाने से बचाया ॥

माता अपने लड़के को पालने लगी और जब कुछ सयाना हुआ तब उसे ईश्वर की बात सिखाने लगी पर लड़के को वह सदा अपने पास न रख सकी क्योंकि थोड़ा बड़ा होने पर फिरऊन की बेटी ने उसे अपना सन्तान मानकर बुला भेजा और उस का नाम मूसा रक्खा इस लिये कि उस ने उसे पानी से खींच लिया था । मूसा का अर्थ खींच लेना है ॥

राजकुमारी उत्तम भवन में रहती थी और कामकाज करने के लिये उस के पास अनेक सेवक थे । वह मूसा को सुन्दर २ कपड़े पहिनाती और अच्छी २ वस्तु खिलाती थी और उस की

सेवा करने को बहुत से दास भी रक्खे थे। मूसा को कोई कठिन काम नहीं करना पड़ता था तौभी वह आलसी न था फिरऊन की बेटी ने उसे पढ़ाने के निमित्त अनेक ज्ञानी मनुष्य ठहराये थे और मूसा बहुत मन लगाकर सीखता था। वह ज्योतिषविद्या और सब पशु पंछी और पेड़ों के विषयों में बहुत विद्या सीखकर बड़ा ज्ञानी हुआ। उस देश के पण्डित लोग उस को परमेश्वर के विषय में कुछ शिक्षा न दे सके क्योंकि वे आप मूर्त्तिपूजक थे परन्तु मूसा ईश्वर की बात जानता था इस लिये कि उस के माता पिता सत्य ईश्वर को पहिचानते थे और मूसा ने अपने बालकपने के समय उन के साथ रहकर परमेश्वर की शिक्षा पाई थी। यही शिक्षा सब बातों की शिक्षा से उत्तम है। मूसा सब मिसरी पण्डितों से बुद्धिमान था क्योंकि वह सत्य ईश्वर को जानता था। मूसा जैसा ज्ञानी था वैसाही साहसी भी था इस लिये मिसरी लोग उस की प्रशंसा और आदर किया करते थे पर वह आप उन के साथ प्रसन्न क्यों नहीं रहता था इस का वर्णन आगे किया जायगा॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

मैं परमेश्वर को पुकारूंगा और परमेश्वर मुझे बचा लेगा। (५५ गीत का १६ पद)॥

## २० बीसवें पाठ के प्रश्न।

याकूब का दूसरा नाम क्या था ?

याकूब के बंश को लोग क्या कहते हैं ?

जब वह फिरऊन जो यूसफ को प्यार करता था मर गया तब मिसर के सिंहासन पर कौन राजा बैठा ?

उस फिरऊन ने इस्रायेलियों को क्यों सताया ?

उस ने इस्रायेलियों के छोटे २ लड़कों के विषय में क्या आज्ञा दिई थी ?

उस समय एक स्त्री ने अपने लड़के को किस रीति बचाया ?

जब वह उसे और अधिक छिपा न सकी तब कहां रक्खा ?

दूर से खड़ी होकर कौन देखती थी कि बच्चे की क्या दशा होती है ?
किस ने वहां आकर बालक को उठाया और उस की दाई कौन हुई ?
राजकुमारी ने लड़के का क्या नाम रक्खा ?
उस नाम का अर्थ क्या है ?
मूसा किस का पुत्र कहलाया था ?
मूसा धनवान और महान हुआ था वा नहीं ?
किस विषय में मूसा मिसर देश के सब पण्डितों से अधिक ज्ञानी था ?
सब विद्याओं में कौन विद्या सब से उत्तम है ?

---

## इक्कीसवीं कथा।

### मूसा की जवानी का वृत्तान्त।

यात्रा का २ पर्व्व ११ से १५ पद तक।

पिछली कथा में वर्णन हो चुका है कि इस्रायेली लोगों को किस प्रकार ईंट बनाना पड़ा और ऐसे २ कठिन कामों को करने में वे कैसे दुःखी रहते थे। जब मूसा जवान हुआ तब उस के मन में यह चिन्ता उठी कि मैं तो राजकुमार के समान बड़ा हूं और उत्तम भवन में रहता हूं मुझे कुछ परिश्रम करना नहीं पड़ता परन्तु मेरे भाइयों अर्थात् इस्रायेल के सन्तानों को दासों के तुल्य कठिन काम करना होता है और दुष्ट लोग उन को नित्य मारते पीटते हैं। यह बड़े दुःख की बात है क्या मैं उन के लिये कुछ न कर सकूंगा। इस सोच में वह अत्यन्त व्याकुल हुआ॥

इस्रायेलियों का आदि पिता इब्राहीम था और ईश्वर ने इब्राहीम से कहा था कि सुन्दर कनान देश जो पहाड़ नदी फल फूल घास गाय भेड़ दूध और मधु से भरा है मैं तेरे वंश को दूंगा। मूसा ने यह सुना था और उस की माता ने उस से

यह भी कहा होगा कि बचपन में जल में डूबने से वह किस रीति बचा था। मूसा ने बिश्वास किया कि ईश्वर मेरे ही द्वारा इस्रायेल के सन्तानों को कनान देश में ले जावेगा। मूसा का कोमल हृदय था इस लिये उस ने बिचारे दुःखी इस्रायेलियों की रक्षा करनी और उन्हें मिसर देश की दासता से और वहां के दुष्ट लोगों के हाथ से बचाना बहुत चाहा॥

मूसा राजमन्दिर से निकलकर जिस स्थान में इस्रायेली लोग दुःख से परिश्रम करते थे वहां गया क्योंकि उस की इच्छा थी कि वह आप जाकर देखे कि ईश्वर ने इब्राहीम के साथ जो प्रतिज्ञा किई थी सो उन्हें याद है और कनान देश में वे जाना चाहते हैं वा नहीं। जब मूसा उस स्थान पर आ पहुंचा और उन का कष्ट देखा तब कितना शोकित हुआ सो नहीं कहा जा सकता। गरमी के दिनों में भोर से लेकर रात तक वे काम करते थे। देखो वे मिट्टी खोदकर ईंट बनाते थे और उन को एकट्ठे कर घाम में सुखाते और फिरऊन के निमित्त बड़े २ घर और ऊंची २ भीत उठाते थे। यह कैसा भारी काम है। उन्हें बहुत ईंट बनाना पड़ता था और जब थकते तब फिरऊन के निर्दय सेवक लोग उन को बहुत मारते थे। वे चाहे जितना रोवें और स्वास भरें पर उन से काम लिया जाता था क्योंकि प्रतिदिन फिरऊन के सेवक उन के लिये काम ठहराकर कह देते थे कि आज तुम को इतनी ईंट बनाना होगा और यदि इस्रायेली लोग उसे पूरा नहीं कर सकते थे तो बहुत मारे जाते थे॥

हाय दास होना बड़ा कठिन है। तुम ईश्वर का धन्यवाद करो इस लिये कि उस ने तुम्हें स्वाधीन बनाया और यह चौपाई सीख लो॥

चौपाई।

दास मझार जनम यदि होता . घाम मांहि श्रम करनो पड़ता॥
सहा न जात मोसों दुख सोई . चहत्यों मरन अमान्त ज्यों होई॥
धन्यवाद मैं द्यों प्रभु तोही . बड़ भागी कीनो तू मोही॥
तू स्वाधीन कियो मोहि जाते . करिहों भजन तिहारो ताते॥

बिचारे इस्रायेलियों के साथ राजा का ऐसा अन्याय व्यवहार देखकर मूसा अति दुःखित हुआ। एक दिन वह बाहर गया और क्या देखता है कि राजा का एक सेवक किसी इस्रायेल को मार रहा है। मूसा से यह नहीं सहा गया इस लिये उस ने इधर उधर देखा कि कोई है तो नहीं और उस निर्दय मनुष्य को मार डाला और एक गढ़ा खोदकर उसे गाड़ दिया॥

हे प्रिय पढ़नेहारो क्या तुम समझते हो कि उस मनुष्य को मार डालना बुरा काम था। मनुष्यों की हत्या करना तो महा पाप है क्योंकि ईश्वर ने आज्ञा किई है कि नरहत्या मत कर परन्तु जिस की हत्या करने की अनुमति परमेश्वर ने दिई है उस को मार डालने में पाप नहीं होता। उस अपराधी को घात करने के लिये ईश्वर ने मूसा को भेजा था कि उसी काम से वह इस्रायेलियों को जनावे कि उन्हें मुक्ति करने को ईश्वर ने मूसा को ठहराया था। ईश्वर ने मूसा को उस दुष्ट मनुष्य को मार डालने की अनुमति दिई थी इस कारण मूसा को इस से कुछ पाप न हुआ॥

दूसरे दिन मूसा फिर बाहर गया और दो इस्रायेलियों को लड़ते देखा और कहा कि तुम दोनों तो भाई हो एक दूसरे को क्यों सताते हो। इस पर जो अपने पड़ोसी से अन्याय करता था उस ने मूसा को हटाकर कहा कि किस ने तुझे हमों पर अध्यक्ष और न्यायी ठहराया है क्या जिस रीति तू ने कल्ह एक मिसरी को मार डाला मुझे भी मार डालने चाहता है॥

फिरऊन के कान में यह बात शीघ्र ही पहुंची और उस ने अति क्रोधित होकर चाहा कि मूसा को किसी रीति पकड़कर मार डाले। तब मूसा को एक ऐसे दूर देश में भागना पड़ा जहां से राजा उसे न पकड़वा सका। मैं आगे लिखूंगी कि उस देश में मूसा कैसे रहा और उस की क्या दशा हुई। ईश्वर मूसा पर प्रेम रखता था इस लिये वह जहां जाता ईश्वर उस की रक्षा करता था। यदि मूसा की इच्छा होती तो वह सदा उस बड़े घर में रहकर उत्तम २ गाड़ियों पर चढ़ता और अनेक दास दासियां रखता पर वह ईश्वर के भक्तों को यहां लों

चाहता था कि उन के निमित्त सब छोड़ दिया। इस में मूसा ने प्रभु यीशु के समान काम किया। प्रभु यीशु अपना स्वर्गीय सिंहासन छोड़कर हम लोगों को नरक से बचाने के लिये पृथिवी पर आया॥

फिरऊन की बेटी का पुत्र कहलाने से मूसा ने परमेश्वर को सन्तुष्ट करना अधिक चाहा। उस को निश्चय था कि परमेश्वर इस्रायेलियों पर प्रेम रखता है और किसी समय वह मेरी ऐसी सहायता करेगा कि मैं उन को यहां से उद्धार करके कनान में ले जाऊंगा॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

मैं ने दुष्टता के तम्बुओं में रहना नहीं परन्तु ईश्वर के घर की डेवढ़ी पर खड़ा रहना चुन लिया है। (८४ गीत का १० पद)॥

## २१ इक्कीसवें पाठ के प्रश्न।

मूसा जवान होने पर क्या सोचने लगा?
उस ने इस्रायेलियों को किस देश में ले जाने की इच्छा किई?
जब मूसा बाहर निकला तब इस्रायेलियों को क्या करते देखा?
उन के कामों को देखने के लिये फिरऊन ने किन मनुष्यों को ठहराया था?
उन निर्दय मनुष्यों में से मूसा ने एक को क्या किया?
उस के मार डालने में मूसा को पाप हुआ वा नहीं?
दूसरे दिन बाहर निकलकर मूसा ने दो इस्रायेलियों को क्या करते देखा और उन से किस प्रकार बातचीत किई?
मूसा दूर देश में क्यों भाग गया?
यदि मूसा की इच्छा होती तो वह किस अवस्था में रह सकता था?
उस ने उस उत्तम अवस्था में किस बात को अधिक अच्छा समझा?
हमें शैतान के हाथ से बचाने के लिये किस ने अपना स्वर्गीय सिंहासन छोड़ा?

## बाईसवीं कथा।

### आग से जलती हुई झाड़ी की कथा।

यात्रा का २ पर्व्व १६ से २५ पद। ३ और ४ पर्व्व।

सचमुच तो इस्रायेलियों को वैसी दुर्दशा में छोड़कर भाग जाने में मूसा को बड़ा शोक हुआ पर क्या करे और कोई उपाय नहीं था जिस से वह बचे। जाते समय उस ने अपने साथ दास घोड़ा गदहा आदि कुछ न लिया पर ईश्वर उस के साथ था। यद्यपि मूसा ईश्वर को नहीं देखता था तथापि वह जानता था कि परमेश्वर उस के संग है इस कारण उस को शांति होती थी॥

बहुत दिन तक चलने के पीछे मूसा मिदियान देश में पहुंचा और एक कूआ देखा। उस के आसपास बहुत सी घास थीं और उस पर अनेक भेड़ चरती थीं। मूसा अधिक चलने के कारण थका था और कूए के पास बैठ गया। जैसे यीशु को सिर रखने के लिये कुछ स्थान नहीं था वैसे मूसा के मित्र घर अथवा बिछौना कुछ नहीं था परन्तु ईश्वर उस की रखवाली करता था। थोड़ी देर में सात लड़कियां कूए के पास आईं वे सातों बहिन अपने पिता की भेड़ों की रखवाली करती थीं और वहां भेड़ों को पानी पिलाने के लिये आई थीं। उन्हों ने डोल कूए में ढीलकर पानी निकाला और उसे चरनी में डालकर भेड़ों को पीने के निमित्त दिया। इतने में कई एक गड़ेरिये भी वहां आये और उन लड़कियों का निकाला हुआ पानी अपने झुंडों को पिलाने के निमित्त उन की भेड़ों को चरनियों से हांकने लगे॥

देखो उन लड़कियों ने आप चरनियों को पानी से भरा था इस लिये उन की भेड़ों को हांकना बड़ा अन्याय था परन्तु गड़ेरिये प्रायः इस प्रकार किया करते थे क्योंकि वे लड़कियों से अधिक बलवान थे। निर्बल लड़कियों के साथ गड़ेरियों का अन्याय देखकर मूसा नहीं सह सका। वह आप अति बलवान था और खड़ा होकर गड़ेरियों को रोका और लड़कियों की सहायता किई कि वे जल्दी से पानी निकालकर अपनी भेड़ों

को पिलावें। बिचारी लड़कियों ने मूसा को अत्यन्त दयावान समझा क्योंकि अनजान होकर भी उस ने उन की सहायता किई॥

जब लड़कियां अपने घर पहुंचीं तब उन के पिता ने पूछा कि आज इतनी जल्दी क्योंकर लौट आई हो। उन्हों ने सब वृत्तान्त कह दिया। तब उन का पिता बोला कि वह मनुष्य कहां है। उसे बुलाओ कि वह हमारे साथ रोटी खावे। यह सुनकर लड़कियों ने मूसा को अपने घर में बुलाया। ईश्वर ही ने उस मनुष्य के हृदय में मूसा पर कृपा उत्पन्न किई थी। लड़कियों के पिता ने मूसा से कहा कि तुम मेरे यहां रहो और मूसा प्रसन्न होकर रहा और उस के झुंडों की रखवाली करने लगा। कुछ दिन पीछे मूसा ने उस की सात बेटियों में से एक के साथ विवाह किया और वह पुरुष मूसा का ससुर हुआ॥

मूसा एक समय उत्तम राजकुमार था और अच्छे २ घोड़ों और गाड़ियों पर चढ़ता था परन्तु अब पर्ब्बतों पर और तराइयों में उसे भेड़ चराना पड़ा॥

एक विषय के सोच में मूसा सदा रहता था अर्थात् इस्रायेल के सन्तान बड़ा परिश्रम करते और कष्ट भोगते हैं और इस से मूसा के मन में बड़ा क्लेश होता था क्योंकि वह उन को बहुत चाहता था। निदान वह फिरऊन मर गया परन्तु उसी के समान दुष्ट दूसरा एक फिरऊन राजा हुआ और वह भी इस्रायेलियों को बहुत सताने लगा। इस्रायेलियों ने रो रोकर परमेश्वर से प्रार्थना किई कि वह उन्हें दुःख से बचावे और परमेश्वर ने उन की सुनी और अपनी प्रतिज्ञा को जो इब्राहीम के साथ किया था स्मरण करके इस्रायेलियों का उद्धार करना मन में ठहराया॥

ईश्वर ने उन की मुक्ति के लिये जो किया सो अब मैं कहती हूं। एक दिन मूसा अकेला किसी पर्ब्बत पर अपने ससुर की भेड़ों को चराने गया और वहां बैठा २ क्या देखता है कि एक झाड़ी आग से जलती है। वह देखता रहा और झाड़ी जलती रही पर उस का कोई अंश नष्ट न हुआ। इस से अति अचम्भित

होकर मूसा ने कहा कि मैं निकट जाकर देखूंगा कि झाड़ी क्यों नहीं जल जाती। उस ने जाते २ झाड़ी के बीच में से एक शब्द सुना। वह परमेश्वर का शब्द था और उस ने हे मूसा हे मूसा कहकर पुकारा। मूसा बोला कि मैं यहां हूं। ईश्वर ने कहा कि यहां बहुत निकट मत आ क्योंकि मैं यहां हूं। मैं ने सुना है कि इस्रायेल के सन्तान अपने दुःख के कारण चिल्ला २ रोते हैं और मुझे स्मरण है मैं ने इब्राहीम से कहा था कि कनान देश का अधिकार मैं उस के वंश को दूंगा। अब मैं उन को कनान में ले जाऊंगा हे मूसा तू फिरऊन के पास जाकर कह कि वह इस्रायेलियों को मिसर से निकाल देवे॥

यह मूसा के लिये बड़ा कठिन था परन्तु परमेश्वर ने कहा कि मैं तेरे साथ रहूंगा और तेरी सहायता करूंगा। फिर मूसा ने कहा क्या जाने वे मिसर से निकल आना न चाहें और मेरी बात पर विश्वास न करें तो मैं क्या करूंगा। ईश्वर ने उत्तर दिया कि मैं तुझे अनेक आश्चर्य्यकर्म्म करना सिखाऊंगा जिन से उन को विश्वास हो। फिर ईश्वर ने पूछा कि मूसा तेरे हाथ में यह क्या है। मूसा के हाथ में एक छड़ी थी जिस की सहायता से वह पहाड़ पर चढ़ता था और जब कोई भेड़ गढ़े में गिरती तो उस से निकाल लेता था। मूसा ने ईश्वर से कहा कि मेरे हाथ में छड़ी है। परमेश्वर बोला कि उस छड़ी को भूमि पर फेंक दे। मूसा ने फेंक दिया और वह सांप बन गई। मूसा सांप से डरा और भागने लगा। तब ईश्वर ने कहा कि पूंछ से पकड़कर उसे उठा ले। मूसा ने उसे पकड़ा और वह फिर छड़ी हो गया। ईश्वर ने मूसा से कहा कि जब तू मिसर में जायगा तब इस्रायेलियों के साम्ने यह आश्चर्य्य काम करना जिस में वे जानें कि मैं ने तुझे भेजा है। जो इस पर वे तेरी प्रतीति न करें तो और एक आश्चर्य्य काम उन को दिखलाना तू अपना हाथ छाती पर रख। मूसा ने रक्खा और फिर उठाकर देखा कि सब हाथ में कोढ़ है अर्थात वह उज्जर २ छिटकियों से भरा है। यह देखकर मूसा बहुत घबराया परन्तु ईश्वर ने कहा कि फिर अपना हाथ छाती पर रख। मूसा ने वैसा किया और फिर

निकालकर देखा कि पहिले के समान अच्छा है। परमेश्वर ने कहा कि यदि इस्रायेली लोग न बिश्वास करें कि मैं ने तुझे भेजा है तो यह दूसरा आश्चर्य्य काम भी उन को दिखाना। मूसा ने कहा कि मैं तो बहुत अच्छा बोलनेहारा नहीं हूं और क्या कहना चाहिये सो भी मैं नहीं जानता हूं। परमेश्वर बोला कि तेरा भाई हारोन तेरे साथ जायगा और तेरे लिये बोलेगा॥

हारोन की चर्चा अब तक तुम ने नहीं सुनी है। वह मूसा का जेठा भाई था और बड़ा बोलनेहारा और धर्म्मी था और ईश्वर को प्रेम करता था॥

तब अपने ससुर के पास आकर मूसा ने कहा कि मुझे मिसर में जाना पड़ेगा और वह अपनी पत्नी को और दो बेटों को गदहे पर बैठाकर चल निकला। मिसर के निकट पहुंचते २ उस ने हारोन को देखा। हारोन मूसा को देखकर अति आनन्दित हुआ और उसे चूमा दिया। तब वे दोनों एक साथ होकर मिसर देश में गये॥

वहां जाकर उन्हों ने देखा कि इस्रायेल के सन्तान अपने महाकष्ट के कारण रोते और बिलाप करते हैं। हारोन ने उन से कहा कि हमें परमेश्वर ने फिरऊन के पास यह कहने को भेजा है कि वह तुम्हें कनान देश में जाने देवे। यह कहकर मूसा और हारोन ने उन के साम्ने ईश्वर के बताये उन दोनों आश्चर्य्य कामों को किया। उन की बात पर इस्रायेलियों ने बिश्वास करके कनान में जाने की इच्छा किई और परमेश्वर का धन्य माना इस लिये कि उस ने उन की प्रार्थना सुनकर उन की इच्छा पूरी किई॥

हे प्यारे बालको मैं ने तुम से बार २ कहा है कि ईश्वर मनुष्यों की प्रार्थना को सुनता है इस लिये मैं भरोसा करती हूं कि अपने दुःख के समय तुम उस से प्रार्थना किया करो॥

इस्रायेली लोगों ने मूसा और हारोन से कहा कि हम जायेंगे और उन्हों ने भूमि पर झुककर ईश्वर को प्रणाम किया परन्तु जब तक फिरऊन की अनुमति न पाई तब तक मूसा उन को नहीं ले जा सका॥

## धर्म्मपुस्तक का पद ।

इब्राहीम और उस के बंश पर अपनी दया स्मरण करने के कारण ईश्वर ने अपने सेवक इस्रायेल का उपकार किया है। (लूक का १ पर्ब्ब ५५ पद) ॥

## २२ बाईसवें पाठ के प्रश्न ।

मूसा मिसर से भागकर किस देश में गया ?
उस ने सात लड़कियों पर क्या अनुग्रह किया ?
लड़कियों के पिता ने मूसा के साथ कैसा व्यवहार किया ?
मूसा मिदियान देश में जाकर क्या काम करने लगा ?
पहाड़ पर भेड़ चराते २ मूसा ने क्या आश्चर्य्य दर्शन पाया ?
ईश्वर ने मूसा को किस स्थान में जाने कहा ?
परमेश्वर ने इस्रायेलियों को कनान में ले जाना क्यों चाहा ?
ईश्वर ने मूसा को कौन दो आश्चर्य्य कर्म्म करना सिखलाया ?
उस ने क्यों मूसा को आश्चर्य्य काम करने की शक्ति दिई ?
जब मूसा ने कहा कि मैं अच्छा बोलनेहारा नहीं हूं तो ईश्वर ने क्या कहा ?
मिसर देश में जाकर मूसा और हारोन ने इस्रायेलियों से क्या कहा ?
क्या इस्रायेलियों ने बिश्वास किया कि ईश्वर ने मूसा को दर्शन दिया ?
उन्हों ने कनान में जाना चाहा वा नहीं ?

---

## तेईसवीं कथा ।

### पहिली छः मरियों का वर्णन ।

यात्रा का ५, ६, ७, ८, पर्व्व और ९ पर्व्व के १ से १२ पद तक ।

दूसरे दिन मूसा और हारोन कई एक इस्रायेलियों को साथ लेकर फिरऊन के पास गये। फिरऊन अति अहंकारी और दुष्ट प्रतिमापूजक था। हारोन ने फिरऊन से कहा कि

परमेश्वर तुम से यों कहता है कि इस्रायेलियों को जाने दो। फिरऊन ने उन को नहीं जाने दिया और अहंकार से बोला कि परमेश्वर कौन है कि मैं उस की आज्ञा मानूं न मैं परमेश्वर को जानता और न इस्रायेलियों को जाने दूंगा॥

इस के पीछे फिरऊन इस्रायेलियों के साथ और भी अधिक निर्दयता से व्यवहार करने लगा और उस ने अपने सेवकों को आज्ञा दिई कि इस्रायेलियों से और अधिक काम लो। इस से इस्रायेलियों का दुःख बहुत बढ़ गया और वे अधिक विलाप करने लगे। जब मूसा और हारोन फिरऊन के पास लौटे तब उन्हों ने कितने इस्रायेली लोगों को उन की बाट जोहते देखा। इस्रायेलियों ने कहा कि तुम ने तो हमारे जाने की बात फिर-ऊन से कहकर हमारी और भी बुराई किई क्योंकि उस ने हमारे कामों को और भी अधिक बढ़ाने और कठिन करने की आज्ञा दिई है॥

मूसा इस्रायेलियों की भलाई करने का यत्न करता था इस लिये उस्से ऐसा कहना अकृतज्ञता का काम था पर मूसा का अत्यन्त नम्र और कोमल स्वभाव होने के कारण उस ने उन को क्रोध से नहीं उत्तर दिया बरन जाकर परमेश्वर से प्रार्थना किई और पूछा कि अब मैं क्या करूं। परमेश्वर बोला कि तू राजा फिरऊन को वह आश्चर्य्य काम दिखला। मूसा और हारोन ईश्वर के आज्ञानुसार फिर राजा के पास गये। मूसा ने हारोन से कहा था कि यह छड़ी लेकर भूमि पर फेंकना और फिरऊन के साम्ने हारोन ने वैसा किया और छड़ी जीता सांप बन गई। फिर हारोन ने उसे पूंछ पकड़कर उठाया और वह पहिले के समान छड़ी हो गया। यह अचम्भे का काम देख-कर फिरऊन ने इस्रायेलियों को जाने की अनुमति नहीं दिई। उस का हृदय बड़ा कठिन था इस लिये उस ने इस काम को तुच्छ माना॥

तब ईश्वर ने मूसा को दूसरा आश्चर्य्य काम करने की आज्ञा दिई। उस का वर्णन मैं अब करती हूं। मूसा और हारोन बड़े तड़के उठकर नदी तीर पर गये और फिरऊन की बाट जोहने

लगे क्योंकि वह उसी नदी में सर्बदा स्नान करने के जाया करता था । जब राजा वहां गया तब उन दोनों ने उस से कहा

कि तुम ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया अर्थात् इस्रायेल के सन्तानों को जाने न दिया तो अब देखो परमेश्वर क्या करता है । यह कहकर हारोन ने छड़ी को पानी पर उठाया और उसी क्षण नदी का सब जल लोहू हो गया ॥

जब फिरऊन ने उस महा आश्चर्य्य कर्म्म को देखा तब भी उस ने इस्रायेलियों को न जाने दिया । अपने अन्तःकरण की कठोरता के कारण उस ने ईश्वर की आज्ञा न मानी परन्तु मूसा और हारोन की ओर से मुंह फेरकर अपने घर लौट आया और ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करता रहा । उस समय सब नदियों और पोखरों का जल लोहू हो गया और जितना जल

सुराहियों घड़ों कटोरों और भांति २ के पात्रों में था सब लोहू हो गया। नदी की मछलियां मर गईं और नदी बसाने लगी। सात दिन तक पानी लोहू हुआ रहा और मिसर के रहनेवालों ने पानी न पाया इस लिये उन लोगों ने कूए खोदे कि पानी मिले॥

इतने पर भी फिरऊन न डरा इस कारण परमेश्वर ने दूसरी मरी भेजी। हारोन ने मूसा की छड़ी उठाई और नदियों और पोखरों में से सहस्रों मेंडक निकले और देश में सब ठौर फैल गये यहां लों कि मार्गों घरों बिछौनों और खान पान की सब वस्तुओं में भी पैठ गये। राजा फिरऊन के भी घर बिछौने और सब कुछ मेंडकों से भर गये। तब व्याकुल होकर फिरऊन ने मूसा और हारोन को बुलाया और कहा परमेश्वर से बिन्ती करो कि मेंडकों को दूर करे मैं इस्रायेलियों को जाने दूंगा। मूसा ने जाकर ईश्वर से प्रार्थना किई और परमेश्वर ने मेंडकों को मार डाला। मिसर के लोगों ने मरे हुए मेंडकों को एकट्ठे कर ढेर लगा दिया और उस से बड़ा दुर्गन्ध निकलने लगा॥

इस के पीछे फिरऊन ने फिर कहा कि मैं इस्रायेलियों को न जाने दूंगा इस निमित्त ईश्वर ने तीसरी मरी भेजी। हारोन ने धूल पर छड़ी उठाई और धूल छोटे २ कीड़े होकर मनुष्यों और पशुओं के शरीरों पर चढ़े॥

इस से भी फिरऊन का मन न फिरा इस कारण परमेश्वर ने चौथी मरी भेजी अर्थात् मक्खियों के बहुतेरे झुंड आकर उन के द्वारों और खिड़कियों में से घरों के भीतर पैठे और क्या भीतर क्या बाहर सब वस्तुओं को बिगाड़ डाला परन्तु इस्रायेल के सन्तानों के निकट मक्खियां न गईं। फिरऊन ने फिर कहा कि यदि ईश्वर हमें मक्खियों से बचावे तो मैं इस्रायेलियों को छोड़ूंगा। मूसा ने ईश्वर से बिन्ती किई और ईश्वर ने सब मक्खियों को दूर कर दिया यहां लों कि एक भी न रही पर फिरऊन ने उस बेर भी कहा कि मैं उन्हें न जाने दूंगा॥

इस पर पांचवीं मरी हुई अर्थात् मिसरियों के सब पशु रोगी हुए उन के घोड़े गदहे ऊंट गायें भेड़ और सब जन्तु रोगी होकर मर गये तौभी फिरऊन ने इस्रायेलियों को न छोड़ा॥

तब उन पर छठवीं मरी आई अर्थात् मिसरी लोगों के शरीर में फोड़े फफोले फूट फूटकर निकलने लगे यहां तक कि वे पीड़ा के मारे खड़े न हो सके तौभी फिरऊन ने परमेश्वर की आज्ञा न मानी क्योंकि उस का हृदय दिन पर दिन अधिक कठोर होता जाता था ॥

अब क्रम से ऊपर कही हुई छः मरियों को मैं लिखती हूं ॥

१ जल लोहू बन गया ।
२ मेंडकों का उत्पन्न होना ।
३ धूल से छोटे २ कीड़ों का बनना ।
४ मक्खियों के झुंडों का आना ।
५ पशुओं का मरण ।
६ फोड़ों फफोलों का निकलना ।

इन छः मरियों की बात तुम याद रखो पीछे मैं और २ मरियों का वर्णन करूंगी । ईश्वर को न मान्ने में और उस की बात न सुन्ने में फिरऊन ने बड़ा अनुचित किया और अपनी अज्ञानता और अभिमान प्रगट किया । जो लोग ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं उन को वह अवश्य दण्ड देता है ॥

हे प्यारे बालको परमेश्वर ने तुम्हें भी अनेक आज्ञा दिई हैं । देखो उस ने कहा है कि झूठ मत बोलो क्रोध मत करो निर्दय मत हो । मैं भरोसा करती हूं कि तुम इन आज्ञाओं को पालन करने में यत्न करते हो क्योंकि जो तुम फिरऊन के समान अपने मन में सोचो कि परमेश्वर कौन है कि मैं उस की आज्ञा मानूं तो वह तुम पर भी कोप करेगा ॥

## धर्म्मपुस्तक का पद ।

हे ईश्वर तुझ से हां तुझी से डरा चाहिये और जब तू क्रोध करे तब कौन तेरे आगे खड़ा रहेगा । (७६ गीत का ७ पद) ॥

## २३ तेईसवें पाठ के प्रश्न ।

जब मूसा और हारोन फिरऊन के पास जाकर बोले कि इस्रायेलियों को जाने दो तो उस ने क्या कहा ?

फिरऊन के साम्हने मूसा और हारोन ने किस आश्चर्य्य काम को किया जिस से उस को प्रतीति हो कि ईश्वर ने उन्हें भेजा था ?
मूसा और हारोन के द्वारा परमेश्वर ने जल को क्यों लोहू कर दिया ?
पहिले कौन २ छः मरियां हुई थीं ?
यह सब देखकर फिरऊन का मन फिरा वा नहीं ?
परमेश्वर ने तुम्हें कौन २ आज्ञा दिई हैं ?

## चौबीसवीं कथा ।

### शेष चार मरियों की कथा ।

यात्रा का ९ पर्व्व १३–३५ पद तक और १०–११–१२ पर्व्व ।

एक दिन बड़े भोर को मूसा और हारोन दोनों फिरऊन के पास जाकर बोले कि कल्ह परमेश्वर ऐसे बड़े २ पत्थर और बिनौली बरसावेगा कि जिन के समान मिसर में अब तक कभी नहीं देख पड़े । मनुष्य वा पशु जो बाहर रहेगा पत्थर से मारा जायगा इस लिये तुम लोग अपने २ घोड़े गायें और गदहे आदि पशुओं को घर के भीतर रखना नहीं तो वे नष्ट हो जायेंगे । जब मूसा और हारोन दोनों ने यह बात कही तो मिसर के बहुत से लोग सुनते थे उन में से कितनों ने प्रतीति किई और अपने २ सेवकों और पशुओं को घर में रखा पर और कितनों ने विश्वास न कर अपने पशुओं को सेवकों के साथ खेतही में रहने दिया ॥

दूसरे दिन मूसा ने स्वर्ग की ओर अपनी छड़ी उठाई और परमेश्वर ने मेघों को गरजाया और पत्थर और बिनौली बरसने और बिजली बड़े बेग से भूमि पर चलने लगीं । ऐसी भयानक आंधी कभी नहीं चली थी । मेघों के गरजने और पत्थरों के गिरने का बड़ा शब्द सुनकर लोग अवश्य कांपने लगे होंगे परन्तु जो २ लोग घर में थे उन की हानि न हुई । उस आंधी से बहुत

मनुष्य और पशु नष्ट हुए और अनेक पेड़ टूट गये और अनाज और सागपात भी बिजली से जल गये परन्तु जिस स्थान में इस्रायेल के सन्तान थे वहां न पत्थर पड़ा न आंधी बही। इस बड़ी आंधी के देखकर फिरऊन डरा और मूसा और हारोन के बुलाकर कहा कि मैं ने बड़ा पाप किया परमेश्वर से प्रार्थना करो कि अब मेघ और न गरजे और न पत्थर बरसे तो मैं तुम्हें जाने दूंगा। मूसा बोला मैं नगर से बाहर निकलते ही हाथ फैलाकर परमेश्वर से बिन्ती करूंगा कि गरजना और पत्थर बरसना बन्द हो जाय परन्तु मैं जानता हूं कि तुम तब भी ईश्वर का कहना न सुनोगे। मूसा मेघ के गरजने और पत्थर के बरसने से नहीं डरता था इस लिये वह उसी समय नगर के बाहर निकला और हाथ फैलाकर प्रार्थना किई। तब गरजना मेंह और पत्थर का बरसना सब बन्द हो गया। जब फिरऊन ने देखा कि आंधी थम गई तब फिर इस्रायेलियों के न छोड़ा। फिरऊन की प्रजा लोग बड़े दुष्ट थे क्योंकि उन्हों ने भी न चाहा कि राजा इस्रायेलियों के जाने देवे॥

मूसा और हारोन दोनों राजा फिरऊन के पास फिर जाकर बोले कि तुम्हारे देश में परमेश्वर टिड्डियों के भेजेगा॥

टिड्डी एक प्रकार का पतंग है जो लाखों लाख एक साथ उड़तीं और पेड़ों पर बैठकर सब फलों और पत्तों के खा जाती हैं॥

फिरऊन और उस के सेवक लोग टिड्डियों के आने का समाचार सुनकर अति क्रुद्ध हुए और कड़ी कड़ी बातें कहकर मूसा और हारोन के अपने यहां से निकाल दिया। मूसा ने जाकर अपनी छड़ी उठाई और ईश्वर ने ऐसी प्रबल वायु चलाई कि उस के द्वारा दूसरे दिन मिसर में अगणित टिड्डियां आईं और सारे आकाश में छा गईं। वे पेड़ों पर बैठीं और जो सागपात फल फूल आंधी से बचे थे सब के चाट लिया और घरों के भीतर भी घुसने लगीं। फिरऊन और उस के सेवक लोग डरे कि हमारे आहार के लिये कुछ न रहेगा इस कारण फिरऊन ने शीघ्र ही मूसा और हारोन के बुलाकर कहा कि मैं परमेश्वर का और तुम्हारा अपराधी हूं अब एक बेर और मेरा अपराध

क्षमा कर ईश्वर से बिन्ती करो कि वह टिड्डियों को दूर करे मैं इस्रायेल के सन्तानों को जाने दूंगा। मूसा ने परमेश्वर से बिन्ती किई और दूसरी वायु के द्वारा टिड्डियों को ऐसे उड़ा २ कर ईश्वर ने समुद्र में डाल दिया कि मिसर देश में एक भी टिड्डी न रही पर फिरऊन फिर बोला कि मैं इस्रायेलियों को न छोड़ूंगा। उस समय यदि कोई खेत में टहलने निकलता तो बड़ा शोकित हुआ होता क्योंकि न पेड़ों पर कुछ पत्ते न भूमि पर हरी २ घास थीं। जैसे गरमी में सब सूखा रहता है वैसे सब सूखा था। देखो फिरऊन के पास से देश पर कैसी बिपत्ति पड़ी॥

अब मूसा ने फिरऊन से कुछ न कहा पर जाकर अपनी छड़ी स्वर्ग की ओर उठाई और उसी क्षण सब देश में ऐसा गाढ़ा अन्धकार छा गया कि जैसा रात को भी न होता। थोड़ा भी उजेला न रहा केवल जहां इस्रायेली लोग रहते थे वहां उजेला था। अन्धकार होने के कारण मिसरी लोग बहुत डरे। उन में से कोई अपने काम में लगा था कोई खाता पीता था और कोई चलता फिरता था उसी समय ऐसे अचांचक अन्धकार आया कि वे सब अपना २ काम छोड़ जहां के तहां बैठ गये और रात दिन न उठे न कहीं जा आ सके। अब मिसरियों को अपने पाप के विषय में चिन्ता करने का अवसर मिला। तीन दिन तक गाढ़ा अन्धकार बना रहा फिर उजेला हुआ पर फिरऊन ने अपने पाप के लिये पश्चात्ताप न किया। उस का हृदय पहिले से और अधिक कठिन हो गया और उस ने मूसा से कहा कि जा २ दूर हो फिर मेरा मुंह न देखना यदि मेरे सान्ने आवेगा तो मारा जायगा। मूसा बोला कि तुम ने अच्छा कहा मैं फिर तुम्हारा मुंह न देखूंगा॥

फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि मैं मिसरियों पर एक मरी और भेजूंगा अर्थात् आज रात को मैं हर एक घर में पैठकर सब पहिलौठे पुत्रों को मार डालूंगा परन्तु इस्रायेलियों को मैं यही आज्ञा देता हूं कि हर एक मनुष्य एक निर्दोष मेम्ना मारकर अपने परिवार को साथ लेकर खावे और उस का लोहू द्वार के चौखट पर छिड़क देवे जिस में जब मैं मारने निकलूं तब जिस २

घर के द्वार पर लोहू देखूं उस २ घर के पहिलौठे को न मारूं। आज रात का भोजन यों करना चाहिये सब लोग अपनी २ कटि बांधे हुए अपनी २ जूतियां पांवों में पहिने हुए और अपना २ लठ हाथों में लिये हुए खड़े २ भोजन करें और चलने के लिये तैयार रहें। इस आज्ञा के अनुसार इस्रायेलियों ने मेम्नों को मारा और भूनकर हाथ में लठ लिये हुए खड़े २ खाया। उन्हों ने रोटी और कड़वी तरकारी के साथ मेम्नों का मांस खाया और अपने २ द्वारों पर लोहू छिड़कने को न भूले क्योंकि वे जानते थे कि केवल इसी के द्वारा हमारी रक्षा होवेगी॥

मिसरी लोग जैसे सर्वदा रात को सोने जाते थे वैसेही उस रात को भी सोने गये और आधी रात होने पर सब के घर का पहिलौठा पुत्र मर गया। यद्यपि किसी ने ईश्वर के दूत को आते न देखा तथापि वह आया और कोई अगरीवाला फाटक उस का पैठना न रोक सका केवल जिस घर पर लोहू देख पड़ा उस घर को वह छोड़ गया। हाय २ जब माता पिताओं ने देखा कि उन के पहिलौठे बेटे मरे हैं तब कैसा भयानक बिलाप किया। वे रोते २ घरों के बाहर निकले और किसी ने कहा कि मेरा प्रिय पुत्र मर गया और दूसरे ने कहा मेरा भी बेटा मरा है और तीसरा बोला हाय २ मेरा लड़का भी मर गया और इस प्रकार सब लोग यहां तक रोये पीटे और चिल्लाये कि वैसा रोना पीटना मिसर में पहिले कभी न सुन पड़ा था क्योंकि फिरऊन से लेकर दरिद्र तक सब के घर में मरे २ लड़के पड़े थे। रातही को फिरऊन ने मूसा और हारोन को बुलाया परन्तु अन्धकार के मारे उन्हों ने उस का मुंह नहीं देखा। फिरऊन ने कहा कि अब तुम इस्रायेलियों को उन की गायें भेड़ और सब सम्पत्ति समेत लेकर यहां से चले जाओ। मिसरियों ने इस्रायेलियों से बिन्ती किई कि जितना शीघ्र हो सके उतने शीघ्र तुम लोग निकल जाओ क्योंकि उन को डर हुआ कि ईश्वर सभों को नष्ट कर देगा॥

जाते समय इस्रायेलियों ने मिसर देश की स्त्रियों से कहा कि हमारे जाने के पहिले तुम कुछ सोना चांदी हमें दो। वे

बोलीं कि तुम को जो चाहिये सो लो पर जल्द चले जाओ। इस्रायेल के सन्तानों ने मिसर में बहुत काम किया था इस लिये मिसरियों को उन्हें धन देना उचित था और मिसरियों ने उन को धन और अनेक उत्तम २ वस्तु देकर बिदा किया॥

तब इस्रायेली लोग जल्दी २ निकल गये। उन्हों ने अपनी रोटी थैलियों में भरी और अपनी भेड़ गायें ऊंट गदहे आदि सब पशुओं को अपने आगे कर उसी रात को मिसर से चल दिये। वे इतने लोग थे कि कोई बालक उन को नहीं गिन सकता था। किसी बड़े नगर में जितने लोग रहते हैं उन से भी अधिक इस्रायेल के सन्तान थे। निदान वे दासों की अवस्था से मुक्त होकर मिसर के बाहर निकले। ईश्वर ने इब्राहीम से जो प्रतिज्ञा किई थी सो स्मरण कर उस के वंश को कनान देश की ओर ले चला॥

परमेश्वर ने मूसा से कहा कि इस्रायेली लोगों को कभी न भूलना चाहिये कि मैं ने उन पर कैसा महा अनुग्रह कर उन को मिसर से निकाला है। उन को चाहिये कि जैसे आज रात को मेम्ना मारकर भोजन किया वैसेही हर बरस इसी रात को करें। यह भोज निस्तारपर्ब्ब का भोज कहा जायगा॥

निस्तार शब्द का अर्थ बचाना है और वह पर्ब्ब निस्तार का पर्ब्ब कहलाता है क्योंकि जिस २ घर के द्वार पर ईश्वर ने लोहू देखा उन घरों के मनुष्यों को मृत्यु से बचाया और मिसर देश के दुःख से उद्धार किया॥

हर एक घराने में जो एक मेम्ना मारा गया था वह यीशु का दृष्टान्त था। देखो जैसे उस मेम्ने के लोहू से उस घराने का पहिलौठा पुत्र मरने से बच गया वैसेही यीशु के लोहू अर्थात् मृत्यु से सब बिश्वासी लोग नरक के दण्ड से बचते हैं। यीशु ने हम पर कैसे अचम्भे का अनुग्रह किया कि उस ने हमारे लिये अपना लोहू बहाया। चाहिये कि उस की बड़ी दया का वृत्तान्त हम कभी न भूलें॥

ईश्वर ने फिरऊन और सब मिसरियों पर जितनी मरियां भेजी थीं सो मैं नीचे लिखती हूं॥

१ जल लोहू बन गया।
२ मेंडकों का उत्पन्न होना।
३ धूल से कीड़ों का बनना।
४ मक्खियों के झुंडों का आना।
५ पशुओं की मृत्यु।
६ फोड़ों फफोलों का निकलना।
७ आंधी का आना और पत्थर का बरसना।
८ टिड्डियों का आना।
९ तीन दिन लों गाढ़े अन्धकार का रहना।
१० पहिलौठे पुत्रों का मरना।

देखो ये कैसी भयानक मरियां थीं परन्तु नरक में इन सभों के कष्ट से और भी अधिक कष्ट भोगना पड़ता है॥

हे प्यारे बच्चो मुझे आशा है कि तुम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते और उसे क्रोधित नहीं करते हो। तुम तो जानते हो कि ईश्वर वैसी भयानक मरियां हम पर इस लिये नहीं भेजता है कि यीशु हमारे निमित्त प्रार्थना करता है और ईश्वर बहुत धीरज रखता है क्योंकि वह चाहता है कि हम पाप से मन फेर लें॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

यदि वे लोग जब पृथिवी पर आज्ञा देनेहारे से मुंह फेरा तब नहीं बचे तो बहुत अधिक करके हम लोग जो स्वर्ग से बोलनेहारे से फिर जावें तो नहीं बचेंगे। (इब्रियों को १२ पर्ब्ब २५ पद)॥

## २४ चौबीसवें पाठ के प्रश्न।

जब भारी आंधी आई तब कोई २ मनुष्य किस रीति से बचे?
टिड्डी कौन पदार्थ है?
जिस समय मिसर में तीन दिन लों अन्धकार छा रहा था किस स्थान में उजियाला रहा?

जब फिरऊन ने चाहा कि मरी वहां से दूर हो तब किस ने ईश्वर से बिन्ती किई ?

पिछली मरी क्या थी ?

इस्रायेलियों ने किस लिये अपने २ द्वारों के चौखटों पर लोहू छिड़का ?

वे मिसर से क्योंकर निकले ?

परमेश्वर ने क्यों आज्ञा दिई कि इस्रायेली लोग हर बरस मेम्ना मारकर भोज करें ?

उस भोज का नाम क्या है ?

उसे निस्तारपर्ब्ब क्यों कहते हैं ?

निस्तारपर्ब्ब का मेम्ना किस प्रकार यीशु का दृष्टान्त था ?

बताओ कि दस मरियों के क्या २ नाम थे ?

ऐसा कौन स्थान है जहां दस मरियों के कष्ट से भी अधिक कष्ट भोगना पड़ता है ?

---

## पचीसवीं कथा ।

### इस्रायेलियों के समुद्र पार होने की कथा ।

यात्रा का १३ पर्ब्ब २१–२२ पद तक और १४–१५ पर्ब्ब के १–२२ पद तक।

इस्रायेली लोग कनान की ओर चले परन्तु उस मनोहर देश में पहुंचने के लिये उन को बहुत दूर तक चलना पड़ा। वे कनान का मार्ग नहीं जानते थे पर परमेश्वर ने उन्हें ठीक मार्ग बताया। वह काले मेघ में उन के आगे २ चला। जिस ओर वह काला मेघ जाता था इस्रायेल के सन्तान उस के पीछे हो लेते थे परन्तु अंधियारी रात को काला मेघ नहीं दिखाई देता इस लिये ईश्वर ने आज्ञा दिई कि वह मेघ रात को आग के तुल्य चमके। दिन के समय वह मेघ उन को घाम से बचाता था और रात को उजियाला देता था। जहां २ वह मेघ ठहरता था वहां २ मूसा लोगों को तम्बू तानने कहता था। जिस स्थान में बहुत से डेरे एकट्ठे खड़े किये जाते हैं उसे छावनी

कहते हैं। फिर ज्योंही वह मेघ आगे बढ़ता त्योंही सब लोग अपने २ तम्बू उठाते और ऊंटों और गदहों पर लादकर चलते थे॥

इस्रायेली लोग जब तक समुद्र के तीर नहीं पहुंचे तब तक बहुत जल्दी २ चलते थे। वहां जाकर मेघ ठहर गया इस लिये उन्हों ने समुद्र के आसपास तम्बू तानकर छावनी किई। उस समुद्र को लाल सागर कहते हैं। क्या जानें तुम समझोगे कि उस समुद्र का पानी लाल है परन्तु ऐसा समझना न चाहिये क्योंकि यद्यपि उस का नाम लाल सागर है तथापि उस का पानी साधारण पानी सा है। उस समुद्र में एक प्रकार का लाल भाग उत्पन्न होता है जिस के कारण जल थोड़ा लाल देख पड़ता है और लोग उसे लाल सागर कहते हैं॥

थोड़ी देर में इस्रायेलियों ने एक बड़ा शब्द सुना। वह घोड़ों और गाड़ियों के आने का शब्द था। उन्हों ने आंखें उठाईं और देखा कि फिरऊन बहुत से योद्धाओं को गाड़ियों और घोड़ों पर चढ़ाकर ले आ रहा है। इस्रायेलियों को जाने देने के पीछे फिरऊन पछताया और उन्हें पकड़ लाने के लिये उन के पीछे दौड़ा। इस्रायेली लोग बहुत डरे पर क्या करें उन के पास बड़ी २ नाव न थीं कि वे पार होवें और जिस स्थान में वे थे यदि वहां ठहरें तो राजा अपनी सेना के सहित आकर उन से लड़ाई करे और उन्हें पराजित कर पकड़ ले जावे क्योंकि इस्रायेलियों से मिसरी लोग लड़ाई में निपुण थे। इस्रायेली लोगों ने असमर्थ होने के कारण परमेश्वर से सहायता मांगी। यह तो भला काम था परन्तु उन्हों ने एक अनुचित काम भी किया अर्थात् वे क्रोध कर मूसा से बोले कि मिसर से तुम क्यों हमें निकाल लाये। निश्चय कर हम लोग यहां मारे जायेंगे यदि यहां आने के पलटे हम वहां मर जाते तो अच्छा होता॥

इस्रायेलियों के इस वचन से तो अकृतज्ञता प्रगट हुई पर मूसा ने अति नम्रता से उन्हें उत्तर दिया कि मत डरो परमेश्वर तुम्हारे लिये लड़ेगा और फिरऊन और उस के संगियों के मुंह तुम फिर कभी न देखोगे। यह कहकर मूसा ने ईश्वर से प्रार्थना किई क्योंकि वह जानता था कि ईश्वर इस्रायेलियों को बचावेगा।

ईश्वर ने मूसा से कहा कि अपनी छड़ी समुद्र पर उठा और मैं इस्रायेलियों के चलने के निमित्त एक सूखा मार्ग बनाऊंगा। मूसा ने समुद्र पर छड़ी उठाई और पानी दो भाग होकर एक भाग दहिनी ओर और एक भाग बाईं ओर भीत के समान खड़ा हो गया और उन के बीचोंबीच सूखा मार्ग निकल आया। उस मार्ग पर इस्रायेल के सन्तान अपने पशुओं को लेकर चले। जब वे समुद्र पार होने लगे तब संध्या थी और सारी रात उन्हों ने चलकर बिताई पर वह रात अंधेरी न थी क्योंकि वह मेघ रात को आग के तुल्य चमकता और इस्रायेलियों को उजेला
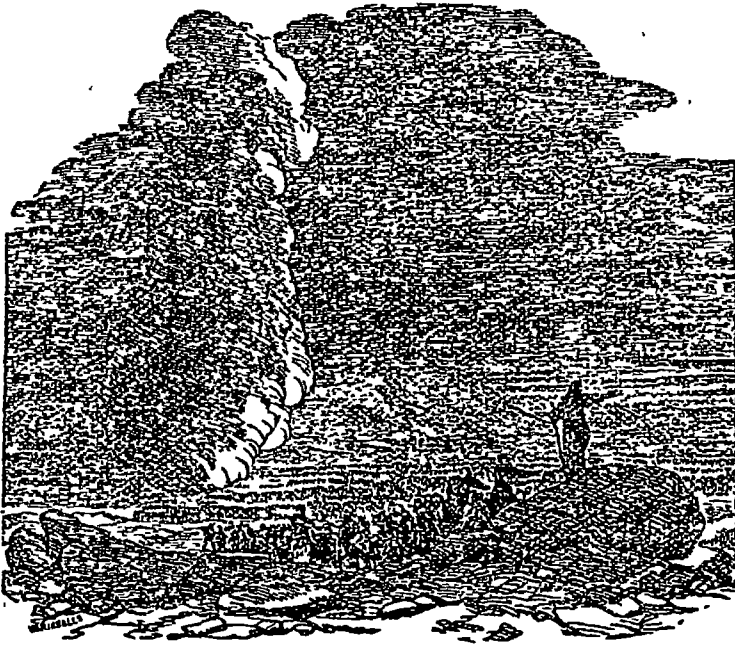
देता था। परमेश्वर फिरऊन की ओर उजेला करना नहीं चाहता था इस लिये मेघ को आगे से उठाकर इस्रायेलियों के पीछे कर दिया। तब वह फिरऊन और इस्रायेलियों के बीच में आ गया पर इस्रायेलियों की ओर वह मेघ उज्जल था किन्तु मिसरियों की ओर काला था। उस अन्धकार के मारे फिरऊन की सेना शीघ्र न जा सकी परन्तु इस्रायेल के सन्तान उस सूखे मार्ग पर जल्दी २ चलकर भोर होते २ समुद्र पार हो गये॥

अब सुनो कि फिरऊन और उस के संगी लोग समुद्र के उस पार पहुंचे वा नहीं। समुद्र के तट पर आकर उन्हों ने देखा कि समुद्र के बीचोंबीच एक सूखा मार्ग है और पानी दोनों ओर भीत के समान खड़ा है। तब वे उस मार्ग पर चले और जाते २ जब समुद्र के बीच में पहुंचे और यह आशा करने लगे कि थोड़ी देर में हम इस्रायेलियों को पकड़ लेते हैं तब परमेश्वर ने मेघ के भीतर से उन पर क्रोध की दृष्टि किई और फिरऊन और उस के सेवकों ने बड़ा भयानक शब्द सुना जिस के कारण वे अत्यन्त घबरा गये। यह ईश्वर ही ने उन्हें डराने के लिये किया था। अब मिसरियों ने जाना कि परमेश्वर इस्रायेलियों के कारण हम लोगों का नाश करेगा इस लिये उन्हों ने आपस में कहा कि आओ हम लोग लौट चलें पर फिरते समय ईश्वर ने उन की गाड़ियों के पहियों को निकाल डाला कि वे जल्दी न चल सकें। हाय २ अब तो पछताने का समय न रहा और न वे भाग सकते थे क्योंकि ईश्वर ने उन का नाश करना ठहराया था। जितना शीघ्र हो सका वे चले तौभी समुद्र के पार न जा सके॥

जब इस्रायेल के सन्तान सुख से समुद्र के पार जा चुके तब ईश्वर ने मूसा को आज्ञा दिई कि समुद्र पर फिर छड़ी उठा। छड़ी उठाते ही पानी की ऊंची २ भीतें गिर पड़ीं और सूखा मार्ग ढंप गया और फिरऊन और उस के दास लोग समुद्र में डूब मरे। इस प्रकार मिसर देश के राजा और उस की दुष्ट प्रजाओं का अन्त हुआ। भोर को जब इस्रायेली लोग उस पार खड़े हुए तब उन को गाड़ियों का शब्द न सुन पड़ा परन्तु उन्हों ने देखा कि कितने मिसरियों की लोथें तट पर पड़ी हैं। समुद्र की लहरें जो सदा ऊंची नीची हुआ करती हैं उन को उठाकर तीर पर बहा लाईं। यह देखकर इस्रायेलियों ने जाना कि वे निर्दय लोग उन्हें और कभी न सता सकेंगे क्योंकि ईश्वर ने उन की दुष्टता का दण्ड उन्हें दिया और अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार इब्राहीम के वंश का उद्धार किया॥

उस दिन इस्रायेलियों को अति आनन्द हुआ और उन्हों ने

परमेश्वर का धन्यवाद किया क्योंकि उस ने उन की रक्षा किई। उन्हों ने इकट्ठे होकर परमेश्वर की प्रशंसा का एक मनोहर गीत गाया जिस का यह आरंभ है मैं परमेश्वर का भजन करूंगा क्योंकि उस ने बड़ी महिमा से जीता उस ने असवारों के सहित घोड़ों को समुद्र में डुबो दिया। स्त्रियों ने भी मीठे राग से गीत गाया। मूसा की बहिन मिरयम जिस ने बचपन में नदी के तीर पर मूसा को अगोरा था अब ढोल बजा २ गीत गाने लगी और सब स्त्रियों ने भी वैसेही किया॥

इस्रायेलियों का गीत गाना और आनन्द करना यदि तुम देखते तो अति सन्तुष्ट होते। कुछ दिन पहिले उन को घाम में बैठकर बड़ा दुःखजनक काम करना पड़ता था और उस के कारण वे रोते और स्वास भरते थे पर अब वे दास की अवस्था से छूटकर एक उत्तम देश की ओर जाते थे कि वहां चैन और सुख से रहें॥

हे प्यारे बालको कनान देश से और एक देश अधिक उत्तम है मैं भरोसा करती हूं कि हम सब किसी दिन वहां जाकर बास करेंगे। जैसे इस्रायेलियों ने कनान में जाने की आशा से ईश्वर की प्रशंसा किई थी वैसे हम को भी करना चाहिये क्योंकि उस ने हमारे निमित्त उस देश से अत्यन्त उत्तम स्थान में जाने का उपाय किया है। जो तुम सदा उस से प्रार्थना किया करो तो वह तुम्हें वहां अवश्य पहुंचावेगा। तुम जानते हो कि शैतान तुम्हारे आत्मा को नरक में ले जाने के लिये यत्न करता है परन्तु परमेश्वर शैतान से अति शक्तिमान है इस लिये जैसे उस ने फिरऊन के हाथ से इस्रायेलियों को बचाया था वैसे ही शैतान के हाथ से तुम्हारी भी रक्षा कर सकता है॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

मेरा शरणस्थान और मेरा गढ़ ईश्वर ही है जिस पर मैं भरोसा रखूंगा क्योंकि वह मुझे व्याधा के जाल से और नाशक मरी से मुक्ति देगा। (९१ गीत का २—३ पद)॥

## २५ पचीसवें पाठ के प्रश्न।

किस ने इस्रायेलियों को कनान का ठीक मार्ग बताया?
जब इस्रायेली लोग मिसर से निकल आये थे तब उन्हें पकड़ने के लिये कौन उन के पीछे पड़े?
वे किस प्रकार लाल सागर के पार उतरे?
रात को चलने के लिये उन को उंजियाला कहां से मिला?
फिरऊन और उस के दास लोग मार्ग क्यों नहीं देख सके?
समुद्र के बीच तक जाकर मिसरी लोग क्यों डरे?
अन्त में फिरऊन की क्या दशा हुई?
जिस तीर पर इस्रायेली लोग उतरे थे वहां दूसरे दिन समुद्र की लहरें किस वस्तु को बहा ले गईं?
इस्रायेलियों ने किस रीति अपनी कृतज्ञता प्रगट किई?
कनान देश से अत्यन्त उत्तम कौन देश है?
उस देश में हम क्योंकर जा सकते हैं?
हमें स्वर्ग को जाने से रोकने का यत्न कौन करता है?
कौन शैतान के हाथ से हमें बचा सकता है?

---

## छब्बीसवीं कथा।

### मन्ना और चटान का वृत्तान्त।

यात्रा का १६ पर्ब्ब और १७ पर्ब्ब के १ से ७ पद तक।

उन निर्दय स्वामियों के हाथ से छुटकारा पाकर इस्रायेल के सन्तान बड़े आनन्दित हुए और कृपावान स्वामी अर्थात् मूसा के मिलने से उन को फिर वैसा दुःखजनक काम न करना पड़ा इस निमित्त उन को धार्म्मिक और सन्तुष्ट होना उचित था। वे समुद्र का तीर छोड़ एक बड़े जंगल में आये। उस जंगल में न कोई घर न मनुष्य था परन्तु सिंह और भालू आदि जन्तु गरजते और तड़पते हुए फिरते थे और विषधर सांप और बिच्छू रेंगते थे। वहां कोई नदी न थी पर ऊंचे २ पर्ब्बत और

गहिरे २ गढ़े देख पड़ते थे। वहां फलों के पेड़ों और अनाज के खेतों के न रहने से आहार की वस्तु नहीं मिलती थी। इस्रायेल के सन्तान वहां न बो सकते और न काट सकते थे क्योंकि वे चले जाते थे। मिसर देश छोड़ते समय उन्हों ने अपनी थैलियों में कुछ थोड़ा सा भोजन रख लिया था पर उसे कई एक दिनों में खा गये और वे इतने अधिक थे कि उन के खाने के लिये बहुत वस्तुओं का प्रयोजन था॥

उस समय इस्रायेलियों को ईश्वर से बिन्ती करना और यह जानना उचित था कि ईश्वर हम से प्रेम करता है और कभी न भूखों मरने देगा। अकृतज्ञ इस्रायेली लोगों ने यह तो न किया पर कुड़कुड़ाये और मूसा और हारोन के पास जाकर बोले कि जो हम मिसर में मर जाते तो भला होता। देखो वहां हम अपने जी भर मांस और रोटी पाते थे पर यहां अब भूख से मर जावेंगे तुम ने मार डालने ही के लिये हमें मिसर से निकाला है॥

ईश्वर और मूसा के विरुद्ध यह कहना इस्रायेलियों को बड़ा अनुचित था तौभी मूसा ने उन्हें कड़ा उत्तर न दिया। वह जानता था कि परमेश्वर ने उन की बुरी बातें सुनी हैं इस लिये वह कुछ न बोला। इस पर परमेश्वर ने मूसा को पुकारकर कहा कि मैं ने इस्रायेलियों का कुड़कुड़ाना सुना है और मैं उन्हें आहार दूंगा। वे तो आहार पाने के योग्य नहीं थे पर ईश्वर ने उन पर बड़ा अनुग्रह करके स्वर्ग से आहार बरसाया॥

दूसरे दिन भोर को अपने तम्बुओं के बाहर निकलकर इस्रायेली लोग क्या देखते हैं कि बहुत सी छोटी २ गोल और उज्जल वस्तु भूमि पर पड़ी हैं और उन्हों ने आपस में कहा कि यह क्या है। हम ने पहिले कभी ऐसी वस्तु नहीं देखी। मूसा ने उत्तर दिया कि यह वही रोटी है जिसे परमेश्वर ने तुम्हारे लिये स्वर्ग से बरसाया है। तुम इसे बटोरकर अपने तम्बुओं में ले जाओ। इस्रायेल के सन्तान थालियां और टोकरे लाये और अपने और अपने बालबच्चों के लिये भूमि पर से आहार बटोर लिया। वह उज्जल पदार्थ न तो कम था और न बहुत

था पर सब लोगों के लिये बस था। चीखने पर उन्हों ने जाना कि वह मधु सा मीठा है और उस का नाम मन्ना रक्खा। वे उसे उठाकर तम्बुओं में ले गये और उन की स्त्रियों ने उसे पीसकर फुलका बनाया। जब २ भूख लगती थी वे उसे खाते थे मन्ना को छोड़कर और कोई वस्तु उन के आहार के लिये न थी। वह अति उत्तम और सुस्वाद भोजन था और मनुष्यों की बात कौन कहे वह दूतों के खाने के योग्य था क्योंकि वह अन्न के समान भूमि से नहीं उत्पन्न होता परन्तु स्वर्ग से आता था। सूर्य्य उदय होने के पहिले हर दिन ईश्वर उसे बरसाता और मन्ना बटोरने के लिये बड़े तड़के इस्रायेलियों को उठना पड़ता था इस हेतु कि देर होने से वह सूर्य्य के तेज से गल जाता था। जो कोई बड़े भोर को नहीं जागता उसे उस दिन आहार नहीं मिलता था। मूसा ने उन से कहा कि इस में से कल्ह के लिये कुछ न रखियो क्योंकि परमेश्वर यह तुम्हें प्रतिदिन देगा। यदि आज सब चुक जावे तो डरियो मत बरन परमेश्वर पर भरोसा रखियो वह कल्ह तुम्हारे लिये और भेजेगा यद्यपि उन लोगों ने यह आज्ञा पाई तथापि कोई २ ईश्वर के ऐसे आज्ञालंघनकारी थे कि मन्ना में से कुछ रख छोड़ा। दूसरे दिन उन्हों ने देखा कि उस में कीड़े पड़ गये थे। वे उसे न खा सके इस कारण फेंकना पड़ा। परमेश्वर की आज्ञा उल्लंघन करना क्या ही निर्बुद्धि का काम है॥

उस जंगल में नदियां न थीं पर केवल किसी २ स्थान में कूए और पोखरे थे। दुष्ट इस्रायेलियों ने समझा कि हम प्यास से मर जावेंगे इस निमित्त वे मूसा के पास जाकर झगड़ने लगे और कुड़कुड़ाकर कहा कि तुम क्यों हमें मिसर से निकाल लाये। तुम्हारी इच्छा यही है कि हमें हमारे लड़कों और पशुओं को प्यास से मार डालो। वे इतने क्रोधित हुए कि मूसा को जान पड़ा कि वे बड़े २ पत्थर मुझ पर फेंककर मुझे मार डालेंगे तौभी मूसा उन से न बोला परन्तु परमेश्वर से बिन्ती कर कहा कि हे प्रभु इन लोगों के निमित्त मैं क्या करूं। ईश्वर ने कहा कि अपनी छड़ी और कई एक मनुष्यों को लेकर चटान पर चढ़ और एक

ऊंचे स्थान में जाकर चटान पर छड़ी मार उस से जल निकलेगा। कई एक मनुष्यों को साथ लेकर मूसा चटान पर चढ़ गया और ऊंचे स्थान में पहुंचकर चटान पर छड़ी मारी और उस से बहुत पानी निकला॥

चटान कड़ा और सूखा पत्थर है पर ईश्वर की आज्ञा से उस में से पानी निकला और बह चला। नीचे खड़े हुए लोगों ने देखा कि जल की धारा सूखी भूमि पर नदी सी बहती हुई चली आती है। वे बिचारे प्यासे लोग यह देखकर बड़े आनन्दित हुए। प्यास के कारण उन के मुख सूखे और जीभ कड़ी हो गई थीं और गले जल रहे थे। अब उस जल की धारा से उन्हों ने जितना चाहा उतना झुककर पीया और घड़े और मटके भर २ अपने तम्बुओं में ले गये। उन की बिचारी गाय भेड़ और गदहे दौड़ २ पानी के पास गये और पानी पीकर ठंढे हुए॥

देखो इस्रायेलियों की बिपत्ति के समय परमेश्वर ने उन पर कैसा अनुग्रह किया। उन को उचित था कि सदा सर्वदा उस पर बिश्वास करें और निश्चय जानें कि वह हमारी सहायता करेगा॥

हे प्रिय लड़को परमेश्वर तुम पर भी बहुत दयालु है इस लिये इस्रायेलियों के समान तुम को कुड़कुड़ाना न चाहिये बरन परमेश्वर का धन्य मानना और उस की प्रशंसा करना उचित है॥

## धर्म्मपुस्तक का पद ।

यीशु ने उन से कहा जीवन की रोटी मैं हूं जो मेरे पास आवे सो कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करे सो कभी पियासा न होगा । (योहन का ६ पर्व्व ३५ पद) ॥

## २६ छब्बीसवें पाठ के प्रश्न ।

कैसे स्थान को जंगल कहते हैं ?
जब इस्रायेलियों ने कुछ खाने को न पाया तब मूसा से किस प्रकार व्यवहार किया ?
ईश्वर ने उन्हें क्योंकर खिलाया ?
जो खाने की वस्तु आकाश से बरसी उस का क्या नाम रखा गया ?
इस्रायेली लोग बड़े भोर को उठकर क्यों मन्ना बटोरते थे ?
जो मन्ना दूसरे दिन तक रखा गया था उस की क्या दशा हुई ?
पानी न मिलने पर इस्रायेलियों ने क्या किया ?
ईश्वर ने किस रीति उन्हें जल दिया ?

---

## सताईसवीं कथा ।

### व्यवस्था के दिये जाने का वर्णन ।

यात्रा के १९, २०, २४, ३१ पर्व्व ।

जिस जंगल में से इस्रायेल के सन्तान जाते थे वह अत्यन्त बड़ा था इस कारण वे जल्दी कनान में नहीं पहुंच सके । चलते २ वे एक अति ऊंचे पहाड़ के पास आये जो सीनई पर्व्वत कहलाता है । यह वही पहाड़ है जिस पर भेड़ चराने के समय मूसा ने उस जलती हुई झाड़ी को देखा था । अब वह ठीक उसी स्थान में इस्रायेलियों को लाया जहां ईश्वर ने पहिले पहिल उस से बात किई थी । उस पर्व्वत के आसपास इस्रायेलियों ने अपना २

तम्बू डाला क्योंकि मेघ वहां ठहर गया था इसी से उन को जान पड़ा कि इस स्थान में हमें टिकना पड़ेगा। ईश्वर ने मूसा से कुछ बात करनी चाही इस लिये उसे पहाड़ पर चढ़ने कहा। जब मूसा पहाड़ पर चढ़ गया तब ईश्वर बोला तू ने देखा है कि मैं ने कैसा अनुग्रह करके इस्रायेलियों को मिसर से निकाला है। अब तू जाकर उन से पूछ कि वे मेरी आज्ञाओं पर चलेंगे वा नहीं। जो वे चलें तो वे लोग सदा सर्व्वदा मेरे बड़े प्रिय होंगे और मैं उन का ईश्वर हूंगा। मूसा ने उतरकर लोगों से पूछा कि तुम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करोगे वा नहीं। इस्रायेलियों ने उत्तर दिया कि जो कुछ परमेश्वर हम से कहेगा हम करेंगे। मूसा ने फिर पहाड़ पर चढ़कर लोगों का उत्तर ईश्वर को सुना दिया। ईश्वर ने मूसा से कहा कि मैं काली बदली में तेरे पास आकर तुझ से बातें करूंगा और वे मेरा शब्द सुनकर जानेंगे कि मैं तुझ से बोलता हूं। अब तू जाकर उन से कह कि वे तैयार हों। नीचे जाकर मूसा ने लोगों से कहा कि तीन दिन में तुम्हें ईश्वर का शब्द सुन पड़ेगा और तुम जानोगे कि वह पहाड़ पर बदली में है इस लिये तुम अपने २ कपड़े धोकर तैयार हो। यह सुन उन्हों ने अपने कपड़े धोये जिस में ईश्वर के आगे स्वच्छ और उज्जल वस्त्र पहिनकर खड़े हों। मूसा ने इस्रायेलियों को आज्ञा दिई कि वे पहाड़ की चारों ओर घेरा बांधें जिस में कोई उस पर चढ़ वा उसे छू न सके और पशु भी उस पर न चरने पावें क्योंकि वह परमेश्वर का पहाड़ है॥

तीसरे दिन भोर को लोगों ने एक महा शब्द सुना जिस से वे थर्थरा उठे। मूसा ने उन्हें तम्बुओं के भीतर से निकलकर ईश्वर के साम्ने आने कहा और वे पहाड़ के नीचे आ खड़े हुए तो देखते हैं कि पहाड़ डगमगा रहा है और उस की चोटी पर बड़ी आग और गाढ़ा बादल है और ऐसा धूआं उठ रहा है कि सारे आकाश में अन्धकार छा गया। मेघ गरजने और बिजली चमकने लगी और आग से तुरही के शब्द सा एक बड़ा शब्द निकला। वह शब्द हर एक पल में बढ़ता गया यहां लों कि

मूसा आप मारे डर के बोल उठा कि मैं बहुत डरता और कांपता हूं । परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू मेरे पास पहाड़ पर आ । मूसा सब लोगों के साम्ने उस हिलते हुए पहाड़ पर चढ़ा और धूएं के बीच में चला गया । जब मूसा वहां पहुंचा तब ईश्वर ने धीरे से उस से कहा कि तू नीचे जाकर लोगों से कह कि वे तेरे पीछे यहां न आवें क्योंकि उन को इस पहाड़ पर आना उचित नहीं है । मूसा ने उत्तर दिया कि मैं ने पहाड़ की चारों ओर घेरा बांध दिया है तोभी ईश्वर ने कहा कि जा और उन से कह कि वे निकट न आवें क्योंकि ईश्वर जानता था कि वे आज्ञा के बड़े उल्लंघनकारी थे । मूसा नीचे उतरकर लोगों से बोला कि तुम पहाड़ मत छूओ । जो तुम छूओगे तो नष्ट हो जाओगे ॥

इस के पीछे ईश्वर ने ऐसे ऊंचे शब्द से बात किई कि सब लोग सुनकर कांपने लगे । हे प्रिय पढ़नेहारो जो तुम उस पर्ब्बत को देखते तो अचम्भा न करते कि उस की चारों ओर खड़े हुए वे लोग क्यों कांपते थे ॥

ईश्वर ने इन बातों को कहा था कि तेरा प्रभु परमेश्वर जो तुझे मिसर के दासपने से छुड़ा लाया मैं हूं । मेरे सन्मुख तेरे लिये दूसरा ईश्वर न हो । यही पहिली आज्ञा है ॥

दूसरी आज्ञा । तू कोई मूर्त्ति बनाकर उस की पूजा मत कर ॥

तीसरी आज्ञा । अपने प्रभु परमेश्वर का नाम अकारथ मत ले ॥

चौथी आज्ञा । विश्राम के दिन को पवित्र रखने के लिये स्मरण कर क्योंकि उसी में ईश्वर ने अपने सारे कार्य्यों से विश्राम किया ॥

पांचवीं आज्ञा । अपने माता पिता का आदर कर ॥

छठवीं आज्ञा । नरहत्या मत कर ॥

सातवीं आज्ञा । व्यभिचार मत कर अर्थात् कोई पुरुष दूसरे की पत्नी को न लेवे और न कोई स्त्री अपने पति को छोड़ दूसरा पति करे ॥

आठवीं आज्ञा । चोरी मत कर ॥

नवीं आज्ञा। अपने परोसी पर झूठी साक्षी मत दे अर्थात् किसी के नाम से झूठ मत बोल॥

दसवीं आज्ञा। लालच मत कर अर्थात् किसी की वस्तु लेने की इच्छा मत कर॥

परमेश्वर पहाड़ पर से इन दस आज्ञाओं को देकर चुप हो रहा। तब सब लोग सन्तुष्ट हुए क्योंकि उस भयंकर शब्द को सुनकर वे बहुत डरते थे और दूर दूर जाकर खड़े हुए थे। इस के पीछे उन्हों ने मूसा के पास आकर कहा परमेश्वर से विन्ती करो कि वह हमें अपना शब्द और न सुनावे क्योंकि हम उस से बहुत डरते हैं। हे मूसा हम चाहते हैं कि ईश्वर तुम से बात करे और तुम पीछे से आकर हम से कह दो। इस पर मूसा फिर पहाड़ पर चढ़ा और काले मेघ में जाकर लोगों की बिन्ती ईश्वर को सुनाई। ईश्वर ने उत्तर दिया कि अच्छी बात है मैं तुझ से बात करूंगा और तू उन से कह दे। मेरी यही इच्छा है कि वे सदा मुझ से डरें और मेरी आज्ञाओं का पालन करें कि मैं उन्हें आशीष दूं॥

देखो ईश्वर की इच्छा थी कि इस्रायेली लोग भले और सुखी होवें पर वह जानता था कि उन के अन्तःकरण में मेरा प्रेम नहीं है। मूसा ईश्वर को सचमुच प्यार करता था और ईश्वर उस से बहुत बात किया करता था॥

फिर ईश्वर ने उसे अकेला पहाड़ पर आने की आज्ञा दिई और वह चढ़ गया और ईश्वर के संग चालीस दिन वहां रहा। उतने दिन मूसा ने न तो कुछ आहार किया और न पानी पिया तौभी ईश्वर ने उसे जीता रखा और गाढ़े मेघ के भीतर से उस से बातें किईं। चलते समय मूसा को ईश्वर ने पत्थर की दो पटरी दिईं जिन में परमेश्वर ने अपनी अंगुली से दस आज्ञाओं को लिख दिया था। परमेश्वर ने उन्हें पत्थर पर इस लिये लिखा था कि मूसा इस्रायेलियों के साम्ने पढ़े और वे ईश्वर की आज्ञाओं को कभी न भूलें॥

हम को भी ईश्वर की आज्ञाओं को भूलना उचित नहीं है। हे प्यारे बालको मैं चाहती हूं कि तुम इन दस आज्ञाओं को

कंठ करो और इन का अर्थ मैं तुम्हें दूसरे समय समझा दूंगी॥

पहिली आज्ञा यह है कि मुझे छोड़ तेरे लिये दूसरा ईश्वर न हो। इस आज्ञा से ईश्वर की यह इच्छा प्रगट होती है कि लोग सब से अधिक ईश्वर को प्यार करें परन्तु इस्रायेलियों ने वैसा न किया। उन की दुष्टता का वृत्तान्त मैं आगे लिखूंगी॥

निश्चय कर हम को सब वस्तुओं से अधिक ईश्वर को प्यार करना चाहिये क्योंकि उस के समान दयावान और अच्छा कोई नहीं है॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

हाय कि उन के ऐसे मन होते कि वे मुझ से डरते और सदा मेरी समस्त आज्ञाओं को पालन करते। (बिवाद का ५ पर्ब्ब २९ पद)॥

## २७ सताईसवें पाठ के प्रश्न।

बात करने के लिये ईश्वर ने पर्ब्बत पर किसे बुलाया?

पहाड़ की चारों ओर क्यों घेरा बांधा गया?

जब ईश्वर पहाड़ पर आया तब क्या देख पड़ा ?
उस ने लोगों को ऊंचे शब्द से कौन २ बातें सुनाईं ?
किस कारण लोगों ने फिर कभी उस का शब्द सुन्ने न चाहा ?
मूसा पहाड़ पर ईश्वर के साथ कितने दिन रहा ?
बात करने पर ईश्वर ने मूसा को क्या दिया ?

---

## अठाईसवीं कथा ।

### सोने के बछड़े का वर्णन ।

यात्रा का ३२ पर्व्व ।

जब मूसा चालीस दिन रात पर्व्वत ही पर रहा तब इस्रायेलियों ने पहिले कुछ समय तक अच्छी रीति व्यवहार किया परन्तु थोड़े दिन के पीछे मूसा की बाट जोहते २ वे थक गये और अधीर होकर शीघ्र कनान में पहुंचने को चाहा पर पहुंच न सके क्योंकि पहाड़ की चोटी पर मेघ ठहरा रहा और जब लों मेघ आगे न बढ़ता और मूसा उन्हें चलने की आज्ञा न देता तब लों वे नहीं चल सकते थे । अब वे सोचने लगे कि मूसा फिर न आवेगा और वे हारोन के पास आकर बोले कि हमारे लिये ईश्वर बनाओ जो आगे २ चले क्योंकि हम नहीं जानते हैं कि मूसा को क्या हुआ ॥

यह कहना कैसा बुरा था परन्तु तुम जानते हो कि जब इस्रायेली लोग मिसर में रहे तब देखते थे कि मिसरीय लोग प्रतिमापूजा करते हैं इस प्रकार इस्रायेलियों ने भी वैसा करना सीखा ॥

हारोन यह सोचकर डरा कि जो मैं प्रतिमा बनाकर इन लोगों को प्रसन्न न करूं तो ये मुझे मार डालेंगे इस कारण उस ने कहा कि अपनी सोने की बालियां तुम मेरे पास लाओ और उन्हों ने सोने की सब बालियों को ला दिया ॥

तुम को याद होगा कि जब इस्रायेली लोग मिसर से निकलने

लगे तब मिसर की स्त्रियों ने उन्हें बहुत से सोने के गहने दिये थे॥

हारोन ने बालियों को आग में गलाकर एक प्रतिमा बनाई उस प्रतिमा का रूप बछड़ू सा था क्योंकि मिसर देश के लोग बछडुओं की पूजा किया करते थे। ज्योंही इस्रायेलियों ने उस मूर्त्ति को देखा त्योंही उस की स्तुति करके कहा कि यह वही है जिस ने हमें मिसर से निकाला है। तब हारोन ने उसे एक ऊंचे स्थान पर रखा और उस के सन्मुख एक वेदी बनाई और कहा कि कल्ह बड़ा भोज होगा। दूसरे दिन बड़े भोर को उठकर उन लोगों ने बछड़ू की पूजा में सारा दिन बिताया और कुछ बकरी और मेम्नों को लेकर वेदी पर बछड़ू के आगे बलि चढ़ाया और नाच नाचकर उस की स्तुति का गीत गाया॥

तुम को स्मरण होगा कि इस के थोड़े दिन पहिले उन्हों ने सदा ईश्वर ही की आज्ञा मानने की प्रतिज्ञा किई थी परन्तु हाय ऐसी जल्दी उस प्रतिज्ञा के विरुद्ध वे चले। दस आज्ञाओं में से एक आज्ञा यही है कि तू मूर्त्ति न बना और उस के आगे दण्डवत न कर। अब उन्हों ने इस आज्ञा को टाल दिया॥

मूसा पहाड़ पर ईश्वर के साथ बातचीत करने में लगा था इस लिये उस ने न जाना कि इस्रायेल के सन्तान नीचे क्या करते हैं परन्तु ईश्वर ने जान लिया और मूसा से कहा कि उतरकर देख जिन लोगों को तू मिसर से निकाल लाया वे सोने का बछड़ू बनाकर पूजते हैं। मैं उन से अति क्रोधित हूं और उन सभों को नष्ट कर दूंगा परन्तु मैं तेरी और तेरे बालबच्चों की रक्षा करूंगा। ईश्वर को क्रुद्ध देखकर मूसा अति दुःखित हुआ और लोगों पर क्षमा करने के लिये बहुत बिन्ती करके कहा हे प्रभु स्मरण कर कि तू ने उन्हें किस प्रकार मिसर से निकाला है और इब्राहीम से भी यह प्रतिज्ञा किई थी कि तू उस के वंश को आशीष देगा। ईश्वर ने मूसा की प्रार्थना मान लिई और मन में ठहराया कि मैं सभों को नष्ट नहीं करूंगा॥

इस पर मूसा पत्थर की पटरियों को हाथ में लिये हुए पर्ब्बत से शीघ्र उतरा। नीचे पहुंचते २ उस ने गीत का शब्द सुना और

जाना कि इस्रायेली लोग बछड़ू की स्तुति कर रहे हैं। निदान जब वह छावनी के निकट गया और देखा कि बछड़ू की चारों ओर लोग पागलों और मतवालों के समान नाचते हैं तब उस ने बहुत क्रोध किया क्योंकि उस की दृष्टि में वह बड़ी घिन का काम था और उस ने पत्थर की पटरियों को भूमि पर फेंक-कर तोड़ डाला। इस्रायेलियों ने परमेश्वर की आज्ञा टाल दिई थी और मूसा ने क्रोध और शोक के मारे आज्ञाओं की पटरियों को फेंककर तोड़ डाला क्योंकि उस ने समझा कि ऐसे दुष्ट लोगों को पटरियां देना उचित नहीं है॥

लोग मूसा को देखकर बहुत डरे होंगे क्योंकि उन्हों ने यह बिचार किया था कि मूसा फिर न आवेगा परन्तु उस ने दुष्टता करते समय उन्हें पकड़ा॥

मूसा ने बछड़ू को लेकर आग में डाल दिया और कूटकर बुकनी बनाई और पानी में मिलाकर इस्रायेलियों को पिलाया। किसी ने साहस न किया कि मूसा को इन सब कामों से रोके। फिर मूसा ने हारोन पर अति कोप किया इस लिये कि उस ने बछड़ू बनाया था और कहा कि तू ने क्यों उन्हें यह महा पाप करने दिया। हारोन बोला कि मुझ पर कोप न कीजिये क्योंकि अपनी इच्छा से दुष्ट होकर इन लोगों ने मुझे बछड़ू बनाने के लिये कहा। मैं ने तो केवल इन्हें प्रसन्न करने को इसे बना दिया है॥

यह निकम्मा बहाना था। बछड़ू के बनाने में हारोन को महा पाप हुआ क्योंकि यद्यपि लोग हमें अनुचित काम करने कहें तथापि क्या हमें करना चाहिये॥

मूसा ने कुछ लोगों को आज्ञा दिई कि वे खड्ग लेकर बहुत मनुष्यों को मार डालें और उन्हों ने तीन सहस्र मनुष्यों को मार डाला और ईश्वर ने बहुतों को रोगी भी किया। इस प्रकार परमेश्वर ने उन अपराधी इस्रायेलियों को दण्ड दिया। वे सचमुच मारे जाने के योग्य थे क्योंकि उन्हों ने सोने के बछड़ू की पूजा किई थी परन्तु ईश्वर ने मूसा की प्रार्थना सुनकर सब लोगों को नहीं नष्ट किया॥

तुम सुन चुके हो कि पत्थर की पटरियां क्योंकर तोड़ी गई थीं। अब ईश्वर ने आप नई पटरियां नहीं तैयार किईं परन्तु उस ने मूसा को दूसरी पटरियां बनाने की आज्ञा दिई। ईश्वर ने मूसा को फिर पहाड़ पर बुलाया और जैसे पहिली पटरियों पर लिखा था वैसेही नई पटरियों पर भी दस आज्ञाओं को लिख दिया। ईश्वर ने मूसा को फिर चालीस दिन और रात पहाड़ पर अपने साथ रखा और तब वैसेही उस से बातचीत किई जैसे मनुष्य अपने मित्र से करता है। इस समय ईश्वर ने वैसे ऊंचे शब्द से बात न किई जिसे सुनकर इस्रायेली लोग डर गये थे और न गरजना न बिजली और न धूआं हुआ। मूसा ईश्वर के साथ पहाड़ पर रहना बहुत चाहता था वह परमेश्वर से इस लिये नहीं डरता था कि पवित्र आत्मा उस के मन में था॥

हे प्यारे लड़को यदि ईश्वर का पवित्र आत्मा तुम में हो तो तुम भी परमेश्वर से न डरोगे बरन उसे अपने पिता सा प्यार करोगे॥

परमेश्वर ने मूसा को अपना तेज दिखाया परन्तु अपना मुंह न दिखाया क्योंकि जो मूसा ईश्वर का मुंह देखता तो वह मर जाता। स्वर्गीय दूत और जो लोग मरके स्वर्ग में जाते हैं वे ईश्वर का मुंह देखा करते हैं परन्तु इस संसार के मनुष्य वैसा तेज देखकर जीते नहीं रह सकते॥

जब मूसा पहाड़ पर था तब ईश्वर ने उस से जो कुछ कहा सो मैं पीछे वर्णन करूंगी। इस बार भी जितने दिन मूसा पहाड़ पर था उतने दिन कुछ खाया पीया नहीं। अन्त में पत्थर की पटरियों को हाथ में लिये मूसा उतरकर लोगों के पास आया। अब की बेर वे प्रतिमा की पूजा नहीं करते थे तौभी मूसा का मुंह देखकर इतना डरे कि उस के निकट न जा सकें। मूसा के भाई हारोन को भी बहुत डर हुआ क्योंकि मूसा का मुंह सूर्य्य के तुल्य चमकता था इस लिये वे उसे देख नहीं सकते थे। उस ने ईश्वर के साथ बातचीत किई थी और ईश्वर का तेज देखा था इस निमित्त उस का मुंह

चमकता था। ईश्वर सूर्य्य से अधिक तेजस्वी है। दूत नित्य उस का दर्शन करते हैं इस हेतु वे भी अति तेजस्वी हैं। मूसा को जान पड़ा कि इस्रायेली लोग क्यों डरते हैं इस कारण उस ने मोटे कपड़े से अपना मुंह ढांपकर उन से बात किई॥

हे प्रिय बच्चो मैं भरोसा करती हूं कि एक दिन स्वर्ग में तुम्हारे मुंह भी चमकेंगे। मैं निश्चय जानती हूं कि जो तुम ईश्वर को प्यार करते हो तो एक दिन तुम स्वर्ग में उस का दर्शन पाकर दूतों के तुल्य तेजस्वी होगे॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

वे अपने त्राणकर्त्ता परमेश्वर को भूल गये थे जिस ने मिसर में बड़े २ कार्य्य किये थे। (१०६ गीत का २१ पद)॥

## २८ अठाईसवें पाठ के प्रश्न।

मूसा की बाट जोहते २ जब इस्रायेली लोग थक गये तब उन्हों ने क्या किया ?
किस ने सोने का बछड़ा बनाया ?
किस ने मूसा को इस्रायेलियों का दोष जनाया ?
परमेश्वर से किस ने विन्ती किई कि वह इस्रायेलियों को न मार डाले ?
मूसा ने क्यों पत्थर की पटरियों को फेंककर तोड़ डाला ?
बछड़े को लेकर मूसा ने क्या किया ?
मूसा ने उन लोगों को क्या दण्ड दिया ?
ईश्वर ने आप उन्हें और कुछ दण्ड दिया वा नहीं ?
जब मूसा ईश्वर के पास पर्ब्बत पर फिर चालीस दिन रहा तब ईश्वर ने उसे कैसा दर्शन दिया ?
पर्ब्बत से उतरने के पीछे मूसा के पास आने में इस्रायेली लोग क्यों डरे ?
मूसा का मुंह किस लिये तेजस्वी हुआ था ?
किन के मुंह सदा सूर्य्य के तुल्य चमकते हैं ?

## उन्तीसवीं कथा ।

### भजन के तम्बू का वृत्तान्त ।

यात्रा का ३५, ३६, ३७ पर्व्व ।

तुम सुन चुके हो कि पहाड़ पर ईश्वर ने मूसा को क्या २ आज्ञा दिई । अब जिस प्रकार परमेश्वर ने उसे एक अति सुन्दर तम्बू बनाने की शिक्षा दिई सो सुनो । यद्यपि ईश्वर को किसी घर की आवश्यकता न थी क्योंकि स्वर्ग में उस का सिंहासन है तौभी इस्रायेलियों पर इतना अनुग्रह करके उस ने अपने लिये वन में उन्हें एक तम्बू बनाने की आज्ञा दिई ॥

जब मूसा पर्व्वत से उतरा तब उस ने लोगों को निकट बुलाया और अपना मुंह ढांपकर उन से बोला कि ईश्वर कहता है बिश्राम के दिन में अपने २ सब काम को छोड़ केवल परमेश्वर का भजन और सेवा करना उचित है इस निमित्त ईश्वर एक अति सुन्दर तम्बू चाहता है जिस में तुम लोग एकट्ठे होकर उस का भजन करो । अब भजन का तम्बू बनाने के लिये आवश्यक वस्तु मुझे कौन देगा । तुम को स्मरण होगा कि मिसर की स्त्रियों ने इस्रायेलियों को बहुत सा सोना चांदी और वस्त्र आदि पदार्थ दिये थे और यद्यपि उन्हों ने उन में से कुछ लेकर एक बछड़ू बनाया था तथापि बहुत से उन के पास बच रहे थे। अब उन्हों ने अपने लिये उत्तम कपड़े बनाने और तम्बुओं को शोभित करने से अधिक अपनी सम्पत्ति परमेश्वर को देनी चाही और मूसा का बचन सुनते ही उन्हों ने तम्बुओं में जाकर सन्दूक और पेटियां खोलीं और उन में से सोने और चांदी की अंगूठियां और बालियां और बहुत से अति सुन्दर उज्जल नीले बैंजनी और लाल वस्त्र और मेढ़ों और बकरियों के चमड़े और उत्तम लकड़ियों को निकाला और सब एकट्ठा करके मूसा के पास लाये । जिन धनवानों के पास सुन्दर और झलकते हुए रत्न अथवा सुगन्ध मसाले और तेल आदि थे वे भी उन्हें मूसा के निकट लाये ॥

जब मूसा ने देखा कि लोग अपनी सम्पत्ति ईश्वर को दिया चाहते हैं तब वह सन्तुष्ट हुआ क्योंकि देते समय वे कुछ भी अप्रसन्न न हुए बरन अति आनन्दित होकर उन्हों ने परमेश्वर को दिई। जब हम कुढ़ कुढ़के परमेश्वर को कुछ देते हैं तो वह सन्तुष्ट नहीं होता क्योंकि ईश्वर मन से देनेवाले को प्यार करता है॥
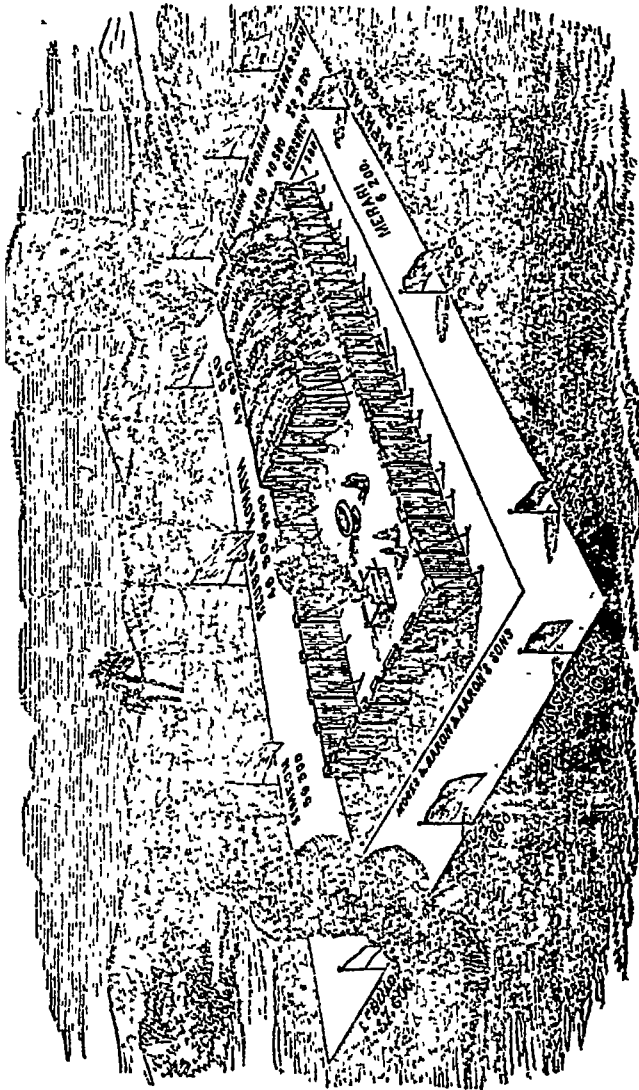
ईश्वर की इच्छा के अनुसार सुन्दर तम्बू बनाना बड़ा भारी

काम था इस लिये ईश्वर ने दो मनुष्यों को पत्थर गढ़ने लकड़ी खोदने और अनेक प्रकार के काम करने में निपुण किया था और उन के नाम मूसा को वता दिये ॥

मूसा ने उन दो मनुष्यों को वुलाया और सब भली २ वस्तुओं को उन्हें सौंपकर कहा कि तुम यह सब लेकर भजन करने के लिये एक तम्बू तैयार करो । मैं तुम्हें बताऊंगा कि किस प्रकार उसे बनाना उचित है । मूसा ने सब लोगों को आज्ञा दिई कि उन दोनों की सहायता करें और दोनों निपुण मनुष्यों से कहा कि तुम इन लोगों को काम करना सिखाओ ॥

ईश्वर ही मनुष्यों को निपुण करता है इस लिये जब कोई कुछ अच्छा काम करे तब उस को घमण्ड करना नहीं बरन ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिये ॥

तब सब लोग काम करने लगे । स्त्रियों ने नीले बैंजनी और लाल सूत कांते पुरुषों ने उन सूतों को लेकर मलमल आदि वस्त्र वुने और हथौड़ों और आरों से काटकर लकड़ियों में काम बनाया उन्हों ने सोना चांदी आग में गलाकर वेदी दीवट करछुल चिमटे वासन और अनेक प्रकार के पात्र बनाये । इस प्रकार वहुत महीनों तक परिश्रम करते २ सब काम पूरा हुआ । तुम ने तो कभी वैसा बड़ा तम्बू न देखा होगा पर यद्यपि वह बहुत बड़े घर के समान था तौभी लोग सहज से उस को एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान में खड़ा कर सकते थे क्योंकि वह भूमि में जड़ा न था ॥

पहिले वहुत से तख़्ते पास २ भूमि पर खड़े करके उन्हों ने भीत सा बनाया । उन तख़्तों में कड़े लगे थे और उन्हों ने कड़ों में डंडे लगाये कि वे एक दूसरे के साथ मिले रहें । घर के ऊपर तख़्ते न थे परन्तु कपड़े टांगकर उन्हों ने एक प्रकार का छत बनाया । और द्वार के स्थान में परदा लटकाया । वे सब तख़्ते सोने से मढ़े थे और छत के कपड़े और परदों के नीले बैंजनी और लाल होने के कारण तम्बू बहुत सुहावना देख पड़ता था । उस के आम्ने साम्ने सोने के पांच खम्भे थे जिन पर से वह परदा लटकता था ॥

तम्बू के भीतर दो कोठरियां थीं अर्थात् एक छोटी और एक बड़ी। बड़ी कोठरी में अति सुन्दर २ तीन वस्तु थीं॥
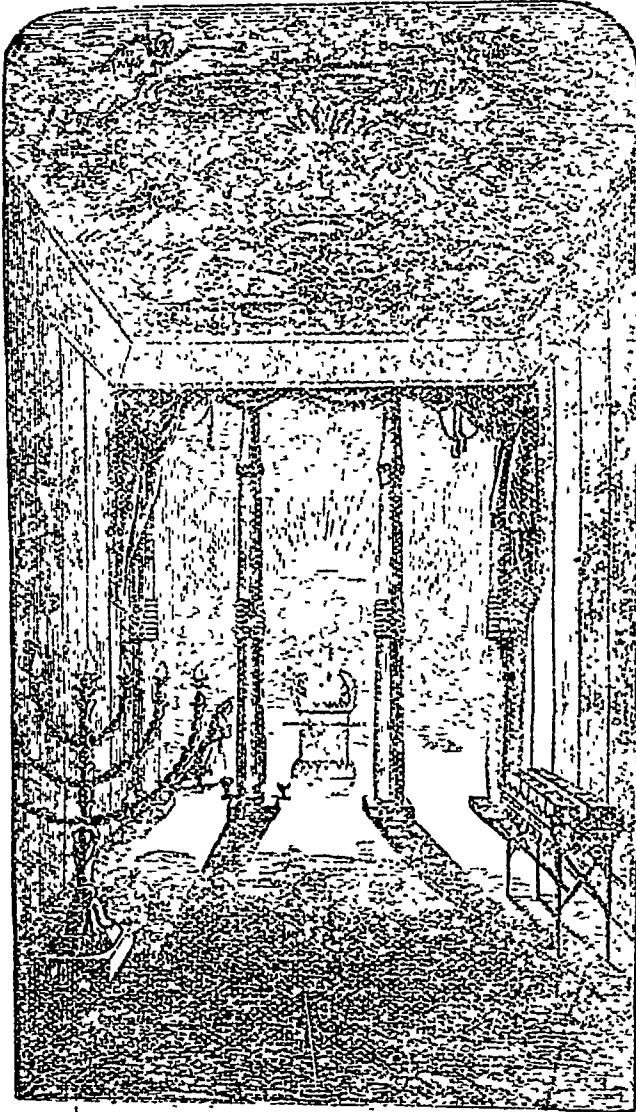
१। कोठरी के बीच में सोने की एक बेदी थी जिस पर भेंटें नहीं परन्तु सुगन्धी मसाले जलाये जाते थे। सुगन्धी मसालों को धूप कहते हैं और उन के जलाने से तम्बू में बड़ा सुगन्ध रहता था॥

२। कोठरी की एक ओर सोने की एक मेज रक्खी थी और

उस पर हर विश्राम के दिन बारह रोटी रक्खी जाती थीं जो पवित्र रोटी वा भेंट की रोटी कहलाती थीं॥

३। कोठरी की दूसरी ओर सोने की एक दीवट थी जिस पर सात दीपक लगे थे। तम्बू में खिड़की न थी परन्तु उन दीपकों के द्वारा वहां उंजियाला रहता था॥

इस कोठरी का नाम पवित्रस्थान था। यह बड़ी सुन्दर और मनोहर थी पर तम्बू की छोटी कोठरी इस से भी अधिक सुन्दर थी। बड़ी और छोटी कोठरियों के बीच में एक परदा लटकता था॥

छोटी कोठरी में सोने का एक सन्दूक रक्खा था जिस के ऊपर सोने के दो दूतों के आकार बने थे। उस सन्दूक को नियम का सन्दूक कहते थे क्योंकि पत्थर की जिन पटरियों में दस आज्ञा लिखी थीं वे उसी में रक्खी गई थीं। ईश्वर मेघ में उतरकर वहां आता था और उस छोटी कोठरी को अपने तेज से भरपूर करता था इस लिये वहां बहुत उंजियाला रहता था। सोने के दोनों दूतों के बीच में ईश्वर का तेज रहता था और उस स्थान को अर्थात् नियम के सन्दूक के ढकने को दया का आसन कहते थे क्योंकि ईश्वर उस पर बैठकर बड़ी दया से लोगों की बिन्ती सुनता था। छोटी कोठरी का नाम महापवित्र स्थान था। उस में न खिड़की थी न दीपक था तौभी परमेश्वर के तेज से उजेला रहता था तुम जानते हो कि ईश्वर सूर्य्य से भी अधिक तेजस्वी है। आहा वह छोटी कोठरी कैसी मनभावनी थी। उस के विषय में सोचने से स्वर्ग की बातें याद पड़ती हैं क्योंकि वहां ईश्वर रहता और चमकता है पर स्वर्ग उस के समान छोटा नहीं है वह तो इतना बड़ा है कि वहां सब दूतों और इस जगत के सब धर्म्मी लोगों के रहने के लिये बहुत स्थान हैं॥

तम्बू के विषय में अब मैं और कुछ न कहूंगी परन्तु जो २ वस्तु उस के भीतर थीं उन के नाम मैं फिर नीचे लिखती हूं उन को तुम भूलियो मत। बड़ी कोठरी अर्थात् पवित्रस्थान में

१। सोने की वेदी।

२। भेंट की रोटियों की मेज।

३। सोने की दीवट।

छोटी कोठरी अर्थात महापवित्र स्थान में नियम का सन्दूक जिस के भीतर दस आज्ञाओं की पटरियां थीं और ऊपर सोने के दूतों के दो आकार थे जिन के बीच में परमेश्वर का तेज प्रगट रहता था॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

स्वर्ग में रात नहीं होगी और उन्हें दीपक का अथवा सूर्य्य की ज्योति का प्रयोजन नहीं क्योंकि परमेश्वर ईश्वर उन्हें ज्योति देगा। (प्रकाशित वाक्य का २२ पर्ब्ब ५ पद)॥

## २९ उन्तीसवें पाठ के प्रश्न।

जब मूसा पहाड़ पर था तब ईश्वर ने उस को क्या बनाने की आज्ञा दिई?

तम्बू बनाने के लिये इस्रायेलियों ने मूसा को कौन २ वस्तु ला दिईं?

दो मनुष्यों ने क्योंकर जाना कि तम्बू किस रीति से बनाना होगा?

तम्बू क्यों भूमि में नहीं जड़ा था?

वह क्या कहलाता था?

उस की चारों ओर क्या था?

उस के छत और द्वार किस वस्तु से बने थे?

तम्बू में कई कोठरियां थीं और बड़ी कोठरी में कौन कौन वस्तु थीं?

सोने की बेदी पर क्या जलाया जाता था?

सोने की मेज़ पर कौन वस्तु रखी जाती थीं?

सोने की दीवट में कितने दीपक लगे थे?

छोटी कोठरी का नाम क्या था?

उस में कौन वस्तु रक्खी थी?

नियम के सन्दूक में क्या रहता था और उस का ढकना क्या कहलाता था?

ईश्वर का तेज उस कोठरी में आकर किस पर रहता था ?
उस कोठरी में क्योंकर उजेला रहता था ?
बड़ी कोठरी किस रीति से उजेली होती थी ?
स्वर्ग में उजेला किस प्रकार रहता है ?

---

## तीसवीं कथा।

### याजकों का वर्णन।

यात्रा का ३८, ३९, ४० पर्व्व।

मैं ने तुम से कहा है कि तम्बू किस प्रकार का था। अब मैं तुम को बताऊंगी कि उस के बाहर कौन २ वस्तु थीं। तुम जानते हो कि बहुतेरे घरों की चारों ओर फुलवारी लगी रहती है तम्बू की चारों ओर वैसी फुलवारी न थी पर आंगन था। आंगन की चारों ओर खंभे खड़े थे। ये खंभे एक दूसरे से कुछ २ दूर पर लगाये गये थे और उन के बीच २ में परदे लटकते थे। इन परदों से तम्बू और सारा आंगन घिरा था॥

आंगन में दो वस्तु थीं अर्थात पीतल की एक बेदी और एक बड़ा पात्र। यह बेदी तम्बू के भीतर की बेदी सी छोटी न थी यह तो बहुत बड़ी थी क्योंकि इस पर धूप आदि सुगन्ध मसाले नहीं जलाये जाते थे बरन भेड़ बकरी बैल और बछड़ आदि जन्तुओं को जलाने के लिये वह बनी थी। तुम जानते हो कि परमेश्वर ने लोगों को आज्ञा दिई थी कि वे पशु मारकर बलि चढ़ावें क्योंकि वह ईश्वर की प्रतिज्ञा का चिन्ह था। बहुत बरस पहिले यीशु ख्रीष्ट ने प्रतिज्ञा किई थी कि मैं मनुष्यों के पापों के लिये प्राण दूंगा। ईश्वर की इच्छा थी कि लोग सदा उस प्रतिज्ञा को स्मरण रखें इस लिये उस ने आज्ञा दिई कि वे पशु मारकर उन का लोहू छिड़कें और देह को आग में जला देवें। इस को बलि चढ़ाना कहते हैं। हाबिल नूह इब्राहीम और सब धर्म्मी लोग बलिदान चढ़ाया करते थे। जब वे पशुओं
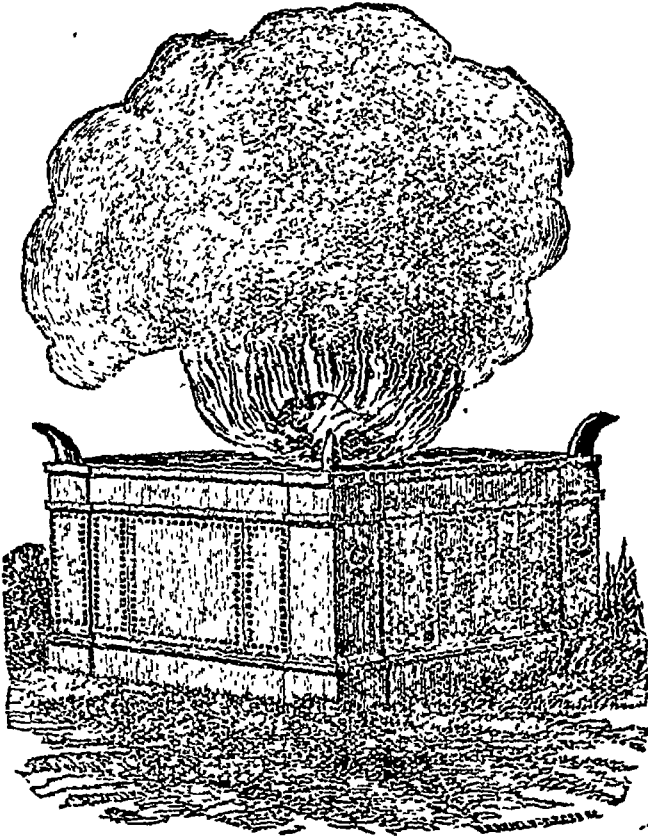
को पीतल की बेदी पर रखकर मारते थे तब उन का लोहू बेदी की चारों ओर बह जाता था और बेदी पर जलती हुई देह का धूआं आकाश तक उठता था। महायाजक को बलि चढ़ाना पड़ता था। ईश्वर ने कहा था कि हारोन महायाजक होगा इस लिये हारोन बलि चढ़ाता धूप जलाता और तम्बू में दीपक बारता था॥

आंगन में जो पीतल का पात्र था सो बहुत बड़ा था और धोने के निमित्त पानी से भरा रहता था। जो २ मनुष्य उस पात्र में हाथ मुंह धोते थे उन का वर्णन आगे करूंगी॥

परमेश्वर ने मूसा और हारोन को छोटी कोठरी में अर्थात् महापवित्र स्थान में जाने की अनुमति दिई पर और सब मनुष्यों को उस में जाने से बरजा। हारोन बरस भर में एक ही बेर

परदा उठाकर उस कोठरी के भीतर पैठ दया के आसन पर जो तेज था उसे देख सकता था। ईश्वर ने कहा था कि उस छोटी कोठरी में मैं हारोन से बात करूंगा॥
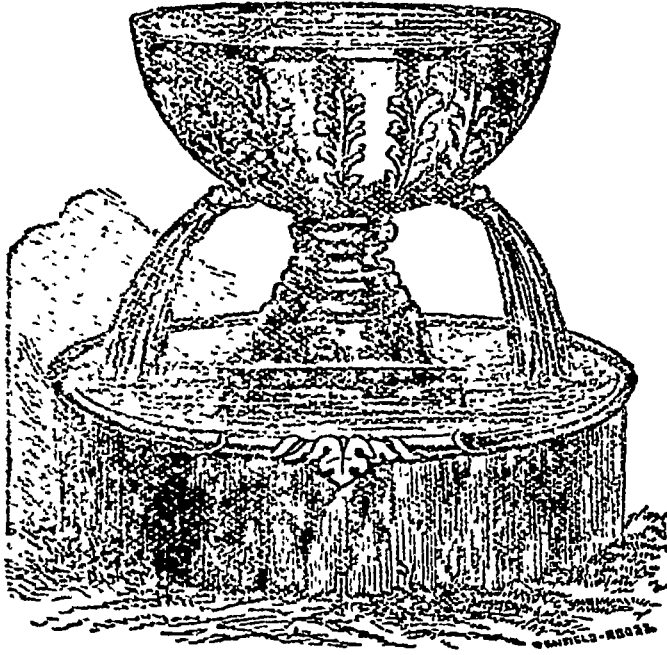
हे प्यारे बच्चो मैं यह सोचकर आनन्दित होती हूं कि उस छोटी कोठरी से अधिक सुहावना एक और स्थान है जहां हम एक दिन जाकर ईश्वर का शब्द सुनेंगे॥

ईश्वर ने मूसा को आज्ञा दिई कि हारोन के लिये कई एक अति उत्तम वस्त्र बनावे। जिन दो निपुण मनुष्यों की चर्चा हो चुकी है वे उन वस्त्रों को तैयार करने जानते थे। जो २ वस्त्र हारोन पहिनता था उन के नाम नीचे लिखती हूं॥

१। एक उज्जल और ढीला वस्त्र जिस में लम्बी बांहियां लगी थीं॥

२। एक उत्तम नीला पहिरावा। यह उस उज्जल वस्त्र के ऊपर पहिना जाता था और इस के नीचे के किनारे पर सोने की छोटी २ घण्टियां लगी थीं। जब हारोन चलता था तब घण्टियों से मनोहर शब्द निकलता था॥

३। मलमल का एक वस्त्र जो अफूद कहलाता था। उस पर बैंजनी और लाल रेशमी सूत और सोने के तारों का बहुत सुन्दर काम था। हारोन अफूद को उस नीले वस्त्र के ऊपर पहिनता था॥

४। कटि में एक वस्त्र जिस का नाम पटुका था। वह पटुका मलमल के कपड़े से बना था जिस पर बैंजनी और लाल रेशम और सोने का बूटा काढ़ा हुआ था॥
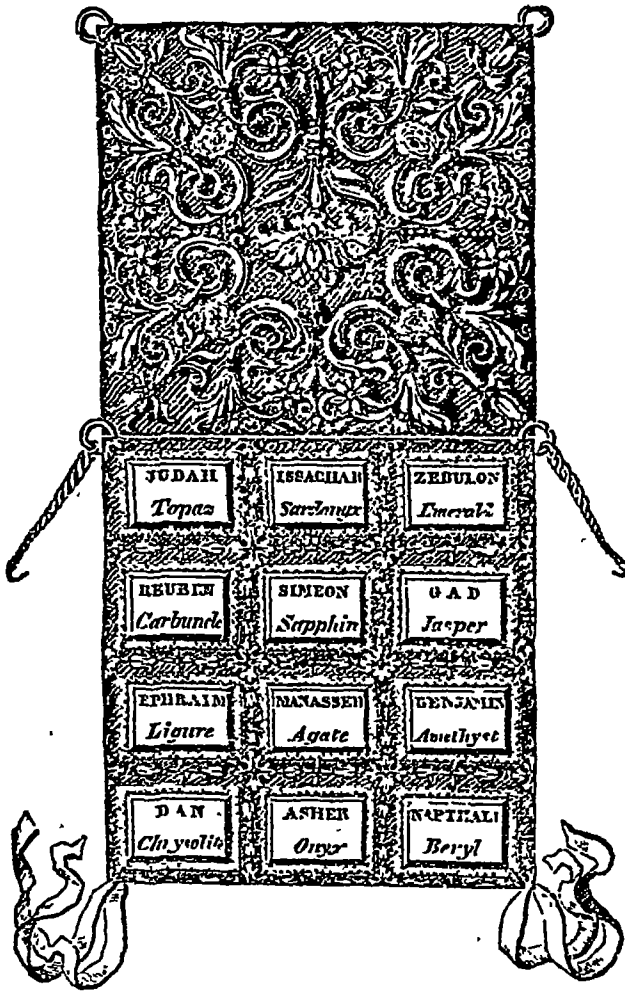
५। एक चपरास जो मलमल से बना था और उस पर बारह

रत जड़े हुए थे। वह सोने की सीकरियों से कन्धों पर बंधा था श्रोर वहां से हारोन की छाती पर झूला करता था॥

६। एक उज्जल टोपी जिसे लोग मुकुट कहते थे। मुकुट के श्रागे सोने का एक पत्र लगा था जिस पर यह बात खोदी हुई थी कि परमेश्वर के लिये पवित्र। इस का श्रभिप्राय यह था कि महायाजक श्रोर उस के वस्त्र श्रोर सब कुछ जो ईश्वर की सेवा से सम्बन्ध रखता था पवित्र था। हारोन को श्रति पवित्र रहना उचित था क्योंकि वह ईश्वर के लिये बलि चढ़ाया करता था॥

हारोन पांव में जूती नहीं पहिनता था पर बार २ पीतल के पात्र में हाथ पांव धोया करता था॥

हारोन के चार पुत्र थे। ईश्वर ने कहा कि बलि चढ़ाने के काम में वे श्रपने पिता की सहायता करेंगे। हारोन के पुत्रों को उज्जल वस्त्र पहिनना पड़ता था परन्तु उन के वस्त्र हारोन के वस्त्रों के समान सुन्दर श्रोर उत्तम न थे क्योंकि हारोन के पुत्र तो याजक थे श्रोर हारोन महायाजक था॥

तम्बू बनाने में बहुत समय लगा। यद्यपि सब लोग बड़े परिश्रम से काम करते थे तथापि बरस दिन के लगभग उस के तैयार होने में लगा। जब सब काम पूरा हो गया तब ईश्वर ने मूसा से कहा कि तम्बू खड़ा कर। मूसा ने तम्बू के सब तख़्ते खड़े करके भीत के ऐसा बनाया श्रोर उस के ऊपर कपड़े लगाये। फिर उस ने महापवित्र स्थान में नियम का सन्दूक रखा श्रोर बड़ी कोठरी में सोने की बेदी दीवट श्रोर मेज धर दिये। इस के पीछे उस ने श्रांगन की चारों श्रोर खंभे लगाये श्रोर उन पर परदे लटकाये श्रोर श्रांगन में पीतल की बेदी श्रोर पात्र रखे। जब सब हो चुका तब मूसा ने सब वस्तुश्रों पर सुगन्ध तेल डाला। इस प्रकार तेल डालने को श्रभिषेक करना कहते हैं। मूसा ने हारोन को उत्तम २ वस्त्र पहिनाये श्रोर उस के पुत्रों को उज्जल वस्त्र पहिनाकर उन पर भी तेल डालके श्रभिषेक किया॥

इतने में ईश्वर मेघ में उतर श्राया श्रोर श्रपने तेज से सारा तम्बू भर दिया। इस के द्वारा परमेश्वर ने लोगों को जनाया

कि वह तम्बू उस का निज स्थान था। जब इस्रायेलियों ने देखा कि ईश्वर उन के बीच में रहा करता है तब वे अति आनन्दित हुए। वह मेघ तम्बू पर देख पड़ता था और रात को आग के समान चमकता था। आहा ईश्वर ने उन पर कैसी दया प्रगट किई कि अपना तेज उन को दिखाया। ईश्वर ने चाहा कि वे भले होवें और मेरी आज्ञाओं का पालन करें॥

हे लड़को यद्यपि हम ईश्वर को नहीं देखते हैं तथापि वह हमारे अति निकट है और हम एक दिन उसे देखने का भरोसा रखते हैं। स्वर्ग उस तम्बू से अधिक उत्तम स्थान है। जो हम स्वर्ग को जावेंगे तो हारोन से बहुत अधिक तेजस्वी होंगे और सदा सर्वदा ईश्वर का मुंह देखकर अति सुख में रहेंगे॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

मैं इस्रायेल के सन्तानों के मध्य बास करूंगा और मैं उन का ईश्वर हूंगा। (यात्रा का २९ पर्ब्ब ४५ पद)॥

## ३० तीसवें पाठ के प्रश्न।

तम्बू के आंगन की चारों ओर क्या था?
आंगन में कौन २ बस्तु रखी गई थीं?
पीतल की बेदी पर कौन २ पदार्थ जलाये जाते थे?
जल के पात्र में कौन २ लोग अपने हाथ मुंह धोते थे?
कौन महायाजक हुआ?
बरस भर में एक ही बेर महायाजक कहां जा सकता था?
हारोन के बस्त्रों के क्या २ नाम थे?
हारोन के मुकुट पर कौन बात खोदी हुई थी?
भेंट चढ़ाने में कौन २ हारोन की सहायता करते थे?
वे किस प्रकार का बस्त्र पहिनते थे?
तम्बू को किस ने खड़ा किया?
मूसा ने किन पर तेल डाला?
उस रीति तेल डालने को क्या कहते हैं?

जब तम्बू ताना गया था तब उस पर क्या उतर आया?
इस्रायेलियों को आनन्दित होना क्यों उचित था?

---

## इकतीसवीं कथा।

### सीनई पर्व्वत को छोड़कर इस्रायेलियों का आगे बढ़ना।

ईश्वर का भजन करने और भेंट चढ़ाने के लिये जब इस्रायेलियों के पास एक स्थान हुआ तब वे नित्य २ परमेश्वर की सेवा करने लगे। हर दिन भोर को याजक लोग पीतल की वेदी पर एक मेम्ना चढ़ाते थे और तम्बू के भीतर सोने की वेदी पर धूप जलाते थे। उसी प्रकार सांझ को भी वे एक मेम्ना चढ़ाकर फिर धूप जलाते थे। बलि को जलाने के लिये परमेश्वर ने स्वर्ग से आग भेजी और याजक लोग उसे यहां लों संभालकर रखते थे कि वह कभी न बुती। दीवट में के सातों दीपक रात दिन तम्बू में जलते थे। हर बिश्राम के दिन याजक लोग सोने की मेज पर बारह टटकी रोटी रखते थे और बासी रोटी लेकर खा जाते थे। लोग एकट्ठे होकर तम्बू के आंगन में ईश्वर का भजन करते थे और हारोन को बलिदान चढ़ाते देखते थे। फिर उन के साम्ने हारोन तम्बू के भीतर जाकर धूप जलाता और उन के लिये ईश्वर से प्रार्थना करके जब तक बाहर आकर उन्हें आशीष नहीं देता था तब तक सब लोग उस की बाट जोहते रहते थे। हारोन अपना काम पूरा करके तम्बू के बाहर आता और हाथ फैलाकर कहता था कि परमेश्वर तुम्हें आशीष देवे और तुम्हारी रक्षा करे॥

हे प्यारे पढ़नेहारो स्वर्ग में प्रभु यीशु ख्रीष्ट हमारे लिये प्रार्थना करता है और एक दिन आकर हमें आशीष देगा। वही हमारा महायाजक है॥

तम्बू के बनाने में जितना समय लगा उतने समय सब इस्रायेली लोग सीनई पहाड़ के आसपास रहे परन्तु तम्बू के बनने पर ईश्वर का मेघ आगे बढ़ा। तब याजकों ने चांदी की दो

तुरही फूंकीं जिस से लोगों को जान पड़े कि अब इस स्थान से उठकर आगे चलना होगा। तुरही का शब्द सुनते ही लोगों ने अपने २ तम्बू और सब वस्तुओं को बांध बांधकर गदहों और ऊंटों पर लादा। भजन के तम्बू के भीतर पैठकर याजकों ने

हर एक वस्तु को नीले कपड़ों में लपेटा और कई एक मनुष्यों के कन्धों पर रखकर उन को आगे बढ़ने कहा परन्तु उन्हों ने नियम के सन्दूक को उस उत्तम परदे में लपेटकर आप ले लिया। सन्दूक की दोनों ओर सोने के दो डंडे लगे हुए थे वे उन डंडों को पकड़ सन्दूक को उठाकर ले चले और लोगों ने तम्बू के तख्ते खंभे और परदे आदि उठा लिये। याजक लोग नियम का सन्दूक लेकर आगे २ चले और सब लोग उन के पीछे हो लिये। परमेश्वर मेघ के द्वारा उन को मार्ग दिखाता था। जहां २ मेघ ठहरता वहां २ इस्रायेल के सन्तान डेरे डालते और भजन के तम्बू को खड़ा करते थे॥

इस रीति इस्रायेली लोग जंगल में चलते थे। देखो वे कैसे भाग्यवान थे। ईश्वर आप उन का अगुवा था। इस भलाई के लिये उन्हें सर्वदा ईश्वर की प्रशंसा करना उचित था। उस ने उन को खाने के लिये मन्ना और चटान से जल निकालकर पीने

को दिया और एक अति मनोहर देश में उन्हें ले जाने की प्रतिज्ञा किई। इन सब को छोड़कर और भी परमेश्वर ने कहा था कि मैं अपने पुत्र को तुम लोगों के लिये मरने दूंगा और इस से तुम्हारे पाप का प्रायश्चित्त होगा और इसी बात के स्मरण के लिये मेम्नों को मारकर वलि चढ़ाने की आज्ञा भी दिई॥

मुझे आशा है कि तुम लोग कभी न भूलोगे कि यीशु ने हमारे लिये किस रीति क्रूस पर अपना प्राण त्यागा और मैं इस बात का भी भरोसा रखती हूं कि उस मनोहर देश में जिसे स्वर्ग कहते हैं हम सब के सब जायेंगे। ईश्वर चाहता है कि हम वहां जावें और इस लिये प्रभु यीशु ख्रीष्ट हमारे निमित्त बिन्ती करता है॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

देखो ईश्वर का मेम्ना जो जगत के पाप को उठा लेता है। (योहन का १ पर्ब्ब २९ पद)॥

## ३१ इकतीसवें पाठ के प्रश्न।

प्रतिदिन भोर और सांझ को पीतल की वेदी पर क्या चढ़ाया जाता था?
किस वस्तु को याजकों ने कभी बुझने न दिया?
जब भेंट की रोटी सोने की मेज पर से उठाई जाती थीं तब कौन लोग उन्हें खाते थे?
भजन के तम्बू में महा पवित्रस्थान के भीतर कौन जा सकता था?
हम लोगों का महायाजक कौन है?
वह हमारे लिये स्वर्ग में क्या करता है?
तम्बू में लोग कहां प्रार्थना करते थे?
तम्बू बनाते समय इस्रायेली लोग कहां रहे?
तुरहियों को किस लिये याजकों ने फूंका?
जब मेघ चलने लगा तब याजकों ने क्या किया?
किन मनुष्यों ने नियम का सन्दूक उठाया?
हम किस मनोहर देश में जाने की आशा रखते हैं?

## बत्तीसवीं कथा।

### बारह भेदियों का वर्णन।

गिन्ती का १३ पर्व्व और १४ पर्व्व के १—४ पद तक।

जब इस्रायेली लोग कनान देश के अति निकट जा पहुंचे और उस देश के पर्व्वतों की चोटियां देखीं तब जानना चाहा कि वह कैसा देश है और किस प्रकार के लोग उस में बसते हैं इस लिये वे मूसा के पास आकर बोले हम चाहते हैं कि कई एक मनुष्यों को पहिले से भेजें और वे जाकर देखें कि वह कैसा देश है और फिर आकर हम से कहें। मूसा ने मनुष्यों को भेजने की इच्छा किई परन्तु जब तक उस ने ईश्वर से नहीं पूछा तब तक किसी को न भेजा। ईश्वर ने मूसा से कहा कि कनान में बारह मनुष्यों को भेज कि वे देश का भेद लेवें। तब मूसा ने इस्रायेल के सन्तानों में से बारह जनों को बुलाकर कहा कि तुम कनान में जाकर नगर २ में और पर्व्वतों पर फिरो और देखो कि देश में बहुत लोग हैं वा नहीं और वे बलवान वा निर्बल हैं। यह भी देखना कि उस देश में बहुत से पेड़ फल अनाज और घास आदि हैं वा नहीं और आते समय तुम वहां से कुछ फल साथ लेते आना कि हम देखें उस देश में कैसे फल उत्पन्न होते हैं॥

यह सुनकर बारहों मनुष्य चल निकले। वे बारह भेदिये कहलाते थे। वे पर्व्वतों पर और जल के किनारे सब स्थानों में घूमे और देखा कि अनेक सुन्दर और मनोहर बारियां लगी हैं खेत अनाज से भरे हैं तराई में बहुत सी भेड़ें और बकरियां हैं और पेड़ फलों से लदे हुए हैं और उन के बड़े २ खोढ़रों में इतनी मधुमक्खियां लगी हैं कि मधु भूमि पर टपक रहा है। यह सब देखकर वे अत्यन्त सन्तुष्ट हुए परन्तु उन्हों ने ऊंची भीतों से घिरे हुए बड़े २ नगर भी देखे जिन में बलवान लोग रहते थे और उन के बीच में बहुतेरे ऐसे लम्बे मनुष्य थे कि उन्हें देखने से डर लगता था। निदान वे भेदिये एक नाले के पास आये। उस के तट पर एक दाखलता थी जिस में बहुत से पक्के २ फल लगे थे। उस लता में

दाख का एक गुच्छा बहुत बड़ा था और भेदियों ने आपस में कहा कि आओ हम इसे ले चलें और इस्रायेलियों को दिखावें । वह गुच्छा ऐसा भारी था कि एक मनुष्य उसे न उठा सका इस लिये उन्हों ने एक लाठी में उसे बांधा और दोनों ओर से एक २ मनुष्य ने उसे पकड़कर उठा लिया । उन को छोड़ और जो दश मनुष्य थे उन्हों ने अनार गूलर आदि फल उन के लिये लेकर सब इस्रायेलियों की छावनी पर लौट आये ॥

चालीस दिन तक कनान देश में घूम घामकर भेदियों ने सब स्थानों को देख लिया और आकर इस्रायेलियों को दाख का सुन्दर गुच्छा दिखाया । वैसे अच्छे फल जंगल में न थे । भेदियों ने कहा कि कनान अति उत्तम देश है । वह दूध और मधु से भरा है परन्तु हम उस में नहीं जा सकते क्योंकि वहां के लोग ऊंची भीतों से घेरे हुए नगरों में रहते हैं । वे बलवान् हैं और उन के बीच में कितने ऐसे लम्बे लोग भी हैं कि उन को देखने से भय होता है । जब हम ने उन्हें देखा तब ऐसा अनुमान किया कि हम उन के आगे फनगे के समान हैं ॥

यह संदेशा पाकर इस्रायेली लोग निपट डरे और रो रोकर कुड़कुड़ाने लगे । उन सभों ने एक साथ होकर कहा कि हाय २ वहां जाने से हम मारे जावेंगे । यह कहना तो बड़ा बुरा था क्योंकि परमेश्वर ने प्रतिज्ञा किई थी कि कनान में जाने के लिये मैं आप तुम लोगों की सहायता करूंगा और जो कुछ ईश्वर कहता है उस पर विश्वास न करने से महापाप होता है ॥

भेदियों के बीच में दो मनुष्य अति धर्म्मी थे । उन के नाम यिहोशुआ और कालिब थे । उन्हों ने लोगों को डराना न चाहा । कालिब ने खड़ा होकर कहा कि चलो हम लोग उस देश पर चढ़ाई करें क्योंकि वहां के रहनेवालों को हम जीत सकेंगे परन्तु और दश जनों ने कहा कि नहीं हम उन्हें न जीत सकेंगे क्योंकि कनानी लोग हम से अधिक बलवान् हैं । वे दश भेदिये बड़े दुष्ट थे क्योंकि वे जानते थे कि ईश्वर ने कनान के रहनेवालों को हराने के लिये इस्रायेलियों की सहायता करने की प्रतिज्ञा किई थी इस निमित्त भेदियों को उचित था कि

लोगों को परमेश्वर पर भरोसा करने कहें। इस्रायेलियों ने रो रोकर सारी रात बिताई और मूसा और हारोन पर क्रोध किया क्योंकि उन दोनों ने उन्हें मिसर से निकाला था। इस्रायेली लोग बोले कि हाय २ क्या अच्छा होता यदि मिसर में अथवा जंगल में हमारी मृत्यु होती। कनान के रहनेवाले खड्ग से हमें मारेंगे और हमारी स्त्रियों को बालबच्चे समेत मार डालेंगे। ईश्वर से सहायता मांगने के पलटे वे सारी रात ऐसी २ बातें कहते रहे और अन्त को बोले कि आओ हम सब एकट्ठे होकर मिसर को लौटें। उन्हों ने जाना कि मूसा हम लोगों को मिसर में फिर न ले जायगा इस लिये वे बोले कि आओ हम दूसरे किसी को अपना प्रधान बनावें तो वह हमें मिसर को ले जावेगा॥

इस्रायेलियों का यह बचन सुनकर मूसा और हारोन दोनों बड़े शोकित हुए और औंधे मुंह भूमि पर गिरे क्योंकि इस्रायेल के सन्तान बड़े दुष्ट थे। इतने में यिहोशुआ और कालिब ने खड़े होकर लोगों से कहा कि हम ने देखा है यह देश अति उत्तम है और जो हम ईश्वर पर भरोसा रखें तो युद्ध करने में वह हमारी सहायता करेगा। कनानी लोग ईश्वर को नहीं पहिचानते हैं और वह उन का सहारा न करेगा इस हेतु हम को उन से न डरना चाहिये। इस्रायेलियों ने यिहोशुआ और कालिब की बातें न मानीं परन्तु वे पत्थर फेंक फेंककर उन्हें मार डालने में तैयार हुए॥

उसी क्षण तम्बू पर ईश्वर का तेज प्रगट हुआ और उस से लोगों को जान पड़ा कि परमेश्वर उन पर क्रोधित हुआ है। मूसा भूमि पर औंधा मुंह होकर पड़ा था परमेश्वर ने उस से कहा कि ये लोग कहां तक मुझे चिढ़ावेंगे मैं इन्हें एक मरी से नष्ट करूंगा। मूसा ने लोगों के लिये परमेश्वर से बिन्ती कर कहा कि हे प्रभु इन लोगों का महापाप क्षमा कर। तू ने कई बार इन पर क्षमा किई है अब भी कर क्योंकि तुझ में दया अधिक है। मूसा की बिन्ती को परमेश्वर ने मान लिया और उत्तर दिया कि अच्छा मैं ने इन का पाप क्षमा किया मैं अब इन्हें नष्ट न करूंगा परन्तु कनान में भी न जाने दूंगा ये इसी

जंगल में चालीस बरस तक घूमते रहेंगे और मर जायेंगे। पीछे से इन के सन्तान बड़े होकर कनान में जावेंगे और इन में से केवल दोही मनुष्य अर्थात् यिहोशुआ और कालिब कनान में प्रवेश करेंगे॥

ईश्वर ने जो कुछ कहा था सो मूसा ने लोगों को सुनाया। वे अत्यन्त शोकित हुए और कुड़कुड़ाये। थोड़े समय के बीतने पर वे दशों दुष्ट भेदिये बीमार होकर मर गये परन्तु यिहोशुआ और कालिब दोनों जीते रहे। हाय २ जब इस्रायेलियों को मनोहर कनान देश में जाने के पलटे जंगल में मरना पड़ा तब वे कैसे दुःखित हुए होंगे परन्तु वे मृत्यु के योग्य थे क्योंकि ईश्वर के कहने पर उन्हों ने प्रतीति न किई थी॥

परमेश्वर ने कहा है कि जो कोई मांगेगा उसे पवित्र आत्मा मिलेगा और वह स्वर्ग में रहने पावेगा। हे प्यारे बच्चो क्या तुम इस प्रतिज्ञा पर बिश्वास नहीं करते। यदि करते हो तो परमेश्वर के पवित्र आत्मा को पाने के लिये तुम ईश्वर से प्रार्थना करो परन्तु जो तुम स्वर्ग के विषय में चिन्ता न करोगे और पवित्र आत्मा को पाने के लिये ईश्वर से बिन्ती न करोगे तो वह कोप कर तुम से कहेगा कि तुम कभी स्वर्ग में आने न पाओगे॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

पवित्र आत्मा कहता है कि आज जो तुम उस का शब्द सुनो तो अपने मन कठोर मत करो जैसे चिढ़ाव में और परीक्षा के दिन जंगल में हुआ। (इब्रियों को ३ पर्ब्ब ७—८ पद)॥

## ३२ बत्तीसवें पाठ के प्रश्न।

मूसा ने बारह मनुष्यों को कनान में पहिले से क्यों भेजा?
वे कौन २ वस्तु साथ लेकर लौट आये?
भेदियों ने कनान और वहां के रहनेवालों के बिषय में क्या २ कहा?
दो धर्म्मी भेदियों के क्या २ नाम थे?
इस्रायेलियों का कनानियों से डरना क्यों उचित न था?

इस्रायेलियों का कुड़कुड़ाना सुनकर मूसा ने क्या किया ?
ईश्वर ने उन्हें किस प्रकार का दण्ड दिया ?
क्या ईश्वर ने कहा था कि उन के लड़के बाले भी जंगल में मरेंगे ?
उन में से कितने मनुष्यों को परमेश्वर ने कनान में जाने दिया ?
इस्रायेलियों को कितने बरस तक जंगल में घूमना पड़ा ?

---

## तेंतीसवीं कथा।

### मूसा और हारोन के पाप का वृत्तान्त।

गिन्ती का २० पर्व्व।

इस्रायेली लोग जंगल में घूमते २ एक ऐसे स्थान में आ निकले जहां कुछ पानी न था और जैसे जब वे कुछ दुःख में पड़ते थे तब मूसा और हारोन से झगड़ते थे वैसेही अब भी झगड़ने लगे। वे बोले कि हाय हाय जो हम इस के पहिले मरते तो क्या भला होता। तुम किस निमित्त हमें मिसर से निकालकर इस जंगल में लाये। यहां गूलर दाख आदि कोई फल नहीं है और अब पीने को जल भी नहीं मिल सकता है॥

वे तो भूल गये थे कि अपने पाप के कारण अब लों हमें जंगल में रहना पड़ा क्योंकि यदि वे ईश्वर की बात मानते तो अब हर एक जन कनान देश में अपने २ पेड़ तले बैठ बैठकर चैन से फल खाते॥

इस प्रकार लोगों का कुड़कुड़ाना सुनकर मूसा और हारोन दोनों बड़े व्याकुल हुए और तम्बू के सन्मुख भूमि पर औंधे मुंह गिरे। परमेश्वर ने उन से कहा कि मूसा की छड़ी लेकर तुम दोनों चटान के पास जाओ और लोगों को निकट बुलाकर उन के साम्हे चटान से कहो कि वह पानी निकाले तब चटान से पानी निकलेगा जिसे मनुष्य और पशु पीके ठंढे होंगे। मूसा

की छड़ी नियम के सन्दूक के पास रखी जाती थी। ईश्वर की आज्ञा पाकर मूसा और हारोन ने वहां से छड़ी उठाई और लोगों को निकट बुलाकर कहा कि देखो हम क्या करते हैं। तब मूसा ने बड़े क्रोध से अपना हाथ उठाकर छड़ी से उस चटान पर दो बार मारा और पानी की बड़ी धारा बह चली। फिर मूसा और हारोन ने लोगों से कहा कि अरे उपद्रवी लोग क्या अब हम पानी लाकर तुम्हारे मुख में डालेंगे॥

मूसा और हारोन ने चटान को मारने और क्रोध करके लोगों से यों बोलने में भला काम नहीं किया क्योंकि ईश्वर ने उन्हें चटान पर मारने की आज्ञा नहीं दिई थी वरन यह बोला था कि वे चटान को पानी निकालने कहें। मूसा और हारोन क्रोध के वश हुए थे इस कारण परमेश्वर उन पर अप्रसन्न हुआ। यद्यपि परमेश्वर मूसा और हारोन को बहुत प्यार करता था और अन्त में उन का पापमोचन करके उन्हें स्वर्ग में रहने दिया तथापि इस पाप का दण्ड उन को यहां भोगना पड़ा। ईश्वर ने मूसा और हारोन से कहा कि तुम ने मेरी आज्ञा का आदर न किया इस लिये तुम कनान देश में नहीं जाने पाओगे पर इसी जंगल में मरोगे॥

हाय हाय यह कैसा भारी दण्ड था। मनोहर कनान देश देखने को मूसा बहुत चाहता था और उस की बड़ी इच्छा थी कि इस्रायेलियों को अपने २ घर और बारियों में सुख और चैन से रहते देखे और जहां इब्राहीम ने वेदी बनाकर परमेश्वर का भजन किया था उस स्थान पर दृष्टि करे पर अब उस को जंगल में मरना पड़ा। मूसा ने ईश्वर से बहुत विन्ती किई कि मुझे यह दण्ड न मिले तौभी ईश्वर ने न मानी और कहा कि बस इस विषय में और मत बोलो। तब मूसा को निश्चय हुआ कि मुझे यह दण्ड सहना पड़ेगा॥

इस जगत के सब लोगों में से मूसा अधिक नम्र था। इस्रायेली लोग बार २ अकृतज्ञ होकर उस पर कुड़कुड़ाये परन्तु वह कुछ न बोला तौभी अन्त को वही मूसा क्रोध के वश में हुआ। तुम को समझना चाहिये कि ईश्वर क्रोध से बड़ा घिन करता

है। प्रभु यीशु ख्रीष्ट ने कभी क्रोध का एक वचन नहीं कहा और ईश्वर चाहता है कि हम उसी के समान नम्र होवें। हे प्यारे लड़को तुम नम्र होओ। यदि कोई लड़का तुम्हें थपेड़ा मारे अथवा धक्का देवे तो तुम उस के पलटे फिर थपेड़ा उसे न मारो और न धक्का दो। यदि कोई बालक तुम्हारा स्थान ले लेवे तो तुम नम्रता से कहो कि मेरा स्थान छोड़ो और जो वह न छोड़े तो तुम चुपचाप दूसरे स्थान पर बैठ जाओ। जब कोई तुम्हें गाली दे तब तुम धीरज धरकर सह लो। नम्र लड़के के ये सब काम हैं। हे प्रिय पढ़नेहारो परमेश्वर तुम्हें अति नम्र कर सकता है तुम यीशु के समान नम्र स्वभाव पाने की प्रार्थना ईश्वर से करो॥

यद्यपि मूसा बहुत नम्र था तथापि वह एक बेर क्रोध के वश हुआ और उसे और हारोन को उस पाप का दण्ड देने में ईश्वर ने निर्दयता का काम नहीं किया क्योंकि वह निर्दय कभी नहीं हो सकता। उस ने इस्रायेलियों को दिखाना चाहा कि जो कोई उस की आज्ञा उल्लंघन करता है उसे अवश्य दण्ड मिलता है इस लिये उस ने अपने प्रिय सेवक मूसा को भी न छोड़ा॥

इस के पीछे ईश्वर की इच्छा से हारोन का मरणकाल आया और ईश्वर ने मूसा से कहा कि तू हारोन और उस के पहिलौठे पुत्र को साथ लेकर पहाड़ पर चढ़ और वहां हारोन के वस्त्र उतारकर उस के बेटे को पहिना क्योंकि हारोन इस पर्व्वत पर मरेगा। ईश्वर ने हारोन के पहिलौठे पुत्र को चुना था कि वह अपने पिता हारोन के स्थान में महायाजक होवे इस लिये उसे अपने पिता के वस्त्रों को पहिन्ने की आज्ञा मिली। ईश्वर की बात सुनकर हारोन ने महायाजक के उत्तम २ वस्त्र पहिने अर्थात् नीला वस्त्र जिस के नीचे के किनारे पर सोने की घंटियां लगीं थीं अफूद चमकता हुआ चपरास और उज्जल मुकुट जिस के आगे सोने का पत्र लगा था। ये सब पहिनकर हारोन मूसा और अपने पुत्र के साथ पहाड़ पर चढ़ने लगा और सब लोग उन्हें देखते रहे। हारोन ने जाना कि अब मैं इस पर्व्वत पर से और न उतरूंगा तौभी उस ने ईश्वर की आज्ञा मान लिई और धीरज से दण्ड सहा॥

जब वे पर्व्वत की चोटी पर पहुंचे तब मूसा ने अपने भाई के सुन्दर वस्त्र उतारकर उस के पुत्र के पहिनाये। फिर पीछे से हारोन ने अपने भाई से बिदा मांगी ओर वहां मर गया। हारोन की लोथ पहाड़ की चोटी पर छोड़ मूसा ओर हारोन का पुत्र दोनों एक साथ पहाड़ पर से नीचे उतरे। इतने में इस्रायेलियों ने जाना कि हारोन मर गया ओर उस का बेटा महायाजक हुआ है॥

हारोन का आत्मा स्वर्ग में गया क्योंकि ईश्वर ने उस का पाप क्षमा किया था। जो हारोन कोप न करता तो वह जीता रहता ओर कनान को देखता। मूसा जानता था कि मैं भी जल्दी मरूंगा पर ईश्वर ने ओर कुछ दिन तक उसे जीता रखा॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

हे परमेश्वर मेरे होंठों के द्वार की रक्षा कर। (१४१ गीत का ३ पद)॥

## ३३ तेंतीसवें पाठ के प्रश्न।

जब इस्रायेलियों ने पानी न पाया तब क्या किया ?
ईश्वर ने मूसा को चटान से किस रीति पानी निकालने कहा ?
चटान से बात कहने के पलटे मूसा ने क्या किया ?
चटान के पास खड़े होकर मूसा ओर हारोन ने क्या कहा ?
ईश्वर ने उन्हें क्या दण्ड दिया ?
मूसा की बिन्ती सुनकर क्या ईश्वर ने उसे दण्ड न दिया ?
मूसा का स्वभाव कैसा था ?
जब नम्र लड़के से कोई अन्याय करता है तो वह उस के साथ कैसा व्यवहार करता है ?
जब हारोन मरने के लिये पहाड़ पर चढ़ा तब ओर कौन २ उस के साथ थे ?
हारोन किस प्रकार के वस्त्रों को पहिनकर पहाड़ पर गया ?
उन वस्त्रों को उतारकर मूसा ने किस को पहिनाया ?
हारोन के मरने पर कौन महायाजक हुआ ?

## चौंतीसवीं कथा।

### पीतल के सांप का वर्णन।

गिन्ती का २१ पर्ब्ब ४ से ९ पद तक।

इस्रायेल के सन्तान लोग जंगल में घूमते २ जब कनान के निकट पहुंचते तब मेघ दूसरी ओर घूम जाता और उन को उस के पीछे हो लेना पड़ता था इस कारण वे अत्यन्त असन्तुष्ट रहते थे क्योंकि उत्तम कनान देश में जाने को वे बहुत चाहते थे। जो वे बन में इतना अपराध न करते तो इस के बहुत दिन पहिले कनान में जाने पाते पर उन्हें दण्ड देनेही के लिये ईश्वर ने कनान में नहीं जाने दिया। उन्हों ने धीरज धरकर यह दण्ड न सहा किन्तु ईश्वर और मूसा दोनों पर वे कुड़कुड़ाया करते थे और उन्हों ने मूसा से कहा कि तुम क्यों हमें मिसर से निकाल लाये हो। हम को इस जंगल में मरना पड़ेगा क्योंकि यहां अन्न जल कुछ नहीं है और हम यह मन्ना नित्य २ नहीं खा सकते हैं॥

मन्ना तो अति उत्तम आहार था और दूतों के खाने के योग्य था। वह निर्मल उज्जल और मधु सा मीठा था। वह अन्न के समान भूमि से नहीं उपजता था परन्तु स्वर्ग से बरसता था तौभी उस के खाने से अकृतज्ञ इस्रायेलियों का जी उबठ गया॥

अब की बेर ईश्वर ने उन्हें बड़ा भयानक दण्ड दिया। उस जंगल में बहुत से हिंसक जन्तु और विषधर सांप और बिच्छू आदि रहते थे। परमेश्वर ने उन से इस्रायेलियों की रक्षा किई थी परन्तु अब उस ने आप उन के बीच में ऐसे विषधर सांप भेजे कि जिन के डसने से अंग आग के समान जलता था। वे सब दौड़ दौड़कर तम्बूओं में गये और इस्रायेली लोग किसी रीति से उन्हें रोक न सके क्योंकि यदि वे ऊंचे स्थानों पर भागते तो सांप भी वहां जाते और अति छोटे स्थान में से भी आ जा सकते थे। सांपों ने बहुत लोगों को डसा और वे अत्यन्त पीड़ित हुए और बहुत दुःख भोगकर मरे। कोई लेप न था जिस से सांप का काटा अच्छा होता और न कोई औषध था

जिस से डसे हुए लोग चंगे होते थे इस कारण जिन २ लोगों को सांपों ने डसा था वे सब के सब मृत्यु के बश हुए ॥

इस पर इस्रायेलियों ने मूसा के पास आकर कहा कि हम ने पाप किया है क्योंकि हम ने परमेश्वर के और आप के विरुद्ध कहा है पर अब परमेश्वर से प्रार्थना कीजिये कि वह हम लोगों के बीच से इन सांपों को दूर करे। देखिये ये हर एक जन के तम्बू में घुस गये हैं। मूसा बड़ा दयालु और क्षमावान था इस हेतु उस ने यह कठोर उत्तर उन्हें नहीं दिया कि तुम अपने पाप का फल भोगने के योग्य हो परन्तु उन के लिये ईश्वर से प्रार्थना किई। परमेश्वर ने मूसा की प्रार्थना सुनी और मूसा ने जो कुछ चाहा था उस से भी अधिक ईश्वर ने इस्रायेलियों के लिये किया क्योंकि उस ने केवल सांपों को उन के बीच से दूर नहीं किया वरन जो लोग सांपों से डसे गये थे उन के चंगे होने का उपाय भी मूसा को बता दिया ॥

परमेश्वर ने डसे हुए लोगों को औषध देने अथवा घाव पर लेप लगाने तो मूसा से नहीं कहा था पर जो कुछ करने की आज्ञा दिई थी उसे सुनकर तुम लोग बड़े अचम्भित होगे। ईश्वर ने मूसा से कहा कि तू पीतल का एक सांप बना और उसे एक लाठे पर लटकाकर डसे हुए लोगों को उसे देखने कह।

जो कोई उसे देखेगा वह चंगा हो जायगा। देखो चंगा होने का यह कैसा अद्भुत उपाय था॥

मूसा ने ईश्वर की आज्ञा के अनुसार कुछ पीतल लेकर आग में गलाया और उस से एक बिषधर सांप की मूर्त्ति बनाकर लाठे में लगाके उठाया कि सब लोग उसे देखें। फिर मूसा ने डसे हुए लोगों से कहा कि तुम लोग जल्द इस सांप को देखो और चंगे होओ। सांपों ने जितने मनुष्यों को काटा था वे धीरे २ तम्बुओं के द्वारों पर आये और ज्योंही आंखें उठाकर पीतल के सांप को देखा त्योंही उन की पीड़ा मिट गई और वे चंगे होकर चलने फिरने और ईश्वर की स्तुति करने लगे॥

मैं यह नहीं जानती हूं कि हर एक पीड़ित मनुष्य ने उस सांप पर दृष्टि किई वा नहीं। क्या जाने कई एक जन बोले कि पीतल के सांप को देखने से हम क्योंकर चंगे होंगे। हम उसे न देखेंगे। यदि कोई ऐसा बोला तो वह निश्चय मर गया परन्तु मुझे आशा है कि उन सभों ने उस सांप को देखा होगा और चंगे हो गये होंगे॥

हे प्यारे बालको एक सांप ने हमारे आत्माओं को डसा है। वह पुराना सांप शैतान है। उसी ने हमारे आत्माओं को डसा है अर्थात् हमारे स्वभाव को पापी बनाया है। तुम ने सुना है कि जब हव्वा और आदम अदन की बारी में रहते थे तब शैतान ने क्योंकर सांप का रूप धर उन के पास जाकर उन्हें दुष्ट कर दिया था। हम लोग भी दुष्ट हैं क्योंकि हम हव्वा और आदम के सन्तान हैं और जैसे शैतान ने उन्हें बहकाया था वैसे ही हम को भी बहकाता है। अब सांप से डसे हुए इन आत्माओं को कौन चंगा कर सकता है। कौन हमें अनन्त मृत्यु से बचा सकता है। कौन हमें अनन्त जीवन दे सकता है। केवल यीशु। यीशु अपना आत्मा हमारे अन्तःकरण में भेजकर हमें चंगा अर्थात् पवित्र कर सकता है॥

जैसे पीतल का सांप लाठे पर लटकाया गया था वैसे ही यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया अब चाहिये कि हम यीशु पर दृष्टि करें। यीशु पर दृष्टि करने का अर्थ यह नहीं है कि हम अपनी

आंखें से यीशु के क्रूश पर चढ़ा देखें क्योंकि उस्से कुछ लाभ न होगा। यीशु के मरते समय अनेक दुष्टों ने खड़े २ उसे क्रूश पर देखा था परन्तु त्राण न पाया। उस पर दृष्टि करने का अर्थ यह है कि उस का ध्यान और प्यार करना। जब तुम सोचते हो कि यीशु ने हम लोगों के निमित्त अपना प्राण दिया है और जब इस बात से तुम्हारे हृदयों में उस पर प्रेम उत्पन्न होता है तब तुम सचमुच अपने ज्ञान की आंखें से उस पर दृष्टि करते हो। हे प्यारे लड़को मैं भरोसा करती हूं कि तुम विश्वास से यीशु पर दृष्टि करते हो कि पाप शैतान और नरक से तुम्हारा निस्तार हो॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचा किया उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र ऊंचा किया जाय इस लिये कि जो कोई उस पर विश्वास करे सो नाश न होय परन्तु अनन्त जीवन पावे। (योहन का ३ पर्ब्ब १४ और १५ पद)॥

## ३४ चौंतीसवें पाठ के प्रश्न।

बहुत बरस तक जंगल में रहने के कारण इस्रायेलियों ने किस प्रकार व्यवहार किया ?

उन्हें दण्ड देने के लिये ईश्वर ने उन के बीच में कौन जन्तु भेजा ?

डसे हुए मनुष्यों के चंगे होने के लिये ईश्वर ने मूसा को कौन उपाय बताया ?

हमारे आत्माओं को नष्ट होने के योग्य किस ने किया है ?

मनुष्य को पापी करने का यत्न शैतान ने पहिले कब किया था ?

हमारे आत्माओं की रक्षा के निमित्त हमें किस पर दृष्टि करना चाहिये ?

क्या हम इन आंखें से यीशु पर दृष्टि कर सकते हैं ?

यीशु पर दृष्टि करने का अर्थ क्या है ?

# पैंतीसवीं कथा।

## मूसा की मृत्यु का वृत्तान्त।

विवाद के ३१ पर्ब्ब से ३४ पर्ब्ब तक।

अब इस्रायेली लोग कनान में जाने पर थे और मूसा के मरने का समय आ पहुंचा। जंगल में रहते समय मूसा ने पांच पुस्तक रचे और उन में उस ने लिखा कि परमेश्वर ने किस रीति से जगत को बनाया और आदम ने उस बर्जित फल को किस प्रकार खाया। काइन के हाथ से हाबिल के मारे जाने का वर्णन नूह इब्राहीम इसहाक याकूब भले यूसफ और उस के दुष्ट भाइयों का वृत्तान्त भजन के तम्बू और मिसर देश की दश मरियों की कथा अपने बचपन और पाप के वर्णन और दश आज्ञा इत्यादि सब मूसा के उन पांच पुस्तकों में लिखे हैं। हम इन पुस्तकों को पढ़ सकते हैं क्योंकि ये धर्म्मपुस्तक के अंश हैं॥

जब परमेश्वर ने इस जगत की सृष्टि किई थी तब मूसा का जन्म भी न हुआ था तो जो कुछ उस ने कभी नहीं देखा उन का वर्णन वह किस प्रकार कर सका क्या किसी मनुष्य ने मूसा से कहा था कि ईश्वर ने जगत को किस रीति बनाया था। नहीं ऐसा नहीं क्योंकि जगत के बनाते समय कोई मनुष्य नहीं था। ईश्वर को छोड़ और कोई मूसा को ये सब बातें नहीं जता सकता था इस लिये ईश्वर ने आप उसे जताया। परमेश्वर ने अपने आत्मा के द्वारा मूसा को बताया अर्थात् जब मूसा लिखता था तब ईश्वर का आत्मा उस के मन में उन सब बातों का ज्ञान उत्पन्न करता था इस हेतु उस ने सब ठीक २ लिखा॥

जैसे पुस्तक आजकल बनाये जाते हैं वैसे पुस्तक मूसा ने नहीं बनाये परन्तु उस ने चमड़े पर लिखा था। वे लेख्यपत्र कहलाते थे और कपड़े के थान के समान लपेटे रहते थे। जब कोई पढ़ना चाहता था तब उन्हें उधेड़ २ कर पढ़ता था॥

मूसा ने उन पांचों पुस्तकों को समाप्त करके याजकों को बुलाया और उन के हाथ में सौंपकर कहा कि तुम इन को सम्भालकर

रखना और क्या पुरुष क्या स्त्री क्या लड़के सब इस्रायेलियों को पढ़कर सुनाना कि वे सब के सब ईश्वर की आज्ञाओं को जानें॥

मूसा ने जाना कि मैं इस्रायेलियों को शीघ्र छोड़ूंगा इस लिये उस ने बहुत चाहा कि मेरे मरने के पीछे कोई भला मनुष्य इन का प्रधान बनाया जावे। यद्यपि इस्रायेलियों ने मूसा को बहुत दुःख दिया था तथापि मूसा उन्हें प्यार करता था और उस ने उन के लिये परमेश्वर से बिन्ती किई कि उन पर एक भला प्रधान ठहराया जावे। ईश्वर ने मूसा की बिन्ती सुनी और उस्से कहा कि मैं ने एक जन को चुना है जो तेरे मरने के पीछे इस्रायेलियों का प्रधान होगा। वह मनुष्य जिसे ईश्वर ने चुना था यिहोशुआ था और वह उन दो धर्म्मी भेदियों में से एक था। ईश्वर के काम करने में उस ने चालीस बरस लों मूसा की सहायता किई थी और मूसा ने उसे अनेक अच्छी शिक्षा दिई थी इस लिये जब मूसा ने सुना कि मेरे मरने के पीछे यिहोशुआ इस्रायेलियों का प्रधान होगा तब अति प्रसन्न हुआ और यिहोशुआ को बुलाकर कहा कि इस्रायेलियों को कनान में ले जाने का काम ईश्वर तुझे देगा। तू अति साहसी हो क्योंकि वहां के दुष्ट लोगों से तुझे लड़ाई करना पड़ेगा। तू मत डर क्योंकि ईश्वर तेरी सहायता करेगा और तुझे कभी नहीं छोड़ेगा॥

मूसा की इच्छा हुई कि अपने मरने के पहिले वह इस्रायेलियों से कुछ बात करे और उन्हें धर्म्मी होने का उपदेश देवे इस लिये उस ने लोगों को एकट्ठे बुलाकर कहा कि मैं तो बहुत बूढ़ा हो गया हूं। मैं आज एक सौ बीस बरस का हुआ और अब मेरा मरणकाल निकट आया है। मैं ने पाप किया था इस कारण मैं कनान में नहीं जा सकता हूं परन्तु यिहोशुआ तुम्हें वहां ले जावेगा। तुम ईश्वर की आज्ञा पालन करने का यत्न करो और उस पर प्रेम रक्खो वह तुम्हें आशीष देगा पर जो तुम प्रतिमा-पूजा करोगे वा और कोई पाप करोगे तो वह तुम्हें निश्चय दण्ड देगा॥

ईश्वर ने मूसा से कहा था कि लोगों को एक गीत सिखा जो तेरे मर जाने के पीछे वे बार बार गा सकें। इस्रायेलियों पर

ईश्वर ने जो जो अनुग्रह किये थे उन का बखान उस गीत में था ॥

हे प्रिय बालको ईश्वर के विषय में बहुत से उत्तम उत्तम गीत तुम्हें इस लिये सिखाये जाते हैं कि तुम ईश्वर का अधिक ध्यान और प्रेम करो। कितने लड़के भोर को नींद से जागते ही गीत गाते हैं ॥

मूसा ने लोगों को यह गीत सिखाकर आशीष दिई और उन से बिदा हुआ ॥

इन सब बातों के पीछे परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू उस ऊंचे पहाड़ पर अकेला चढ़। मैं कनान में तुझे न जाने दूंगा परन्तु उस पर्ब्बत की चोटी पर से वह मनोहर देश तुझे दिखाऊंगा। जब मूसा ने सुना कि यद्यपि मैं कनान में न जाने पाऊंगा तथापि मैं उसे देखूंगा तब वह आनन्दित हुआ और अकेला पहाड़ पर चढ़ गया। वह बहुत वृद्ध तो था पर जैसे वह जवानी में चल सकता था और देख सकता था वैसे मृत्युकाल तक भी रहा। वह लिखता पढ़ता और दूर दूर की वस्तुओं को देख सकता था क्योंकि न उस की आंखें धुंधलाईं और न उस का बल घटा था परमेश्वर ने उसे निर्ब्बल वा अन्धा नहीं होने दिया॥

मूसा को पहाड़ पर चढ़ते देखकर इस्रायेली लोग बहुत शोकित हुए होंगे क्योंकि उन्हों ने जाना था कि फिर हम कभी उसे न देखेंगे। वे बहुत पछताये होंगे इस लिये कि मूसा उन का बड़ा दयालु मित्र था और उन्हों ने उसे बारबार दुःख दिया था और चटान के पास उसे चिढ़ाया था ॥

मूसा ने पहाड़ पर चढ़कर कनान देश को बहुत दूर से देखा। वह अति सुन्दर भूमि थी वहां नदियां थीं और हरी हरी घासों से भरे हुए अनेक पहाड़ थे अनाज से भरेपुरे खेत और फलों से लदे हुए बड़े बड़े पेड़ थे। ये सब देखकर मूसा अत्यन्त प्रसन्न हुआ कि इस्रायेली लोग ऐसे उत्तम देश में रहकर ईश्वर की सेवा करेंगे ॥

मूसा उसी पर्ब्बत पर मरा वहां उस का कोई भाई बन्धु न था जो उस के मरने के समय की बात सुनता वा उस की देह को

कफनाकर गाड़ देता पर मूसा के शरीर को जंगली जन्तुओं और पखेरुओं से खाये जाने के लिये परमेश्वर ने उस पर्व्वत की चोटी पर न छोड़ा बरन आप उसे किसी गुप्त स्थान में गाड़ दिया। जो जो दूत मूसा के आत्मा को स्वर्ग में ले गये थे उन को छोड़ और कोई नहीं जानता है कि मूसा की कबर कहां है। परमेश्वर के सन्तानों पर दूत पहरा देते हैं। पिछले दिन जब तुरही बजेगी तब मूसा उस गुप्त कबर से जी उठेगा और आकाश के तारों के तुल्य चमकेगा॥

इस प्रकार मूसा की मृत्यु हुई। मनुष्यों में वही एक था जिस के साम्ने परमेश्वर बात करता था अर्थात् 'जैसे मनुष्य अपने मित्र से किया करता है वैसे ईश्वर ने मूसा से बातें किईं थीं। मूसा का वृत्तान्त अब और मैं न लिखूंगी यदि तुम स्वर्ग में जाओगे तो तुम उसे देखोगे। तुम स्मरण करते होगे कि मूसा मिसर देश का राजकुमार हो सकता था। राजा फिरऊन की बेटी ने उसे जल में डुबाये जाने से बचाया था और उत्तम उत्तम वस्तु देती थी और अपना पुत्र बनाकर रखती थी परन्तु मूसा ने विचारे इस्रायेलियों का उद्धार करना चाहा इस लिये मिसर देश के राज्य को उस ने तुच्छ समझा। मूसा के लिये यह बहुत अच्छा हुआ कि बड़े और धनवान होने के पलटे उस ने दुःखित इस्रायेलियों का उपकार किया क्योंकि इसी से ईश्वर ने उस का बहुत प्यार किया और अपना मित्र बनाया और मरने पर स्वर्ग में ले गया॥

हे प्यारे बच्चो मैं आशा करती हूं कि तुम भी मूसा के समान करोगे अर्थात् जब जवान हो जाओगे तब तुम दीन और दरिद्रों की सहायता करके उन्हें ईश्वर के विषय में शिक्षा दोगे। हे प्रिय लड़को विचारो तो यीशु ने तुम पर कैसी बड़ी दया किई है कि वह स्वर्ग को छोड़कर धरती पर आया कि तुम्हारी रक्षा करे और ईश्वर के साथ मेल करावे॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

मैं जिन २ लोगों को प्यार करता हूं उन का उलहना और

ताड़ना करता हूं इस लिये उद्योगी होओ और पश्चात्ताप करो। (प्रकाशितवाक्य का ३ पर्व्व १९ पद)॥

## ३५ पैंतीसवें पाठ के प्रश्न।

अपने पांचों पुस्तकों में मूसा ने क्या २ लिखे थे ?
मूसा ठीक २ क्योंकर लिख सका ?
मूसा ने अपने पुस्तक पढ़कर इस्रायेलियों को सुनाने के लिये किन मनुष्यों को आज्ञा दिई ?
मूसा के मरने के पीछे इस्रायेलियों का प्रधान कौन हुआ ?
ईश्वर ने मूसा को क्यों पहाड़ पर चढ़ने कहा ?
किस ने मूसा को गाड़ा ?
मूसा के साथ ईश्वर किस रीति बातचीत करता था ?
यदि तुम मूसा के समान होना चाहो तो जवान होने पर तुम्हें क्या करना चाहिये ?

---

## छत्तीसवीं कथा।

### राहब का वृत्तान्त।

यिहोशुआ का २ पर्व्व।

मूसा के मरने पर यिहोशुआ इस्रायेलियों का प्रधान हुआ और उन को जो २ करना उचित था वह बताता था। ईश्वर उस से बात करता था और यिहोशुआ उन सब बातों को इस्रायेलियों से कह देता था। कनानी लोग बड़े दुष्ट और पापी थे और ईश्वर ने उन्हें दण्ड देना और उन के देश में इस्रायेलियों को रखना ठहराया था इस कारण उस ने इस्रायेलियों को आज्ञा दिई कि कनान में जाकर उन से लड़ें और उन्हें नष्ट करें॥

कनान देश और उस जंगल के बीच में एक बड़ी नदी थी। वह नदी पार होने के बिना इस्रायेली लोग कनान देश में नहीं जा सकते थे। नदी के इस पार से इस्रायेलियों ने हरी २ घासों

से भरे हुए पहाड़ों को और ऊंची भीत से घिरे हुए एक बड़े नगर को देखा। उस नगर का नाम यिरीहो था और वहां अनेक दुष्ट कनानी लोग रहते थे। इस्रायेलियों ने जाना कि इस नगर के लोगों के साथ थोड़े दिनों में हमें लड़ाई करना पड़ेगा। यिहोशुआ ने दो इस्रायेलियों से कहा कि तुम उस नगर में जाकर देखो वह कैसा स्थान है और उस में किस प्रकार के लोग बसते हैं फिर आकर हमें सन्देशा दो। वे दोनों मनुष्य भेदिये कहलाते थे क्योंकि नगर का भेद लेने के लिये वे भेजे गये थे। यिहोशुआ ने चाहा कि यिरीहो के रहनेवाले न जानें कि दो भेदिये इस नगर में आये हैं जिस में वे उन दुष्ट लोगों के हाथ से मारे न जावें इस लिये सांझ को जब अंधेरा होने लगा तब उस ने उन्हें जाने कहा॥

और जहां नदी बहुत गहिरी न थी वहां से लोग चलकर पार जा सकते थे। उस स्थान को थाह कहते थे और वहीं से दोनों भेदिये पार गये। यिरीहो नगर का फाटक सांझही को बन्द हो जाता था परन्तु ठीक बन्द किये जाने के पहिले वे भेदिये वहां पहुंचे और भीतर पैठकर एक स्त्री के यहां गये। उस स्त्री का नाम राहब था और उस की एक सराय नगर की भीत पर बनी थी। भेदियों ने अपने मन में समझा कि किसी ने हमें इस नगर में पैठते नहीं देखा है पर कई एक मनुष्यों ने उन को देखा था और उन्हों ने राजा के पास जाकर कहा कि दो इस्रायेली मनुष्य इस नगर में आकर राहब की सराय में टिके हैं। यिरीहो का राजा जानता था कि इस्रायेल के सन्तान मेरे साथ लड़ाई करने आते हैं इस कारण उस ने उन भेदियों को मार डालना चाहा और कई मनुष्यों को राहब के घर पर भेजा कि उन्हें पकड़ लावें। अब वे बिचारे भेदिये क्या करें। कहां जावें। उन की रक्षा तो परमेश्वर ही के हाथ थी और परमेश्वर ने उन के निमित्त राहब के हृदय में दया उत्पन्न किई। राजा के लोगों के आने के पहिले राहब भेदियों को अपने घर के छत पर ले गई कि उन्हें छिपा रखे। वहां बहुत सी सनई रखी थी। सनई वह पौधा है जिस

के बकलों से सन बनाया जाता है। राहब ने बहुत सी सनई सुखाने के लिये छत पर फैलाई थी और जब वे भेदिये ऊपर चढ़ गये तब राहब ने उन्हें लेट जाने कहा और उन को सनई से ऐसे ढांप दिया कि कोई न जान सका। भेदियों को पकड़ने के लिये जो लोग राहब के यहां आये थे उन्हों ने उन को वहां नहीं पाया इस हेतु वे नगर के बाहर निकले कि पर्ब्बतों के बीच और नदी के किनारे उन्हें ढूंढ़ें॥

जब राजा के लोग चले गये तब वे दोनों भेदिये सनई के नीचे से निकले और राहब उन से कुछ कहने के लिये चुपके से धीरे २ ऊपर चढ़ गई। उस समय तो रात थी और अन्धकार के मारे किसी ने उन को छत पर नहीं देखा। राहब पहिले प्रतिमापूजक थी परन्तु अब वह मूर्त्तियों को छोड़कर सत्य परमेश्वर पर बिश्वास करने लगी और उस ने भेदियों की कृपा चाही। उस के मन में अति भय हुआ कि जब इस्रायेल के सन्तान नदी के इस पार आकर यिरीहो के निवासियों से लड़ाई करेंगे तब मुझे परिवार समेत मार डालेंगे। यह सोचकर उस ने भेदियों से बिन्ती किई कि वे उसे और उस के सारे घराने को बचाने की प्रतिज्ञा करें। बिचारी राहब बोली कि मुझे जान पड़ता है कि ईश्वर इस्रायेलियों को कनान में लाकर बसावेगा। यहां के सब रहनेवाले बहुत डरते हैं कि इस्रायेली लोग इस नगर में आकर हम लोगों को नष्ट करेंगे क्योंकि हम ने सुना है कि लाल समुद्र पार होने में परमेश्वर ने तुम्हारी कैसी सहायता किई थी। मुझे निश्चय हुआ है कि केवल तुम्हारा ईश्वर एक ही सत्य ईश्वर है। अब मुझ से प्रतिज्ञा करो कि जैसे मैं ने तुम पर अनुग्रह किया है वैसे ही तुम भी मुझ पर अनुग्रह करोगे और मेरे माता पिता भाई बहिन आदि को नष्ट न करोगे। भेदियों ने राहब और उस के घराने की रक्षा करना स्वीकार किया। राहब ने उन पर बड़ी दयालु होकर उन्हें छिपा रखा था और वह ईश्वर से भी डरती थी इस लिये भेदियों ने उस से प्रतिज्ञा किई कि हम लोग तुझे और तेरे माता पिता भाई बहिन आदि को बचावेंगे। उन की प्रतिज्ञा सुनकर राहब

बहुत आनन्दित हुई होगी परन्तु भेदियों ने विशेष करके उस से यह चाहा कि वह किसी को न जनावे कि वे उस नगर में गये थे। वे बोले कि यदि तू हमारे यहां आने का वृत्तान्त किसी से न कहे तो हम तुझे और तेरे सारे घराने को निश्चय बचावेंगे॥

इस के पीछे राहब ने भेदियों को नगर के बाहर निकलने में सहायता किई। रात को तो फाटक बन्द था इस लिये वे बाहर न जा सके और जो वे भोर तक ठहरते तो नगर के लोग उन्हें देखते और पकड़कर मार डालते पर राहब ने उन के जाने का एक उपाय निकाला। उस का घर यिरीहो की भीत पर था और उस की एक खिड़की नगर के बाहर की ओर थी। वह खिड़की अति ऊंची थी पर राहब ने एक भेदिये की कटि में डोरी बांधकर उसे खिड़की के नीचे उतारा। फिर उस ने दूसरे भेदिये को भी डोरी से बांधकर उतार दिया। जब दोनों भेदिये यिरीहो नगर के बाहर खड़े हुए और राहब खिड़की में से उन को देखती रही तब उन्हों ने पुकारकर उस्से कहा कि तू यह लाल डोरी इस खिड़की पर बांध रखना और अपने माता पिता भाई बहिन आदि को अपने घर में बटोर रखना। हम यह बात तुझ से कह देते हैं कि जब इस्रायेल लोग इस नगर के रहनेवालों से लड़ाई करेंगे तब यदि तुम लोग इस घर के बाहर चलते फिरते रहोगे तो क्या जाने मार डाले जाओगे पर यदि इस घर में रहोगे तो न मारे जाओगे। तू हमारे यहां आने की चर्चा किसी से न कीजियो॥

यह कहकर वे दोनों चले गये और तीन दिन तक पहाड़ों के बीच छिपे रहे कि यिरीहो के जो लोग उन को मार डालने के लिये नदी तीर पर ढूंढ़ते थे सो न पावें। तीन दिन के पीछे नदी पार होकर वे यिहोशुआ के पास आये और सब वृत्तान्त कह सुनाया। जब यिहोशुआ ने सुना कि यिरीहो के रहनेवाले बहुत डरते हैं तब वह सन्तुष्ट हुआ और निश्चय जाना कि कनान देश को जीतने में ईश्वर इस्रायेलियों की सहायता करेगा। भेदियों ने राहब के विषय में यिहोशुआ से कहा कि उस की खिड़की में लाल डोरी बंधी है उसी को देखकर तुम

जानोगे कि यह राहब का घर है। तब यिहोशुआ ने सब लोगों को आज्ञा दिई कि जिस खिड़की पर तुम लाल डोरी देखो उस घर के किसी मनुष्य को न मारना॥

राहब अपनी खिड़की में लाल डोरी लगाकर अपने माता पिता भाई बहिनों को अपने यहां ले आई और यिरीहो के दुष्ट लोगों से उन भेदियों की चर्चा न किई। किसी ने न जाना कि राहब ने अपनी खिड़की में क्यों लाल डोरी बांधी। यह सब करने के पीछे राहब को कुछ चिन्ता न रही क्योंकि उस ने भेदियों की प्रतीति किई और जाना कि वे बिश्वासघातक न होंगे। राहब से प्रतिज्ञा किई गई थी कि जब यिरीहो के लोग मारे जावेंगे तो उस की रक्षा होगी इस लिये उस ने ईश्वर का धन्यवाद किया होगा॥

हे प्यारे पढ़नेहारो जिस दिन सब दुष्ट लोग आग में जलाये जावेंगे वह दिन आता है। तुम ने बिचार के दिन के बिषय में सुना है। क्या तुम नहीं चाहते हो कि उस दिन परमेश्वर तुम्हारी रक्षा करे। जो चाहते हो तो जैसे राहब ने किया था वैसे ही तुम भी करो अर्थात् ईश्वर से बिन्ती करो कि वह तुम्हें बचावे। यदि तुम उस से बिन्ती करोगे तो वह अवश्य तुम्हें बचावेगा। जो तुम सचमुच ईश्वर से डरते हो तो तुम को बार २ उस से प्रार्थना करनी चाहिये कि वह यीशु ख्रीष्ट के लिये तुम्हारे सब पापों का मोचन करे। परमेश्वर तुम्हारी प्रार्थना सुनेगा और बिचार के दिन अपना बचन स्मरण करके तुम पर कुछ दुःख आने न देगा॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

धर्म्म को ढूंढ़ो और नम्रता को खोजो क्या जाने कि परमेश्वर के कोप के दिन में तुम बच जाओ। (सफनियाह का २ पर्ब्ब ३ पद)॥

## ३६ छत्तीसवें पाठ के प्रश्न।

इस्रायेलियों ने नदी के इस पार से किस नगर को देखा?

दो मनुष्यों को यिहोशुआ ने क्यों उस नगर में पहिले भेजा?
वे मनुष्य किस के घर में उतरे थे?
उन्हें ढूंढ़ने के लिये राहब के यहां कौन लोग गये थे?
राहब ने भेदियों को कहां छिपाया?
उस ने उन से क्या चाहा?
भेदिये लोग किस प्रकार नगर के बाहर निकले?
उन्हों ने राहब से क्यों कहा कि तू अपनी खिड़की पर लाल डोरी लगा रखना?
कब तुम ईश्वर से रक्षा पाने की आशा रखते हो?

---

## सैंतीसवीं कथा।

### इस्रायेलियों के यर्दन नदी पार उतरने के विषय में।

यिहोशुआ का ३, ४, और ५ पर्व्व के १ से १२ पद तक।

जो नदी कनान और उस जंगल के बीच से बहती थी उस का नाम यर्दन था। अब इस्रायेल लोग नाव पर चढ़कर नदी के पार नहीं हो सकते थे क्योंकि इतने लोगों के पार होने के लिये अनेक नावों का प्रयोजन था और उन के बनाने के लिये इस्रायेलियों को इतनी लकड़ी कहां मिलती। वे पुल भी नहीं बांध सकते थे क्योंकि बांधते समय कनानी लोग इस्रायेलियों को बाण मारते। वे तैरकर भी नहीं पार हो सकते थे इस हेतु कि स्त्रियों और बालबच्चों को तैरना नहीं आता था और जो आता भी तो वे तम्बू और सब वस्तुओं को पार नहीं ले जा सकते थे। केवल ईश्वर उन्हें पार उतार सकता था जैसे उस ने उन्हें लाल समुद्र के पार उतारा था। ईश्वर ने यिहोशुआ को जो करने की आज्ञा दिई थी सो अब सुनो॥

यिहोशुआ ने बड़े तड़के उठके लोगों को एकट्ठा कर कहा तुम देखते रहो कि याजक लोग नियम का सन्दूक उठाकर कहां ले जाते हैं और तुम उन के पीछे हो लेओ परन्तु उन के अति निकट न जाओ। फिर यिहोशुआ ने याजकों से कहा कि तुम नियम

का सन्दूक लेकर आगे बढ़ा। वह सन्दूक नीले वस्त्र से लपेटा था कि कोई उसे वा उस पर जो सोने के दूतों के आकार थे उन्हें न देख सके। सन्दूक की दोनों ओर लम्बे डंडे लगे थे और उन डंडों को पकड़कर याजकों ने सन्दूक उठाया। जब याजकों ने यिहोशुआ की आज्ञा पाई तब उन्हों ने उज्जल वस्त्र पहिने जूते उतारे और नियम का सन्दूक लिये हुए नदी के तीर पर खड़े हुए पर वे नहीं जानते थे कि हमें क्या करना पड़ेगा। यिहोशुआ ने उन को स्थिर होकर खड़े रहने कहा और इस्राएलियों से बोला कि तुम ईश्वर का महा आश्चर्य्यकर्म्म अब देखोगे ज्योंही याजक लोग अपने पांव जल में रखेंगे त्योंही नदी के बीचोंबीच एक सूखा मार्ग बन जायगा। इस्रायेल के सन्तान तम्बुओं से निकले और अपनी सब वस्तुओं को बांध बांधकर चलने को तैयार हुए और याजकों को देखते रहे उसी समय यिहोशुआ ने याजकों को आज्ञा दिई कि वे पानी में उतरें। ज्योंही याजकों ने पानी में पांव रखे त्योंही पानी इस्रायेलियों की दोनों ओर भीतों के समान खड़ा हो गया और नदी के बीचोंबीच एक सूखा मार्ग बन गया। याजक लोग उसी मार्ग पर चलते २ नदी के बीच तक पहुंचे और वहां ठहर गये। तब यिहोशुआ ने सब लोगों से कहा कि अब तुम नदी पार हो जाओ और जब तक सब लोग पार न हो गये तब तक याजक लोग नदी के बीच में खड़े रहे। इस्रायेल के सन्तानों में से बारह मनुष्यों को यिहोशुआ ने इस पार अपने पास रखा उन्हीं को छोड़ सब इस्रायेल लोग पार होकर कनान देश में पैठ गये। तब यिहोशुआ ने उन बारह जनों से कहा कि देखो जहां याजक लोग खड़े हैं वहां बड़े २ पत्थर पड़े हैं उन में से बारह पत्थर उठाकर कनान में ले चलो। यह आज्ञा पाकर उन बारह मनुष्यों ने एक २ पत्थर उठाया और यिहोशुआ ने उन से कहा कि इन बारह पत्थरों को कनान देश में इस नदी के तीर पर रखियो। तब उन्हों ने पार जाकर वैसाही किया॥

यिहोशुआ ने पत्थरों को नदी तीर पर इस लिये रखवाया कि लोग ईश्वर का महा आश्चर्य्यकर्म्म अर्थात् यर्दन नदी के

भीतर सूखे मार्ग के बन जाने की बात कभी न भूलें। परमेश्वर की इच्छा थी कि बहुत दिन के बीतने पर छोटे २ लड़के उन बारहों पत्थरों को देखकर जब अपने २ माता पिता से पूछें कि ये पत्थर यहां क्यों हैं तब उन के माता पिता कहें कि ये पत्थर तो जल के नीचे पड़े थे परन्तु ईश्वर ने हमारे निमित्त नदी के बीच से एक सूखा मार्ग निकाला था और उस की दया को स्मरण करने के लिये ये बारह पत्थर यहां रखे हैं। जब लड़केवाले कुछ देखकर उस का अर्थ जान्ना चाहते हैं तब ईश्वर प्रसन्न होता है। ईश्वर चाहता है कि सब लड़के उस की भलाई और आश्चर्य्यकर्म्मों के विषय की शिक्षा पाकर ज्ञानी होवें॥

बारह मनुष्यों को पत्थर लेकर नदी पार जाने में जितना समय लगा उतने समय तक सब याजक स्थिर होकर नदी के बीच में खड़े रहे। निदान यिहोशुआ ने याजकों से कहा कि तुम वहां से चले आओ। उन्हों ने वैसा ही किया और ज्योंही याजकों ने अपने २ पांव कनान की सूखी भूमि पर रखे त्योंही यर्दन नदी के बीच का मार्ग फिर पानी से ढंप गया और नदी पहिले के समान हो गई॥

इस्रायेली लोग अत्यन्त आनन्दित हुए होंगे क्योंकि जंगल में भटकने के चालीस बरस व्यतीत हो गये और अब वे कनान में कुशल से पहुंचे। परमेश्वर ने उन पर बहुत अनुग्रह किया था और अब भी कनान के दुष्ट लोगों से लड़ाई करने में इस्रायेलियों की सहायता करने को तैयार था। ईश्वर ने इस लिये कनान के निवासियों को नष्ट करना चाहा कि वे प्रतिमापूजा और अनेक प्रकार के पाप किया करते थे॥

यिरीहो नगर के राजा ने अपनी ऊंची भीत पर से इस्रायेलियों को नदी पार होते देखा और अपनी सब प्रजाओं के समेत अत्यन्त डरा। उस नगर में राहब स्त्री निडर थी वह सत्य ईश्वर पर विश्वास करती थी और निश्चय जानती थी कि मैं कुशल से रहूंगी॥

याजकों ने अपने कंधों पर से नियम का सन्दूक उतारा और इस्रायेलियों ने यिरीहो के बाहर डेरे डालकर छावनी किई।

नगर के बाहर से उन्हों ने राहब की खिड़की पर लाल डोरी देखी और जाना कि वह घर उसी का है। तब यिहोशुआ ने लोगों को आज्ञा दिई कि तुम इस घर के किसी मनुष्य की बुराई न करना॥

यिरीहो नगर का फाटक बड़ी दृढ़ता से बन्द किया गया था कि इस्रायेल लोग भीतर न आ सकें इस लिये नगर के रहनेवाले भीतर ही रह गये कोई बाहर न निकल सका। वे दुष्ट लोग नदी के तीर पर फिर कभी न टहलने पावेंगे क्योंकि उन का मृत्युकाल निकट था। हाय २ इस के पहिले उन लोगों ने अपने २ मन को क्यों नहीं फेरा॥

हे प्यारे बच्चो हम लोगों का पिछला दिन अर्थात् विचार का दिन एक समय अवश्य आ पड़ेगा। आओ हम लोग अपने पाप के लिये अब पश्चात्ताप करें और ईश्वर से बिन्ती करें कि वह अपना पवित्र आत्मा हमें देवे। हे लड़को और लड़कियो यदि तुम लोग झूठ बात बोलोगे और झगड़ा मारपीट और आज्ञा उल्लंघन किया करोगे तो अन्त को बड़े दुःख में पड़ोगे परन्तु मैं चाहती हूं कि तुम ईश्वर को प्यार करो और त्राण पाओ॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

परमेश्वर को ढूंढ़ो जब लों कि वह मिल सकता है उसे पुकारो जब कि वह निकट है। (यिशैयाह का ५५ पर्ब्ब ६ पद)॥

## ३७ सैंतीसवें पाठ के प्रश्न।

कनान देश में पहुंचने के लिये इस्रायेलियों को कौन नदी उतरना पड़ा?

यिहोशुआ ने याजकों को क्या करने की आज्ञा दिई?

ज्योंही याजकों ने अपने पांव यर्दन नदी के पानी में रखे त्योंही क्या हुआ?

जब इस्रायेल लोग पार जाते थे तब सब याजक कहां खड़े रहे?

यिहोशुआ ने बारह मनुष्यों को नदी के बीच में से बारह पत्थर उठाकर कनान देश में रखने क्यों कहा ?
नदी के बीच का वह सूखा मार्ग फिर कब जल से ढंप गया ?
इस्रायेली लोग कितने बरस तक जंगल में घूमते रहे थे ?
यिरीहो नगर के रहनेवालों में से ईश्वर ने किन २ मनुष्यों को बचाने के लिये चुन लिया था ?
और सब लोगों को नष्ट करने के लिये परमेश्वर ने इस्रायेलियों को क्यों अनुमति दिई ?

---

## अड़तीसवीं कथा।

### यिरीहो नगर के नाश होने का वृत्तान्त।

यिहोशुआ का ५ पर्व्व १३ से १६ पद तक और ६ पर्व्व।

इस्रायेली लोग यिरीहो नगर की चारों ओर तम्बू तानकर ईश्वर की आज्ञा पाने के लिये अगोर रहे थे। बिना ईश्वर की सहायता वे नगर के बड़े २ फाटकों को खोलकर भीतर नहीं जा सकते थे। यिहोशुआ इस्रायेलियों का सेनापति था। वह साहसी पुरुष था क्योंकि वह परमेश्वर की शक्ति पर भरोसा रखता था। अब मैं तुम लोगों से उस अद्भुत बात का वृत्तान्त कहूंगी जिसे यिहोशुआ ने नगर के बाहर देखा॥

एक दिन यिहोशुआ अपने तम्बू से बाहर निकला और क्या देखता है कि थोड़ी दूर पर एक मनुष्य उस के साम्ने तलवार खींचे हुए खड़ा है। वह मनुष्य योद्धा सा देख पड़ता था पर यिहोशुआ न पहचान सका कि वह कौन है उस ने केवल यही जाना कि वह इस्रायेल के वंश का नहीं है। यिहोशुआ ने उस मनुष्य के पास जाकर पूछा कि तुम हमारी सहायता अथवा यिरीहो नगर के निवासियों की सहायता करने आये हो। उस मनुष्य ने उत्तर दिया कि मैं परमेश्वर की सेना का अध्यक्ष होकर आया हूं। अब यिहोशुआ ने जाना कि वह कौन है॥

हे प्रिय पढ़नेहारो कहो तो वह कौन था। वह सब मनुष्यों से और स्वर्ग के दूतों से उत्तम है। वह प्रभु यीशु ख्रीष्ट था और स्वर्ग से आया था। इस के बहुत बरस पीछे यीशु अवतार लेकर छोटा बालक हुआ पर वह सदा सर्वदा पिता परमेश्वर के साथ स्वर्ग में रहा करता है और उस समय कभी २ मनुष्य के समान होकर जगत में आता था। यीशु ने स्वर्ग से उतरकर यिहोशुआ से बातचीत किई थी इस से यिहोशुआ पर उस का बड़ा अनुग्रह प्रगट हुआ॥

जब यिहोशुआ ने जाना कि यह कौन है तो भूमि पर गिरकर उसे दण्डवत किई और कहा कि मेरे प्रभु अपने सेवक को क्या आज्ञा करते हैं। यिहोशुआ ने अपने को प्रभु का सेवक आप कहा। परमेश्वर की सेना के अध्यक्ष ने यिहोशुआ से कहा कि अपने पांव से जूता उतार क्योंकि यह स्थान पवित्र है। यिहोशुआ जूता उतारकर सुन्ने लगा कि प्रभु मुझ से क्या कहता है॥

वह स्थान इस लिये पवित्र था कि ईश्वर वहां खड़ा था। तुम जानते हो कि जब याजक लोग भजन के तम्बू में जाते थे तब जूता नहीं पहिनते थे॥

तब प्रभु ने यिहोशुआ को यिरीहो के लोगों से लड़ाई करने की जैसी रीति बताई वैसी रीति कभी नहीं सुन्ने में आई थी। तुम लोग उसे सुनकर बड़े अचम्भित होगे॥

जब प्रभु स्वर्ग में फिर गया तब यिहोशुआ ने याजकों को और सब इस्रायेलियों को बुलाकर जो २ काम करना उन को उचित था सब बता दिया। यिहोशुआ ने कई एक याजकों को नियम का सन्दूक उठाने कहा। फिर उस ने और सात याजकों को बुलाकर आज्ञा दिई कि तुम लोग मेढ़ों की एक २ सींग लेकर तुरही के समान बजाते हुए नियम के सन्दूक के आगे २ चलो॥

तुम जानते हो कि किसी २ देश में मेढ़ों की बहुत बड़ी २ सींगें होती हैं और उन से सिंगे बनाये जाते हैं॥

फिर यिहोशुआ ने योद्धाओं को बुलाकर याजकों के आगे २ चलने कहा। इन को छोड़कर और जितने लोग थे अर्थात्

स्त्रियां लड़के वाले और जो २ पुरुष खड्ग वा बर्छी नहीं बांध सकते थे उन सभों को यिहोशुआ ने याजकों के पीछे कर दिया। यिहोशुआ ने उन्हें यिरीहो नगर की चारों ओर घूमने की आज्ञा दिई। तब योद्धा लोग खड्ग और बर्छी लिये हुए पहिले चले। उन के पीछे सात याजक उजले वस्त्र पहिने हुए सिंगे बजा बजाकर चले। फिर कितने याजक नियम का सन्दूक उठाये हुए चले और सब के पीछे साधारण लोग छूंछे हाथ चले। तुम ने इतने लोगों को एकट्ठे चलते कभी नहीं देखा होगा। उन के चलने के पहिले यिहोशुआ ने उन से कहा कि जब तक मैं न कहूं कि जय २ करके पुकारो तब तक तुम कुछ मत बोलो। योद्धा लोग जयी होने पर ललकारते हैं परन्तु जब लों यिहोशुआ ने इस्रायेलियों को अनुमति न दिई तब लों वे जय जय शब्द नहीं कर सके। ऐसे ही वे नगर की चारों ओर एक बेर घूम आये॥

5 यिरीहो नगर के रहनेवालों ने तुरही का शब्द सुना और खड्ग और बर्छी लिये हुए योद्धाओं को देखा। तब क्या जाने उन्हों ने समझा कि इस्रायेल लोग नगर के बाहर से हमें तीर मारेंगे और नगर की भीत को मार मारकर गिरा देंगे। वे अब अत्यन्त डर गये होंगे पर राहब अपने सब परिवार के सहित सावधानता से अपने घर में रही॥

जब इस्रायेली लोग नगर की चारों ओर एक बेर घूम आये तब यिहोशुआ उन्हें छावनी में ले गया। यह सुनकर क्या तुम्हें आश्चर्य्य नहीं होता। नगर की चारों ओर घूमने से क्या भलाई हो सकती थी। पर तुम सुनोगे कि अन्त में क्या हुआ॥

दूसरे दिन यिहोशुआ याजकों और और सब लोगों को फिर एक बार नगर की चारों ओर घुमाकर तम्बुओं में ले आया। इसी रीति छः दिन तक यिरीहो नगर की चारों ओर घूम घूम-कर वे फिर अपने डेरों में चले आते थे। इस्रायेलियों ने बहुत अच्छा काम किया कि यिहोशुआ की आज्ञा मानी और उस्से न पूछा कि हम क्यों प्रतिदिन नगर की चारों ओर घूमा करें और लड़ाई न करें। क्या जाने यिरीहो के रहनेवाले इस्रायेलियों

के उस काम पर हंसे और समझा होगा कि इस्रायेल के सन्तान इस नगर के भीतर कभी नहीं आ सकेंगे॥

सातवें दिन पौ फटतेही यिहोशुआ ने इस्रायेलियों को पहिले के समान उठकर नगर की चारों ओर घूमने की आज्ञा दिई परन्तु जब वे एक बेर नगर की चारों ओर घूम आये तब यिहोशुआ ने छावनी में उन्हें न भेजा बरन फिर घूमने कहा। उस दिन उन्हों ने सात बार यिरीहो नगर की चारों ओर घूमकर सारा दिन बिता दिया। ज्योंही वे सातवीं बार नगर की चारों ओर फिरकर आये और याजकों ने तुरहियां फूंकीं त्योंही यिहोशुआ ने लोगों से कहा कि अब जय जय शब्द करो क्योंकि परमेश्वर ने यह नगर तुम को दिया तुम शीघ्र ही इस का अधिकार पाओगे। राहब और उस के घराने को छोड़ नगर के सारे निवासियों को तुम्हें अवश्य नष्ट करना पड़ेगा। तुम यिरीहो में अनेक सुन्दर वस्तु देखोगे पर उन में से कुछ अपने लिये मत लेना सब सोने और चांदी के पात्रों को और सब पीतल और लोहे को तुम परमेश्वर के निमित्त बटोरना जो कुछ तुम को मिले तुम भजन के तम्बू में लेते आना परन्तु अपने लिये कुछ न रखना क्योंकि परमेश्वर ने यिरीहो नगर को और उस में की सब वस्तुओं को स्राप दिया है॥

जब यिहोशुआ ने यह सब कह दिया तब याजकों ने तुरहियां बजाईं और लोगों ने ऊंचे शब्द से जय जय पुकारा। उसी क्षण यिरीहो नगर की भीत गिर पड़ी। भीत के गिरने से बड़ा भयानक शब्द हुआ और तब यिरीहो के निवासियों ने जाना कि अब हमारा मृत्युकाल आ पहुंचा। वे दोनों भेदिये दौड़कर राहब के घर गये और राहब को उस के माता पिता और भाई बहिनों के समेत निकालकर इस्रायेलियों की छावनी के निकट एक कुशल के स्थान में लाये। राहब और उस के घर के लोग अपनी सब सामग्री लेकर निकले थे इस लिये वे डेरे बनाकर इस्रायेलियों के संग चैन से रह सके। आहा राहब कैसी धन्य थी। उस को अब सत्य ईश्वर की बात सीखने का अवसर मिला। अब उस ने याजकों को परमेश्वर की वेदी पर बलिदान चढ़ाते

देखा और सुना कि ईश्वर का भेजा जगत में आवेगा और उस भेजे के अर्थात् यीशु के मरण के द्वारा मेरा सब पाप क्षमा किया जा सकता है॥

यिरीहो के सब रहनेवाले मार डाले गये। क्या पुरुष क्या स्त्री क्या बाल बच्चे सब के सब नष्ट कर दिये गये यहां लों कि भेड़ गाय आदि जितने पशु थे वे भी सब मारे गये एक भी न बचा। इस्रायेलियों ने उन्हें खड्ग से मारकर नगर को फूंक दिया परन्तु सोने चांदी पीतल और लोहे के पात्रों को उठाकर भजन के तम्बू में याजकों के पास लाये॥

जब कनान देश में के और २ नगरों के रहनेवालों ने सुना कि यिरीहो नगर की क्या दशा हुई तब वे बहुत डरे और उन्हों ने कहा कि आह। यिहोशुआ कैसा महा बीर है पर तुम तो जानते हो कि यिहोशुआ के लिये किस ने लड़ाई किई और यिरीहो की भीत गिराई। क्या यह वही अध्यक्ष नहीं था जिसे यिहोशुआ ने देखा था। हां निश्चय वही था। वह स्वर्ग के लाखों करोड़ों दूतों का सेनापति है। दूत मनुष्यों से अधिक बलवान् होते हैं और यीशु उन का अध्यक्ष है वे यीशु के बश में रहते हैं। यीशु ईश्वर है वह भीत गिरा सकता है और उठा सकता है। वह मार सकता है और जिला सकता है। वह हमें नरक में डाल सकता है और स्वर्ग में ले जा सकता है। हे प्यारे लड़को क्या तुम यीशु से अनन्त जीवन अथवा नरक का अनन्त दुःख चाहते हो। आओ हम उस से बिन्ती करें कि जैसे यिरीहो नगर के जलने के समय उस ने राहब की रक्षा किई थी वैसेही जब यह जगत आग से जलाया जावेगा तब हमारी रक्षा करे॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

पापी भूमि पर से नष्ट होंगे और दुष्ट नहीं रहेंगे। (१०४ गीत का ३५ पद)॥

## ३८ अड़तीसवें पाठ के प्रश्न।

यिहोशुआ ने यिरीहो नगर के बाहर तरवार खींचे हुए जिस मनुष्य को देखा था वह कौन था?

किस ने यिहोशुत्रा को यिरीहो नगर के जीतने की रीति बताई थी ?
किन लोगों ने सिंगे बजाये ?
कितने दिन तक इस्रायेली लोग यिरीहो की चारों ओर घूमे ?
सातवें दिन वे कितनी बेर नगर की चारों ओर घूमे ?
घूमने के पीछे याजकों ने और दूसरे लोगों ने क्या किया ?
उस समय क्या हुआ ?
यिरीहो के निवासियों की क्या दशा हुई ?
इस्रायेलियों ने यिरीहो को किस प्रकार नष्ट किया ?
जब हम यिरीहो के जलाये जाने के विषय में सोचते हैं तब किस दिन की बात मन में आती है ?

---

## उन्तालीसवीं कथा।

### यिहोशुआ की मृत्यु का वर्णन।

यिहोशुआ का २४ पर्व्व।

तुम ने सुना है कि इस्रायेलियों ने यिरीहो नगर की क्या दशा किई थी। यिरीहो को छोड़कर कनान देश में और भी अनेक नगर थे उन सब नगरों के रहनेवालों के साथ इस्रायेलियों को लड़ाई करनी पड़ी। यद्यपि कनान के सब लोग यिहोशुआ का वृत्तान्त सुनकर अत्यन्त डरे तथापि वे खड्ग और बर्छी ले लेकर लड़ाई करने निकले। ईश्वर सदा इस्रायेलियों की सहायता करता था इस कारण वे हर लड़ाई में जयी होते थे। पहिले उन्हों ने एक नगर में जाकर उस के सब मनुष्यों को नष्ट किया। फिर दूसरे में प्रवेश करके वहां के भी लोगों का नाश किया। ऐसे ही उन्हों ने सैकड़ों नगरों में पैठकर कनान देश के प्रायः सब निवासियों को मार डाला। ईश्वर ने जैसे यिरीहो नगर की भीत गिराई थी वैसे और नगरों की भीतें नहीं गिराईं परन्तु उन के जीतने में इस्रायेलियों को अति भयानक लड़ाई करनी पड़ी॥

सारे देश को जीत लेने के पीछे यिहोशुआ ने इस्रायेलियों से कहा कि अब कनानी लोग मार डाले गये मैं तुम्हें रहने के लिये स्थान दूंगा। इस पर उस ने हर एक घराने को अनेक प्रकार के उत्तम २ वस्तुओं से भरे हुए एक २ घर बारी खेत और पानी के कूंए दिये तब इस्रायेलियों को बिश्राम मिला और सब लोग अपनी २ बारी में गूलर के पेड़ों और दाखलताओं के तले बैठकर गूलर और दाख तोड़ २ खाने लगे और अपने २ कूंए में से पानी निकालकर पीने लगे॥

इस्रायेलियों ने आप उन घरों को नहीं उठाया क्योंकि घर उठाने का कुछ प्रयोजन न था वे कनानियों के घरों में रहे। दुष्ट कनानियों ने घर बनाये कूंए खोदे और पेड़ लगाये थे परन्तु परमेश्वर ने उन से उन सभों को लेकर इस्रायेलियों को दे दिया। ईश्वर जो कुछ जिस को देना चाहे दे सकता है क्योंकि ईश्वर ने सब वस्तुओं को बनाया है और सब कुछ उसी का है। कभी २ वह दुष्ट लोगों से अपनी दिई हुई वस्तु लेकर धर्म्मी मनुष्यों को दे देता है॥

जब इस्रायेल के सन्तान अपनी २ बारियों में चैन से बैठते थे तब उन को यह याद करना उचित था कि परमेश्वर ने हम पर इतनी दया करके हमें बहुत सुख दिया है इस कारण हमें चाहिये कि उस का अत्यन्त प्रेम करें। हे प्यारे बच्चो तुम्हें भी ईश्वर ने बहुत सुख दिया है इस कारण तुम्हें भी उस पर बहुत प्रेम रखना उचित है॥

परमेश्वर इस्रायेलियों पर अत्यन्त दयालु था पर इस लिये नहीं कि वे भले थे क्योंकि उन्हों ने बार २ उस की आज्ञा का उल्लंघन किया था बरन इस लिये कि उस ने इब्राहीम से प्रतिज्ञा किई थी कि मैं तेरे वंश को कनान देश का अधिकार दूंगा। ईश्वर अपने उसी बचन को स्मरण करके इस्रायेलियों को कनान में ले गया और उन पर इतना अनुग्रह किया॥

कनान देश के बीच में एक स्थान था जिस का नाम शीलोह था। उसी स्थान में यिहोशुआ ने भजन के तम्बू को खड़ा किया और इस्रायेलियों को फिर कभी वहां से तम्बू हटाना न पड़ा।

यिहोशुआ ने सब लोगों को आज्ञा दिई कि वे भजन के तम्बू में आकर ईश्वर की सेवा करें परन्तु कोई २ बहुत दूर रहते थे इस लिये वे अनेक बार वहां नहीं आ सकते थे। वे कभी २ भजन के तम्बू में आते थे। कनान के दुष्ट लोग जिन प्रतिमाओं की पूजा किया करते थे उन की पूजा करने से ईश्वर ने इस्रा-येलियों को बरजा था। इस्रायेल के सन्तान बारियों और खेतों में सोने और चांदी की मूर्त्तियां पाते थे और यद्यपि वे अति सुन्दर दिखाई देती थीं तथापि इस्रायेल लोग उन्हें अपने घरों में नहीं ला सकते थे परन्तु सब को आग में गला देते थे क्योंकि परमेश्वर प्रतिमाओं से बड़ा घिन करता है॥

निदान यिहोशुआ बहुत वृद्ध हुआ और उस को जान पड़ा कि अब मेरी मृत्यु निकट है और अपने मरने के पहिले उस ने कुछ बात करने के लिये इस्रायेलियों को अपने पास बुलाया। बात करते समय यिहोशुआ एक सिन्दूर के पेड़ तले खड़ा था और उस ने इस्रायेलियों से कहा कि मैं शीघ्र मरूंगा मेरे मरने के पीछे तुम किस की सेवा करोगे मूर्त्तियों की अथवा उस परमे-श्वर की जो तुम पर दयालु है। वे सब के सब बोले कि हम परमेश्वर की सेवा करेंगे। यिहोशुआ ने कहा जो तुम परमेश्वर की सेवा करोगे तो तुम्हें प्रतिमापूजा कभी न करनी चाहिये। उन्हों ने उत्तर दिया कि हम केवल ईश्वर ही की सेवा करेंगे। यिहोशुआ बोला कि अब तुम ने परमेश्वर ही की सेवा करने की प्रतिज्ञा किई है इस बात पर ध्यान रखो कि तुम इस प्रतिज्ञा से कभी मुकर न जाओ। इतने में यिहोशुआ ने एक पुस्तक लेकर जो कुछ इस्रायेलियों ने कहा था सो उस में लिख दिया। फिर उस ने एक बड़ा पत्थर लेकर उस सिन्दूर के पेड़ तले खड़ा कर दिया और इस्रायेलियों से कहा कि देखो इस पत्थर के यहां खड़ा करने का अभिप्राय यह है कि तुम सदा अपना बचन स्मरण किया करो। यह कहकर यिहोशुआ ने उन्हें बिदा किया॥

थोड़े दिन के पीछे यिहोशुआ मर गया। उस की बय सौ बरस से अधिक की थी॥

इस्रायेलियें ने कुछ समय तक अपने बचन के अनुसार व्यवहार किया अर्थात् ईश्वर की सेवा करते रहे परन्तु पीछे से ईश्वर की सेवा छोड़कर प्रतिमाओं की पूजा और अनेक अनुचित काम करने लगे॥

हे प्यारे लड़को तुम्हारे माता पिता ने तुम्हें प्रतिमापूजा करनी सिखाई होगी और तुम ने और २ पाप भी निश्चय किये हैं। क्या तुम ने कभी आज्ञा उल्लंघन और क्रोध नहीं किये हैं अथवा झूठ नहीं बोले हो। अब ईश्वर को प्रसन्न करने के लिये प्रतिमापूजा करना छोड़कर सदा सच बोलो माता पिता के वस में रहो और आपस में प्रेम और दया से व्यवहार करो क्योंकि इन सब कामों से परमेश्वर सन्तुष्ट होता है। परमेश्वर ने तुम पर बहुत अनुग्रह किया है। देखो उस ने तुम्हें आहार वस्त्र घर दयालु भाई बन्धु देह और आत्मा दिये हैं। और भी उस ने तुम्हारे उद्धार के लिये अपने एकलौते पुत्र को मरने दिया इस लिये उसे अति प्रसन्न रखना तुम्हें अवश्य चाहिये। परमेश्वर से बिन्ती करो कि वह तुम्हारे हृदयों को ऐसा नम्र बनावे कि तुम उस का प्यार और उसे प्रसन्न कर सको॥

## धर्म्मपुस्तक का पद।

हे मेरे प्राण परमेश्वर को धन्य कह और उस के सारे उपकारों को न भूल। जो तेरे सारे अधर्म्मों को क्षमा करता है जो तेरे सारे रोगों को चंगा करता है। (१०३ गीत का २—३ पद)॥

## ३९ उन्तालीसवें पाठ के प्रश्न।

कनान देश को जीतकर यिहोशुआ ने इस्रायेलियों को क्या दिया?

परमेश्वर ने इस्रायेलियों पर बड़ा अनुग्रह क्यों किया?

उस ने इस्रायेलियों को कनानियों के नष्ट करने की आज्ञा क्यों दिई?

यिहोशुश्रा ने किस स्थान में भजन के तम्बू को खड़ा किया ?
ईश्वर ने इस्रायेलियों से कनान की सब प्रतिमाओं को क्या करने कहा था ?
यिहोशुश्रा ने अपने मरने के पहिले इस्रायेलियों से क्या पूछा ?
इस्रायेलियों ने यिहोशुश्रा से क्या प्रतिज्ञा किई ?
यिहोशुश्रा ने सिन्दूर के पेड़ तले क्यों पत्थर खड़ा किया ?
हम को किस लिये चाहिये कि हम ईश्वर को प्यार करें और उसे प्रसन्न रखने का यत्न करें ?

इति।

## बालकों की परीक्षा के लिये कुछ मुख्य २ प्रश्न ।

---

जब हव्वा श्रीर आदम दोनें ने पाप किया तब प्रभु यीशु ने क्या प्रतिज्ञा किई ?

लोग किस रीति से बलिदान चढ़ाया करते थे ?

ईश्वर ने क्यों श्राज्ञा दिई थी कि लोग बलिदान चढ़ावें ?

काइन ने हाबिल को क्यों मार डाला था ?

परमेश्वर ने जलप्रलय से किस लिये जगत को नष्ट किया था ?

जलप्रलय के समय परमेश्वर ने किन मनुष्यों को बचाया ?

ईश्वर ने किसे श्राज्ञा दिई थी कि तू अपना देश छोड़कर जिस देश में मैं तुझे ले चलूं वहां चल ?

ईश्वर ने इब्राहीम के सन्तानों को किस देश का अधिकार देने की प्रतिज्ञा किई थी ?

इब्राहीम के पुत्र का क्या नाम था ?

इसहाक के पुत्रों के क्या २ नाम थे ?

याकूब के कितने पुत्र हुए थे ?

यूसफ के साथ उस के भाइयों ने क्या निर्दयता का काम किया ?

मिसर देश के राजा ने यूसफ को अपने देश का प्रधान क्यों बनाया था ?

जब अकाल पड़ा तब किस रीति से यूसफ ने लोगों को भूखों मरने से बचाया ?

यूसफ ने अपने भाइयों को कहां रहने कहा ?

याकूब का दूसरा नाम क्या था ?

इस्रायेली लोग कौन थे ?

इस्रायेलियों के बच्चों को नदी में फेंकने की श्राज्ञा किस ने दिई थी ?

किस ने मूसा को नदी के तीर पर पाकर अपना पुत्र बनाया ?

जब मूसा जवान हुश्रा तब उस ने इस्रायेलियों को कहां ले जाना चाहा ?

जब ईश्वर ने जलती हुई झाड़ी के भीतर से मूसा से बात किई तब उसे कहां जाने की श्राज्ञा दिई ?

राजा फिरऊन पर ईश्वर ने दस मरियां क्यों भेजीं ?

जिस रात को मिसरियों के पहिलौठे पुत्र मारे गये उस रात को इस्रायेलियों ने क्या खाया और द्वारों पर क्या छिड़का ?

उस रात का भोज क्या कहलाता था ?

फिरऊन और उस के सेवक लोग किस प्रकार नष्ट हो गये ?

इस्रायेलियों ने क्योंकर जाना कि किस मार्ग से कनान को चलना चाहिये ?

उन को जंगल में किस प्रकार आहार मिला ?

परमेश्वर ने सीनई पहाड़ पर से कौन २ बातें ऊंचे शब्द से कही थीं ?

जब मूसा ईश्वर के साथ अकेला पहाड़ पर था तब ईश्वर ने उसे क्या बनाने की आज्ञा दिई ?

कौन महायाजक हुआ था ?

नियम का सन्दूक किसे कहते थे ?

इस्रायेलियों ने कनान में पहिले बारह मनुष्यों को क्यों भेजा ?

इस्रायेलियों ने क्यों मिसर को लौट जाना चाहा था ?

जब इस्रायेली लोग भेदियों की बात सुनकर कुड़कुड़ाये तब ईश्वर ने उन्हें क्या दण्ड दिया ?

कनान के बलवन्त लोगों से इस्रायेलियों को डरना क्यों उचित न था ?

मूसा और हारोन दोनों ने परमेश्वर को किस रीति से असन्तुष्ट किया था ?

जब मूसा मरा तब परमेश्वर ने इस्रायेलियों को संभालने की आज्ञा किसे दिई ?

इस्रायेलियों ने कनान के जिस नगर को पहिले जीता उस का नाम क्या था ?

ईश्वर ने किस लिये इस्रायेलियों को कनान देश का अधिकार दिया ?

परमेश्वर ने इस्रायेलियों को कनान के सब लोगों को नष्ट करने की आज्ञा क्यों दिई थी ?